

कन्यादान

हरिमोहन झा

कन्यादान

(उपन्यास)

लेखक : हरिमोहन झा

जे समाज कन्या कैं जड पदार्थवत दान देवा मे कुंठित नहि होइत छथि, जाहि समाजक सूत्रधार लोकनि बालक कै पढैबाक पाछा हजारक हजार पानि मे बहवैत छथि और कन्याक हेतु चारि कैञ्चा क सिलेटो कीनब आवश्यक नहि बुझैत छथि, जाहि समाज मे बी०ए० पास पति क जीवन-संगिनी ए बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह , जाहि समाज कैं दाम्पत्य-जीवन क गाड़ी मे सरकसिया घोडा क संग निरीह बाछी कै जोतैत कनेको ममता नहि लगैत छैन्ह , ताहि समाज क महारथी लोकनिक कर-कुलिश मे इ पुस्तक सविनय , सानुरोध ओ सभय समर्पित।

1. कनेयाँ माइ क ओरिआओन

- हँ ऐ बहिना। यैह त कठिन भऽ गेलैक अछि। जहां वर भारी 'गिलास' मे अङ्ग्रेजी पढि जाइत छैक, तहां वर क बाप हजार सँ नीचा पर गप्पे नहि करैत छैक। गरिबहा लोक एतेक कतय सं आनत।

- ततबे धरि नहि। विवाह होइत देरी 'मोटर दियऽ, बाइसिकिल दियऽ, आगां पढ क लेल फीसदियऽ। अङ्गरेजिया क फरमाइश में जुमब कठिन छैक।

- ऐ बहिना। सुनैत छियैक जे अङ्गरेजिया सभ कैं जाति पातिक किछु विचार नहि रहैत छैक।

- जाति पाति आब ककरा मे छैक ? विशेषरानी क जमाय आयल छलथिन्ह से कोन अङ्गरेजी पढने छथिन्ह। पनहिए पहिरने पानि पिवैत छतिन्ह। लोक कहैन्हि जे 'ओझा, जल लऽ कऽ लघुशंका दिशि जाउ त कहथिन जे से कि हमरा आगि बहराइत अछि।

- दुर जो। ओहो कोनो लोक छतिन्ह | ज्योतिषीजी एकटा मोचण्ड कै उठा अनलैन्हि। हम त इ दस लोक क बीच मे कहबैन्ह। पढल 'सी' अक्षर नहि बनहुल्लुक जकां एकरा ताकब, ओकरा ताकब , एहन कतहु लोक भेलय।

एतबहि मे बिलटी कैं अबैत देखि लालकाकी झट द ' आवेशरानी क पैर क कनगुरिया आंगुर कैं दाबि देलथिन्ह जाहि सं ओ लगले चुप भय गेलीह। तख न लालकाकी चतुरता सं बात कैं बदलि कय बजलीह-तऽ। आब त चौदहेटा दिन बांकी रहि गेलैक अछि। कथा एखन धरि किछु निश्चय नहि। कोना की हेतैक से बुझि नहि परैत अछि।

आवेशरानी- आबह ने बिलटि , बैसह, ठाढि कियेक भेल छह? हं ुबुचिया त बिलटिए क दतरी होयतैक?

लालकाकी- ई तेरहम चढ्लैक अछि। एहि बेरि कन्यादान करब परम आव श्यक छैक। बुचियाक बाप त यैह सपनि कऽ गेल छथिन्ह जे इ सभ सं कोडपो च्छू नेना थिक। अपने भीखो दुख मांगि कय एकरा सुठाम मे क' देबैक। ओना त भावी सर्वोपरि।

आवेशरानी- हं, लिखलाहा तं सभ स ऊपर। भगवती अहिबात बनौने रखतुन्ह। अपन लुरिमुंह नीक होयतैन्हि त सभक आंखि मे रहतीह।

लालकाकी- हंः ऐ बहिना। यैह आशीर्बाद देथुन्ह। विवाह दान होइन्ह , अपन घर-दुआरि सम्हारथि। सासुर सऽ इ उपराग नहि देयाबथि जे धोंछी कोना के ' बेटी कैं पोसलक। यह हम चाहैत छी।

एतबहि मे दक्षिण भर सय भारी घटा उठल। चारु कात संः मेघ उमरि आय ल। थोडबहि काल मे गर्जन-तर्जन कसङ्ग मुसलधार वृष्टि होमय लागल। ओसारा क कोनिया चुबैत देखि लालकाकी बाजय लगलीह- की कहु बहिना। अहिना सभ घर मे सहस्रधार चुबैत छैक। एको हाथ कतहु निचु नहि अछि। अपने घरहटक काज सम्पन्न कय जैतथि से बिचहि मे भदवा पडि गेलन्हि। आब कोबर कोन ठाम होयतैक ताहि लेल झंःखैत छी।

एतबहि मे ढुनमुनकाकी लदफद करैत हँफैत-हँफैत ओहि ठाम पहुंचलीह। अबैत देरी चिचियाय लगलीह- हे अदौरी जे हम पटिया पर सुखाय देने छलियै क से सभ भीजि गेलैन्ह। हम की करियौक ?

ई सुनितहि लाल काकी लाल-पीयर होमय लगलीह - बाढनि मारी एहन बूद्धि कैं। एहन भसन्नर लोक। जैखन घटा देखलियैक तैखन ने समेटि कय उठा लितहुं। हाथ मे कि मेहदी लागल छल? सभ अदौरी भिजा कऽ तखन समाद नेने आयलि छथि।

फेरि आवेशरानी क दिशि ताकि कय बाजय लगलीह- कहु त भला। आब कोन उपाय होयतैक ? कतेक यत्न सँ अदौरी खोटने छलहुएँ से सभ ई दुरि कय देलन्हि। कहां सँ आइ हिनका सुखाबहु कहलिऐन्हि। हिनका सन लदगो बरि एहि परो पट्टा मे नहि भेटतन्हि। मरुआ भरि कथुल लूरि नहि छैन्ह। का ल्हि कनेक कहलिऐन्ह जे अचार क बासन मे तेल दय दियौक। बस, जमाय क वास्ते चमेली क तेल मङ्गबौने रही, भरलो बोतल उझीलि देलथिन्हि।

ढुनमुनकाकी कान सँ कम सुनैत छलीह। तैं ई सभ वार्तालाप हुनका सुन बा मे नहि ऐलन्हि। किन्तु क्रम सँ बुझि गेलीह जे हमरे शिकायत चलि रहल अछि। ठोर पटपटबैत बिदा भेलीह- मर्र। आङ्गन मे एकटा हमही लोक छियैन्ह जे एतेक ललकैत छथि।

एतबहि मे बिलटी बाजि उठलि- छिया! ए छिया! ढुनमुनकाकी क नुआ मे कीभेलन्हि ? सौंसे पीठ थाल लागल छैन्ह।

तावत मे बुचिया हँसते-हँसते आबि कय कहलकैन्हि- थाल लगलैन्ह स्वाइत! गेल छलीह बाड़ी मे मुनिगा तोड़य। एके बेरि दुइटा मुनिगा कैं दुनू हाथ सँ धऽ कऽ खूब जोर सँ झीकय लगलथिन्हि। मुनिगाक डंटी तँ टुटि गेलैक, लेकिन अपने भट्ट द चितङ्गे खसि पड़लीह।

ई सुनि बिलटी हँसैत-हँसैत ओंघड़ाय लागलि। आवेशरानी आवेश देखबैत कहलथिन्ह-अहा हा ! बड़ चोट लागल हेतैन्ह। जाउ ऐ फुचुकरानी! झट द नुआ बदलि लियऽ। कोना दन लगैत अछि।

ढुनमुनकाकी क गेला पर लालकाकी बाजय लगलीह- देखथु बहिना, काज क घर थिकैक। से ने एखन कोबर ढेवरल गेलैक अछि ने अहिबातक पातिल लिखल गेलैक अछि , ने ठक-वक बनलैक अछि। हम एकसरि की-की करू ? जनउ-टकुरी काटू की निपिया बढ़िया करू ? पुतहु छथि तनिका दिन-राति किताबहि सँ नहि छुट्टी। बुचिया सहजे एकटा खढ़ पर्यन्त नहि टकसाओत। मैंया पाकल आम छथि , कखन टगि जैतीह तकर ठेकान नहि। फुचुकरानी क हालति देखितहिं छथिन्ह। हम करी तँ हो नहि करी नहि हो। तिलौरी-दनौरी सभ पड़ले छैक। जँ कदाचित् झपसी लाधि देलक तँ औरो प्रलय। फेरि विधक री के होयतैक से फुरतहि ने अछि।

आवेशरानी - से किएक ? बड़कागामवाली कनियाँ तँ छथिए।

लालकाकी- ओ पढ़ुआरानी छथि। रङ्ग-विरङ्ग क किताब सभ नैने रहैत छथि। एहि पाछा खैनाइयो-पिनाइ बिसरि जाइत छैन्हि। हम मुँह पर कहलिऐन्ह कतहु सुनितो होइतीह। एक दिन पुछलिऐन्हि तँ कहैत छथि जे नाक-कान धरब मुरखाहा विधि छैक। हमरा बुतैं ई सभ नहि होएतैन्ह।

आवेशरानी- तखन फुचुकरानी होइथिन्हि।

लालकाकी- इहो एकटा स्याख करै छथि ओ विधि की करथिन्हि अङ्गोर ? काजर करय जैथिन्ह त वर क आँखिये फोड़ि कय बैसि रहथिन्ह। धरक नाक , धय लेथिन्ह कान कोबर मे जैतीह त पोटे सुकरैत जैतीह।

एतबहि मे बुचिया बाजि उठलि-ढुनमुनकाकी कैं तँ भरि देह जुड़पित्ती उठि गेलैन्ह अछि।

ई सुनितहि बड़कागामवाली कनियाँ घर सँ गर जाँति कय कहलथिन्हि- वेश, कोनो क्षति नहि। कनेयाँ विधिकरी दुनू अपनहि बनि जाएब।

बुचिया- भौजी कैं तँ अहिना रहै छैन्हि। सभ बात मे एक-एक टा अर्थ लगबैत रहैत छथि।

लालकाकी- बेजाय कोन कहैत छथुन्ह ? जहाँ विवाहक कोनो चर्चा उठैत छौह कि कोनटा मे ठाढ़ भय कान पाथि कय सुनय लगै छह। जाह, अपन काज देखह गऽ।

ई सुनि बुचिया लजा कय ओहि ठाम सँ बिदा भेलि। बिलटियो ओकरा पाछाँ लागलि।

क्रमशः वर्षा थम्हि गेल। किन्तु मेघ क आटोप बनले रहल। रहि-रहि कय आकाश मे बिजली चमकय लागल। साँझ होयबा मे किछु देरी छलैक। किन्तु मेघाडम्बर सँ चारु दिशि अन्धकार भय गेल छल। आवेशरानी चलबाक उद्योग मे छलीह। एतबहि मे स्थूल शरीर सँ केबाड़ कैं धकियबैत अपना बज्रबिनिन्दक स्वर सँ आङ्गन कें कम्पायमान करैत , दुलारमनि पिउसी पहुँचलीह- अँय् ! ए ! मधुरानी ! अहाँ बेटी कैं कतेक डाढ़ी खोआओल जे पहिनहि सँ एतेक वर्षा होमय लागल !

एहि प्रश्न क उत्तर मे लालकाकी कनेक बल सँ हँसिकय बुचिया कैं सोर पाड़लथिन्ह- कहाँ गेलैं गे बुचिया ! झट दऽ आसन दऽ जो। बड़कीदाइ ऐलथुन्ह अछि।

दुलारमनि पिउसी क स्वरे तेहेन रहैन्ह जे बिनु कहनहु बुचिया बुझि जैतैन्ह। किन्तु ओ आङ्गन सँ टरि गेल छलि। लालकाकी धरफरा कय अपन्हि उठय लगलीह , तावत पुतहु घर सँ चट्कूनी दय गेलथिन्ह।

दुलारमनि दाइ फेरि अपना उदात्त स्वर सँ घर-ओसारा दलमलित करैत बजलीह - अँय् ऐ मधुरानी ! अहाँ के टोल-परोस क एको रत्ती धाख नहिं होई अछि। राम! राम! राम! कन्या अजग्ग भय गेलि। एतेक वयस मे तँ चारि खेप सासुर सँ भय आइलि रहैत। नैहरे मे युगपाकड़ि भय जायत त सासुर बसत गऽ बुढ़ारी मे ?

लालकाकी (माथ निहुरा कय) – हँ ऐ दाइ ! आब कन्या रक्षणी त नहि अछि। किन्तु अपन कोन साध्य ? नीक घर-बर कतहु भेट्लो त चाहय।

दुलारमनि दाइ एहि बेरि और जोर सँ चिकरि कय बाजय लगलीह – ई अहाँ की बजलहु ? नीक घर मे नहि देबैक तँ की इनार मे फेकि देबैक ? एहि सँ त भोथ हांसू लऽ कऽ गरदनि रेति देबैक से नीक। हमर ममियाँ ससुर क प्रपितामह महादेव झा पाँजि। उनतिसटा विवाह कैलन्हि। जखन एकटा विवाह और करय सभागाछी गेलाह तँ एगोटा कऽ पुछला पर कहलथिन्ह जे मास मे उनतिस दिन त उनतिस ठाम जाएब , तिसम दिन कतय जाएब अहाँक कपार पर ? ताहि दिन एहन वंशक मर्यादा रहैक। आब त लोक छोटबभना कैं उठा अनैय। ऐ! कनेक जोड़न देब ?

लालकाकी - बड़कीदाइ जोड़न त आब नहि हेतैक। मटकूरी मे एक मिसिया दही छलैक से घोरि-घारि कए बुचिया आगाँ दय देलिऐक। कनेक पहिने अबितथि तँ भय जएतैन्हि।

ई सुनितहि दुलारमनि दाइ लगले हाथ क बाटी कैं पटकि ठाढ़ि भय गेलीह। फेरि गरजैत बिदा भेलीह कोन पाप लागल जे ऐबो केलहुँ। जनितहु जे आइ रवि दिन जोड़न नहि देतीह त की

करय छिछियायल अबितहुँ ? पहिने आँजन बनाबऽ लेल घी मँगैक त घैलम घैल भुभका दैक । आब त सितुआ भरि घोर देवा मे लोक के करेज फटैत छैक ।

जखन दुलारमनि पिउसी के शब्द कर्णपथ सॅं बहिर्भूत भय गेल, तखन लाल काकी बजलीह – ह! ह! यावत धरि ई छलीह तावत धरि हम हड़कम्प कपैत छलहुँ । आब जा कऽ कतहु सॅं प्राण मे प्राण आएल अछि । आवेशरानी सहानु भूति देखबैत कहलथिन्ह- "त! हम त चुप्पे साधि लेलहुँ । कोन ठेकान , किछु अनट-बिलट कथा मुँह सॅं बाहर भए जाएत तॅं हमरे पर उनटि जैतथि ।"

लालकाकी- हिनका मुँह मे जहाँ कनेक कियो टोक देलक कि बुझक चाही जे बिढ़नी क छत्ता कैं खोंचारलक ।

आवेशरानी - हँ ऐ बहिना ! हिनका दऽ जे लोक कहै छैन्ह से हमरा सत्ये बूझि पड़ैत अछि ।(नहूँ-नहूँ) देखैत ने छथिन्ह बजैतकाल दूनू आँखि उनटि जाइत छैन्हि । गुनझिक्कू डाइन कें जतेक लक्षण होइत छैक---

लालकाकी- की करथिन्ह, जाय देथु । आइ-काल्हि भीतो के कान होइत छैक।(ढुनमुनकाकी दिशि) जाउ ऐ फुचुकरानी ! झटपट भानस चढा लियऽ। वर्षा-विकाल क समय अछि। के जाने कखन की होय ?

आवेशरानी वेश बहिना ! आब हमहूँ चलैत छी साँझ देवाक बेरि भऽ गेलैक । फुलमतिया एकसरिये होइति ।

लालकाकी- हिनके पर तँ आस अछि बहिना ! जौ ई नहि सम्हारतीह त सभ काज भण्डुले भय जाएत ।

आवेशरानी- आ हे कहू त भला !हमरा लोकनि सॅं जे सक लागत से किन्नहु उठाए राखब ?

ई कहि आवेशरानी ठाढ़ि भय गेलीह । लालकाकी हुनका अरियातने-अरियातने दरबाजा पर नेबोक गाछ लग धरि नेने गेलथिन्हि । ओहि ठाम दूनू गोटा ठाढ़ि भय फेर गप्प करय लगलीह । पहिने नेबोक चर्चा उठल , जे एहि बाटे जे चलैत अछि से एकटा कऽ तोड़नहि जाइत अछि ।तखन निमकीक गप्प होमय लागल जे जतेक बनल छलैक सभ मे फुफरी पड़ि गेलैक। तदुपरान्त गप्प उठल जे परुकाँ लालकका पटना सॅं बड़ दिव अँचार लाएल रहथि । पटना कऽ नाम सुनैत देरी लालकाकी फुसिए आँचर सॅं नोर पोछैत बाजय लगलीह - जनैत छी , बड़का बौआ पटना सॅं कहिया अबैत छथि ! भुट्टु बाबू परसू कहि गेलाह जे , जे बी०ए० में पढैत छैक तकरा पलटन मे लय जाइत छैक । कालेज त बन्द भय गेलैन्ह , लेकिन ओ ओत्तहि रहि गेलाह। मास दिन बाँकी रहतैन्ह तॅं औताह ।

पलटन क नाम सुनैत आवेशरानी क सौसे देह सिहरि उठलैन्ह- 'बाप रे बाप! सुनैत छियैक जे पलटन मे दिन राति गोर्रा कऽ पहरा पड़ैत रहैक छैक ।जहाँ कियो बहराएल कि लगले किरिच भोंकि दैत छैक। ' पहरा दऽ सूनि लालकाकी मन पड़लैन्ह जे आइ-काल्हि कोतबाल नीक जकाँ नहि ठहकै अछि। एहि पर चोर क गप्प उठल। अजगैबीनाथ क घर मे सेन्ध पड़ल छलैन्ह से एकटा फुटलो काँसा नहि रहय देलकैन्ह। लालकाकी कहय लगलथिन्ह जे 'राति मे हम जहाँ कनेक पातो खड़खड़ाइत सुनैत छिऎक कि खूब जोर सॅं रामायण पाठ करय लगैत छी। चोर कोढ़िये ई त बुझताह जे एखन सभ जगले अछि। ' ताहि पर आवेशरानी कहलथिन्ह- 'हम त कुकुर क भुकबे सुनि दम साधि कऽ पड़ि रहैत छी। जे उकलगौना मुर्दो बुझि कऽ छोड़ि देत।'

तदनन्तर दू-एकटा चोर क खिस्सा-पिहानी चलल। आवेशरानी कनेक और लग मे घुसुकि कय कहय लगलथिन्ह- परसुक्की राति फुलमतिया फुजले केबाड़ छोरि देलकैक। आधाराति कऽ देखी त दून्‌ पट्टा दुहू दिशि ! आब एतेक साहस नहि पड़य जे खाट खाट सॅं उतरि कय केबाड़ लगा आबी कतहु चौकठिए लग गरदनि दबा देत ! भरि राति भगवान-भगवान गोहरबैत प्रात कैलहुँ। छन-छन डर होय जे कतहु केओ आबि तॅं ने रहल अछि।

फुलमतिया क असावधानी सुनि लालकाकी कैं अपन फुचुकरानी मन पड़लथिन्हि। भरि ढाकी अपन दुःख कहि सुनौलथिन्हि। तखन किछु बड़का गामवाली क समालोचना भेलैन्हि। अन्त मे घुरि फिरि कय फेरि कन्यादान क ओरियाओन पर गप्प पहुँचि गेल।

एवं प्रकारें पौन घंटा धरि वार्त्तालाप क क्रम बनल रहल। जखन टिप-टिप कऽ फेरि बुन्नि पड़य लगलैक, तखन जा कऽ आवेशरानी कैं मन पड़लैन्ह जे आब साँझ देबाक बेरि भय गेल। लालकाकी चलयकाल पुराइ कैलथिन्ह- 'थम्हू, सूप नेने अबैत छी , ओना भीजि जाएब।' किन्तु आवेशरानी कहलथिन्ह नहि-नहि। एतबहि दूर लेल कोन ! ओहिना झटकि कय चलि जेबैक। आवेश रानी क गेला उत्तर लालकाकी गाछ सॅं दुइटा पैघ नेबो तोड़ि आङ्गन ऎलीह।

आङ्गन मे पैर दितहि लालकाकी बजलीह – है लोकनि ! आइ चोर-डाकूक गप्प-सप्प भेलैक अछि, खूब सतर्क भऽ कऽ रहैत जैहऽ।

बुचिया बाजलि- ई सभ कहबहुन तॅं ढुनमुनकाकी भरि राति सूतल मे घिघिऎथुन्ह।

ढुनमुनकाकी भनसा असोरा पर पटुआ क झोर करैत छलीह। बुचिया क मुहें अपन नाम सुनि भनभनाय लगलीह – ढुनमुनकाकी ककरा लोह दगलथिन्ह अछि ? की दन कहैत छैक तकर परि। हट्ठि घड़ी सभ गोटे हमरे अदगोइ-बदगोइ करैत रहतीह !

एतबहि मे झुनियाँमाय हन-हन पट-पट करैत पानि देबय आइलि ।पाँच मिनट मे कतेक बात बाजि गेल तकर ठेकान नहि। 'घैलची लग लोक पिच्छड़ बनौने रहैत अछि, कतेक रासे पानि उठि जाइत छैक , डोल पुरान भय गेल , उबहन सड़ल जा रहल छैक ' इत्यादि। तखन कोनो अज्ञात नाम व्यक्ति सँ झगड़ा करय लागलि- सौख मे सौख मिरचाइयो क सौख ! हम दिन भरि बही - तरबा क तज्जो ने रहय- और ओम्हर निचिन्त सुतथि पद्मावती बहुरिया। ताहि पर कहनाइ जे मथा मे दर्द होइए। अहा हा हा ! छवि ने छटा मसुरी क दालि बड़ खट्टा ! देहो जरैए।

ई कहि झुनियाँमाय चमकि कय घैल उठौलक और चलल दरबाजा दिशि दिन मे ककरो सँ झगड़ा भेल रहैक से मोन पड़ि गेलैक। बस लागल फेर चरखा ओटय। 'हँ, आँखि देखौला सँ जेना झुनियाँमाय डेराइये त जाइति। हम थाना दरोगा सँ डेरैबे ने करी से - - -

ई बजैत-बजैत झुनियाँमायक नजरि सहसा कोनो वस्तु पर पड़ि गेलैक जाहि सँ डराय ओ जान लऽ कऽ पड़ाइलि। ओतय सँ पड़ाइलि-पड़ाइलि ओ सोझे लालकाकी क लग आबि भरि पाँज हुनका धऽ लेलकैन्ह और कसकसा कऽ गरदनि पकड़ि लेलकन्ह। मुँह मे बकौर लागि गेलैक। लालकाकी बजलीह – देखै जाह लोक सभ। ई हमरा नीक कऽ चरोबरो कैने अछि। ऍं गे ! तोरा भूत लगलौक अछि जे एना करैत छें ?

एके छन मे आङ्गन क सभ लोक जमा भे गेल। ई देख झुनियाँमाय कें कनेक साहस क संचार भेलैक। पहिने त ओकरा मूँह सँ बकारे नहि बाहर होइक। तखन लागल ओ लटाढ़म करय- आब नहि भरबैक पानि हम ककरो आङ्गन। आरे बाप ! जीउव त करमी क साग तोरि गुजर करब। उँहु ! आब कहाँ !

क्यो बाजथि जे एकरा साँप काटि लेलकैक अछि, क्यो बाजथि जे आइ दुलार मनि पिउसी कैं जोड़न नहि देलिऐन्हि तकरे फल थिक। अन्त मे ओ बहुत पुछला पर बाजलि - गे मैया गे मैया ! दरबाजा पर पाँच हाथ क सिपाही बन्दुक नेने बैसल छैन्ह। बीचे मुँह घेरि लेलेकैन्ह अछि। हम जौं कि धुरखुर पर लात दै छी कि झपटल हमरा दिशि। हम घैल पटकि कऽ पड़ैलहुँ, नहि त आइ प्राण नहि बचैत हे महतमाइन। ' ई कहि झुनियाँमाय हिचकि-हिचकि कानय लगलीह।

ई समाचार सुनितहि सभ गोटा क जी सन्न दऽ उड़ि गेल। लालकाकी थर-थर कँपैत बजलीह- कहाँ सँ छुच्छी सब आबि कऽ गोर्रा पलटन क हाल कहि जाइए। ई सभ तँ चर्चा करैत देरी लगले पहुचि जाइत छैक।

अन्त मे ई बिचार होमय लागल जे प्राणरक्षा क कोन उपाय करबाक चाही। लालकाकी साहस कय कहलथिन्ह- सभ गोटा मिलि कय सुन्दरकाण्ड रामायण पाठ करैत जाह। कनेयाँ कैं कहुन्ह हनुमान चालिसा पढ़थिन्ह। (जोर सँ) 'महावीर विक्रम बजरंगी। सुमति निबारि कुमति कैं संगी' दुर जो उनटे भय गेलैक। नहि जानि की लिखल अछि रे दैबा !

मैंया क बिचार भेलैन्ह जे सभ गोटा मिलि कय एके बेरि घोल करबह तँ ओ आबि कऽ सभक ठोंठ दबाय देतौह। से नहि पछुआड़ क मुँह सँ एगोटा जा कऽ ज्योतिषीकका कैं बजा लबहुन। ताहि पर झुनियाँमाय बाजलि - 'नहि रे बाप ! ओहू मुँह पर क्यो ठाढ़ होयतैक। हमरा बुट्टी-बुट्टी काटि कऽ घर मे गाड़ि दिय , लेकिन हम आब बाहर नहि जाएब। ई कहि ओ फेर घेवना पसारलक।

मैंया कहलथिन्ह जे पहिने गनि लइ जाह जे आङ्न में सभ गोटे छह की नहि ? लालकाकी सभ क देह धऽ धऽ कय गनय लगलीह। दू-तीन बेरि गड़बड़ा गेलैन्ह। चारिम बेरि गनैत बजलीह-जाह! फुचुकरानी की भय गेलीह ! दैबा रे दैबा। लऽ गेलैन्ह घिसिया कऽ।

ताहि पर झुनियामाय कहलकैन्ह जे ओ तँ पहिनहि सँ जारन घर में जा कऽ किल्ली लगा बैसलि छथि। मैयाँ रुद्राक्ष क माला लय भगवती कैं गोहरबैत कबुला करय लगलीह जे एहि बेरि जँ प्राण बाँचि गेल तँ कुमारिभोजन करायव।

ई हाल देखि बड़कागामवाली टनकि कय बजलीह- 'ई लोकनि एतेक डेराइ छथि किऐक ? हमरा लोकनि कि चोरी-खून कैने छी जे फाँसी पड़ब ? बुच्चीदाइ कैं पुछय कहथुन्ह जे के अछि। बुचिया सुरफुरा कऽ बिदा भेलि जे 'तोरा लोकनि कैं डरें बग्घा लगैत छह तँ लैह हमही जा कऽ देखि अबैत छिऐक। डर कथिक छैक ? किछु बाघ तँ नहिएँ छैक जे लोक कैं टप दऽ गीड़ि जैतैक।

एतबहि मे बाहर चौकी पर लाठी पटकि क्यो कड़कि कय बाजल- कोई है ? मैंया झट दऽ लालकाकी क हाथ टीपि कहलथिन्ह- कहि दियोक जे केओ नहि अछि।

तावत सिपाही बाजल-पं० भोलानाथ झा के नाम से एक तार आया है। कोई अन्दर से आकर ले जाइए।

मैंया कहलथिन्ह- तार आया है त दरबज्जे पर रहऽ दीजिए। एकसरि आङन मे क ' के उठा आनेगा ?

एतबहि मे बाहर ज्योतिषीकका क शब्द सुनि सभ लोक फक द' निसास छोड़लाक।

---==---

2. सभागाछी क दृश्य

जखन सभागाछी पहुँचबा सॅं आध कोस बाँकी रहि गेलैन्ह तखन घुटर झा कैं बाह्यभूमि दिशि जैबाक शंका बूझि पड़लैन्ह। अपन नसिदानी क बटुआ भोलानाथ झा क हाथ मे दैत कहलथिन्ह 'हौ बाबू ! तोरा लोकनि आगाँ बड़ क गाछ तर बैसै जैहऽ। हम एहि पोखरि सॅं भेने अबैत छी।'ई कहि घुटर झा कान पर जनउ चढाय लग्गा सन-सन डेग दैत बिदा भेलाह।

ठकबा कैं पछुआयल देखि भोलानाथ झ गर्द कैलथिन्ह- चल रौ ठकबा ! पैर मे जाँत बान्हल छौक की ? एना चलबैं तॅं एही ठाम राति भय जैतौक। ठकबा मुँह गोंहछा कय कुड़बुड़ाय लागल - 'ईह ! दौड़बैत-दौड़बैत जान मारि कऽ छोड़ि देलन्हि। गाड़ी क टेने जेना छुटल जाइ छैन्ह !' तदुपरान्त काँख तर क मोटरी कैं माथ पर राखि कसि कऽ फाँड़ भिड़लक और लगौलक दुलकी चालि।

बड़ क गाछ तर पहुँचला पर ठकबा पहिने मोटरी कैं नीचा पटकलक। तखन दुइ हाथ भूमि कैं झाड़ि फूकि कैं चिक्कन बनौलक। ताहि पर अपन अंगपोछा ओछौलक। कनेक काल ठेहुन पर माथ राखि बैसल। फेरि मोटरी पर ओठङि गेल। तदुपरान्त एम्हर ओम्हर ताकि शनैः-शनैः दून् पैर कैं लम्बायमान कैलक। थोड़बहि काल मे अरना महिष जकाँ फोंफ काटय लागल। भोलानाथ झा बेचारे बड़ क सीर पर बैसल अपन फराठी लय एकटा पकोहा कैं पिचैत रहलाह।

अढ़ाइ दण्डक उपरान्त घुटर झा लोटा डोलबैत पहुँछलाह। अबैत देरी एक चुरु पानि ठकबा क कान मे ढारि देलथिन्ह। ओ कुनमुना कऽ उठल। घुटर झा बजलाह - ऐ रौ ! तोरा देह मे फुर्ती नहि छलौक त मधुबनी मे दू कैञ्चाक कीनि किएक ने लेलैं ? परदेश मे लोक चड़फड़ भेल रहैत अछि और तों जतय जाइत छैं तत्तहि पेटकुनिया देमय लगैत छैं।

फेरि भोलानाथ झा क दिशि ताकि कऽ बाजय लगलाह- 'हौ बाउ ! ई मेघ क टिक्कड़ नहि मानतौह। पैर झांकि कऽ चलह नहि त भीजै जैबह। ' ई कहि घुटर झा अपन साविक बाला दनहा छाता बाहर कैलन्हि। ई छाता हुनक पिता कैं मातृ-मातृक मे भेटल रहैन्ह। छाता क छिद्र सभ देखला उत्तर बूझि पड़य जे सहस्राक्ष शब्दक ब्यञ्जनाशक्ति एहि मे घटित भय रहल अछि। कमानी सभ देखाबथि जे हम अष्टावक्र मुनिक साक्षाते मसियौत थिकहुँ। छाता कऽ घोड़ा टूटि गेल रहैन्ह तकरा स्थान मे घूटर झा एकटा काठी लगा देलथिन्ह। तदनन्तर नसिदानी सॅं नासिकानन्द चूर्ण लय, नाकक उभय पूरा मे कोंचि एके बेरि पूरक श्वास चढौलन्हि। ई क्रिया समाप्त भेलन्हि तखन ठाढ़ भय विदा भेलाह। पाछाँ-पाछाँ भोलानाथ माथ निहुरौने

चललाह। ठकबा तमाकू चुनौने छल, ठोर बिचका कऽ एक जुम्म रखलक, तखन पिच-पिच थूक फेकैंत सभ सँ पाछाँ चलय लागल।

थोड़ेक दूर गेला पर फूही पड़य लागल। भोलानाथ झा कैं मोन पड़लैन्ह जे पनही भीजैत होयत। हड़बड़ा कऽ ठकबा कैं पुछलथिन्ह- 'रौ ! पनही देखही त भीजै त ने छौक ?' ठकबा मोटरी के उपर ससरफानी लगा कऽ पनही बन्हने रहय। एखन जे टोयलक त एकेटा बूझि पड़लैक। बाजल- 'एक पवाइ त कतहु खसि पड़ल, एकटा बाँचि गेल अछि से लियऽ। ' ई कहि पनही आगाँ मे फेकि देलकैन्ह। भोलानाथ झा ओही पनही लऽ ठकवा कैं मारऽ हेतु उद्यत भेलाह, किन्तु घुटर झा रोकि देलथिन्ह, भोलानाथ झा बजलाह- नबे पनही छल- सालमसाही ! एक रुपैया चौदह आना मे ! एतेक दाम क आइधरि कहियो ने किनने छलहुँ। चलबाक काल एड़ी मे कटैत छल तैं सार कैं कहलिऐक जे नेने चल - आब एक पबाइ लऽ कऽ की करु ? एकरो फेकि दैत छिऐक।

घुटर झा भरिगरहा चुटकी नसि लय आश्वासन देमय लगलथिन्ह - की करब ? 'सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः। ' एके पवाइ ने गेल ? गाम पर नेने चलू। यदि अही जकाँ ककरो एक पवाइ हेरा गेल होयतैक त ओकरा सँ माँगि कऽ जोड़ लगा लेब। नहि त ओकरा इहो पवाइ दय देबैक। हम त थाल कीच क समय मे पनही रखितहि ने छी। 'नाङ्गट नहायब गाड़ब की ?' जौ पनहिए नहि रहत त हेरायत कोना ?

एतबहि मे मटर सनसन बूंद पड़य लागल, जाहि सँ तीनू गोटा भागि कय एक दलान मे पहुँचलाह।

सभागाछी आइ बेश जमकल बूझि पड़ैछ। पाकड़ि क गाछ मौलाइल देखि बहुतो अनुभवी वृद्ध अनुमान करैत छथि जे एक लाख ब्राह्मण पूरि गेलाह। जतय धरि दृष्टि जाइछ पागहि पाग देखि पड़ैछ। एतबहि मे कनेक फूही आएल कि सभ पाग के उपर मे एक-एक टा छाता तना गेल। श्वेत मरालपंक्ति जेना सहसा श्याम काकावली मे परिणत भय गेल हो !

पाठकवृन्द ! एक मन सुझाए-बन्दा बुझए। कत्तहु पर-कत्तहु पर घुटर झा तँ देखा दियऽ। वैह देखियौन्ह, हाथ मे नसिदानी नेने हँसि-हँसि कय घटकराज टुन्नी झा सँ गप्प कय रहल छथि। टुन्नी झा कऽ ठढ़ौका चानन, भगजगार ठोप तथा अष्टोत्तरशत रुद्राक्षमाला देखि बूझि पड़त जे ई कर्मकाण्ड मे धौतपरीक्षोत्तीर्ण हैताह, किन्तु असल बात पूछी त...... किएक देखार करबैन्ह- जाय दियऽ - बेचारे दोसरा दिशि ताकय लगलाह।

घुटर झा नसि लैत पुछलथिन्ह - बालक कऽ मूल की कहल ?

टुन्नी झा आखि-भौंह चमकबैत बजलाह-मूल त बश मूले छैन्ह। मानि लियऽ जे शोदरिपुरिये शरिशव। बिकौआ बंश ! मानि लियऽ जे चारि टा वंश छैन्ह । एक तँ ब्राम्हण एहन पैघ , दोशर शुठाम पर क। ई कथा करी त मानि लियऽ शोन मे शुगन्ध भेटत।

घू०- बालक कऽ आस्था कोन तरह कऽ छैन्ह ?

टु०- आश्था ! मानि लियऽ जे कम आस्था नहि छैन्ह । अपन शात बीघा ब्रम्होत्तर छैन्ह आओर शवा बीघा कलम सुदिभरना नेने छथि। चालिश मन त मरुए भेल छलैन्ह ।

भोला०- पढ़ल-लिखल की छैन्ह ?

टु०- पढ़ल कोना ने छैन्ह ? मानि लियऽ जे शीघ्रबोध पढ़ने छथि । मङ्गलाचरण क श्लोक सम्पूर्ण कण्ठस्थ छैन्ह । हमरा लोकनि कऽ पुरुखा त मानि लियऽ जे चिड़चिड़ायो पाड़य नहि जनैत रहथि ताहि शँ तँ संस्कार उत्तम छैन्हि ।

घू०- बालक कऽ पिता छथिन्ह कि नहि ?

टु०- मानि लियऽ पिता नहिए छथिन्ह तँ हर्ज की ? हमरा लोकनि त छिऐन्ह ! मानि लिय माय त एखन जीविते छथिन्ह । आओर भाइ मे शेहो एकश्वरे छथि ।

घू०- कोन तरह सँ कथा करय चाहैत छथि ?

टु०- मानि लिय शवा शय टाका तत्काल मे अपने कैं दै देताह । भार-दौर मानि लियऽ नहिये जायत त हर्ज की ? शोमक दिन शिद्धान्त लिखा कऽ अपना सङ्गहि नेने जैयौन्ह । ओतय मानि लियऽ एक खण्ड धोतिए पहिरा कऽ विदा कय देबैन्ह ।

ई सभ कथा-वार्त्ता भेलाक उपरान्त घुटर झा अओर भोलानाथ झा ओहि ठाम सँ हटि कय एकान्ती करय गेलाह । माम कैं कनेक पसिन्दे जकाँ पड़लैन्ह , किन्तु भागिन कलपि कय कहलथिन्ह - औ मामा ! बुचिया योग्य वर हमरा नहि बूझि पड़ैत अछि । आङ्गन मे भरि जन्म खोभाटनि दैत रहतीह ।

अन्ततोगत्वा दुहू माम-भागिन आबि कय टुन्नी झा कैं कहलथिन्ह जे कान्या क प्रति टाका गनायब हमरा लोकनि कऽ अभीष्ट नहि । कनेक नीक कथा चाहैत छी । बेशी त नहि , किन्तु दश-पाँच टाका यदि अपनो दिश सँ खर्च करऽ पड़य त ताहि सँ पाछाँ नहि हटब ।

ई सुनि टुन्नी झा मटियार खेत क दराड़ि जकाँ मुँह बाबि कहलथिन्ह - आहि रौ नैयायिक ! ई हमरा पहिनहिं किएक ने कहल ? मानि लियऽ जे हमरा ओहि ठाम त शभ तरहक कथा अबैये । एकटा खनखनौआ- जाहि मे कान्यागत खनखना कैं टाका हँसोथि लैत छथि । दोशर मानि

लियऽ टनटनौआ जाहि मे वरपक्ष टनटना कैं हजार-पाँच शौ कऽ तोरा गनबैत छथि ! तेशर मानि लियऽ जे ठनठनौआ जाहि मे वर पक्ष आओर कान्यागत दूहू ठनठन गोपाल भय काज करैत छथि। हमरा त पहिने बुझि पड़ल जे अहाँ खनखनौआ कथा करब , किऐक तँ अहाँ शन मैल पाग वला कान्यागत मानि लियऽ जे बहुत खरनाएले अबैत छथि- तैं ई कथाक उत्थान कय देल अहाँ बेशी हियाव रखैत छी- टनटनौआ कथा करब - से मानि लियऽ हम की जानय गेलहुँ ? नहि त कथा तँ मानि लियऽ जे हमरा मुट्ठिए मे अछि। ऐखन चलू बालक पशिन्द कय लियऽ। संयोग सँ एहन कथा शभागाछी मे आबि गेल अछि। मानि लियऽ ई कथा जौं पटि गेल त कान्या क भाग्य बूझक चाही।

ई सूनि माम-भागिन टुन्नी झाक संग चलबा क हेतु प्रस्तुत भऽ गेलाह। टुन्नी झा भरि बाट हिनका लोकनि कैं सामयिक शिक्षा प्रदान करैत गेलथिन्ह। जकर मुख्य सारंश ई- हम पहिने वर्नी किछु कहि देने छलहुँ- ओ कथा अहाँ योग्य नहि छल - आब जे कथा कहैत छी से यथार्थ मे सोन अछि - एकरा बिगाड़ क हेतु बहुतो लोक प्रयत्न करत - तैं सतर्क रहब - अनका कथा पर ध्यान नहि देव - आब अहाँ अपन लोक भऽ गेलहुँ। हम जौं सपरि कऽ एहि मे पड़ि जाएब त कथा निश्चय भय जायत ....इत्यादि-इत्यादि।

टुन्नी झा कैं देखितहि एगोटा पाछां सँ आबि कय नमस्कार कैलथिन्ह। टुन्नी झा बाजि उठलाह नमस्कार ! नमस्कार वैदिक ! छी निकें ?

तदुपरान्त टुन्नी झा घुटर झा क दिशि सं केत कैलथिन्ह जे अहाँ लोकनि ताबत एही ठाम रहू- हम पहिने जा कऽ कथा क रङ्ग-ढङ्ग देखने अबै छी आध घंटा क बाद टुन्नी झा ओही वैदिक कैं सङ्ग नेने प्रत्यागत भेलाह। टुन्नी झा अबितहि बजलाह - औ बाबू ! अहाँ क कार्य त सुतरि गेल। किन्तु पुछिऔन्ह वैदिक शौं हम अहाँक पक्ष सँ कतेक लड़लहुं अछि ! मानि लियऽ जे गर बाझि गेल। अन्त मे मानि लियऽ स्वीकार करहि पड़लैन्ह। आब अपनहि गप्प-सप्प कय शभ टा फरिछा लियऽ।

भोलानाथ झा पुछलथिन्ह - वर क की मूल छैन्ह ? कतय रहै छथि ?

टुन्नी झा कान क जड़ि कुड़ियबैत बजलाह- मूह सँ अहाँ कैं कोन काज ? मानि लियऽ शुरगणें छथि तैं की ? शुद्ध मैथिल ब्राह्मण त छथि। की औ वैदिक ?

वैदिक माथ झुलाय कऽ अनुमोदन कैलथिन्ह। तखन घूटर झा प्रश्न कैलथिन्ह- वर क घर कतय छैन्ह ?

टुन्नी झा कनेक खखसि कऽ बजलाह- मानि लियऽ दक्षिणे भर छैन्ह त हर्ज की ? शेहो बेशी दूर नहि- दलशिंहशराय शॅं चौदह कोश पर घर छैन्ह। हमर देखले अछि। घर-द्वार परम शुखितगर। की औ वैदिक ?

वैदिक पुनः हाथ झुलाय एहि कथाक समर्थन कैलथिन्ह। तखन टुन्नी झा अपन ब्रह्मास्त्र रूपी वचन क प्रयोग करय लगलाह- वर मानि लियऽ जे एफ० ए० मे पढैत छथि। कान्यागत क द्वारे मानि लियऽ जे दरबाजा पर एकटा बरहमशिया चूल्हि बनले रहैत छैन्ह। पहिने मानि लियऽ चलै छल महादेव झा पाँजि, श्री कान्त झा पाँजि, आब चलैत अछि मानि लियऽ डिप्टी पाँजि, वकील पाँजि , मास्टर पाँजि। वरक पिता मानि लियऽ जे नाक पर माछिए नहि बैशऽ दैत छलाह जे यावत बेटा मानि लियऽ बी० ए० पाश नहि करताह तावत मानि लियऽ जे माथ पर मौर नहि देबैन्ह। तखन हम अपने जनउ जोड़ि कऽ ठाढ भऽ गेलिऐन्ह। तखन कहलन्हि जे बेश शात शय टाका अहाँ कहियौन्ह -हम बेटा दए देवैन्ह। शम्भव थिक जे अधिक दबौला शॅं पचीस टाका आओर छूटि जाएत। आब शुभस्य शीघ्रम करबाक चाही। की औ वैदिक?

वैदिकजी महादेव क बसहा जकाँ फेरि माथ झुलाबय लगलाह। घूटर झा एवं भोलानाथ झा घटक छ सङ्ग वरपक्ष सँ गप्प करय गेलाह। पूरे अढाइ घण्टा महोजरो भेला पर ई निष्कर्ष बहरायल जे छौ सै सँ एक कौड़ी कम पर कथा नहि भय सकैछ। भोलानाथ झा बेचारे बहुत साहस कय पौने दू सै टाकाफाँड़ मे नेने आएल छलाह , षटशत मुद्रा क नाम सुनि प्राण सुखा गेलैन्ह । अन्त मे हारि-दारि क' दुहू मामा-भागिन डेरा पर अबैत गेलाह।

डेरा पर पहुँचला उत्तर घुटर झा चपकन क भुंडी फोलैत बजलाह - हौ बाबू ! आइ भरि दिन दाउनि क बरद जकाँ घुमितहि छी । पहिने पाक-शाक क उद्योग करै जाह , तखन बुझल जैतैक ।

भोलानाथ झा टीक सोहरबैत बजलाह - मामा ! हम त भरि जन्म कहियो अपना हाथ सॅं भूमिदाह नहि केने छी । माथ पर दू-चारि पसेरी क बोझ बरु राखि दी , त से धऽ आएव, किन्तु भानस कैल हमरा बुतें पार नहि लागत।

घूटर झा कहलथिन्ह- हौ बाबू! हम तॅं आठमहि वर्ष सॅं चुल्हि क मुँह मे आँच लगबए लगलहुँ। बिनु सिद्धान्ने कल्याण नहि। वेश , हम सीधा सामग्री लय अनैत छी। तावत तों ठकबा सॅं चौका ठीक करबौने रहिहऽ।

ई कहि घूटर झा कैञ्चा लए हाट क दिशि बिदा भेलाह। ओतय आङुर सॅं टनटना कय एकटा छोट-छीन पातिल किनलन्हि। जखन डेरा पर प्रत्यागत भेलाह , तखन ठकबा पर तमसाय लगलाह-'भारी धिम्मड़ अछि। हम कहैत छलहुँ जे चुल्हि बना कऽ आँच पजारने होयत से

एखन धरि भूमिए खड़रैत अछि। आध घण्टा क अविरल परिश्रम क अनन्तर घूटर झा क चुल्हि तहिना धधकि उठल जेना कन्यागत द्वारा विशेष बिदाई नहि भेटला पर समधि क कोपाग्नि धधकि उठैत छैन्ह।

जखन घुटर झा अधहन मे दालि लगाबय लगलाह तखन पाछाँ सँ क्यो व्यक्ति आबि कय प्रणाम कैलथिन्ह। घुटर झा पाछाँ ताकि कैं बजलाह- के मुकुन्द ? निकें रहऽ। हौ ! तों कतय सँ ?

मुकुन्द झा बजलाह - की कहू मामा ? भारी ठकान मे पड़ि गेलहुँ।

घुटर झा दालि लगायब छोड़ि कय पुछय लगलथिन्ह - से की ? से की ?

मुकुन्द कहय लागल - हमरा पर जुड़ानपुर क वर्त्तुहार आयल छल। कथा क निश्चय भऽ गेलैक चालीस टा रुपैया पर। हम अपना दिशि सँ दू टका खर्च कय सिद्धान्तो लिखबौलहु। चलबा क काल मे हमरा कहलक जे रुपैया पहिनहि गना दियऽ। हम गनाबय लगलिऐक ताहि मे संयोग सँ एकटा रुपैया खराब बहरा गेलैक। दोसर रुपैया संग में रहबे नहि करय। आब लाख-लाख कहलिएक जे एकटा पाछाँ लय लेब से किन्नहु मानबे नहि कैलक। अन्त मे मझौलियाक एकटा द्वितीय वर चालिस रुपैया गनि देलकैक तकरे लऽ गेल। हम मूहें तकैत रहि गेलहुँ।

भोलानाथ झा नेत्र विस्फारित करैत बजलाह - कहू त केहेन भारी धरकट बाभन छल। हमर पिसियौत भाइ कैं एहिना भेल रहैन्ह। 'भलमानुस' कैं लऽ जाइत रहैन्ह। एक्का ठीक भेल- सभ गोटा चढैत गेलाह। जखन मधुबनी पहुँचैत तखन एकमान अट्ठारह आना भाड़ा माँगय लगलैन्ह। आब झगड़ा उठल जे किराया क कैञ्चा के देतैक। एहि पर त्वञ्चाहञ्च होइत- होइत मारि बजरल। छत्ता-छत्तौअलि , जुत्ता-जुत्तौअलि सभ किछु होमय पर वृत्त भय गेल। ताबत एकटा दोसर बालक सभागाछी सँ फिरल जाइत रहय। कन्यागत परिचय-पात बूझि कय पुछलकैक - औ बाबू आहाँ भाड़ा देबैक ? बालक तुरन्त अट्ठारह आना ढउआ फेकि देलकैक। कन्यागत ओही बालक कैं नेने-देने चल गेल। हमर पिसियौत भाय टुकुर-टुकुर तकैत रहि गेलाह।

ई सभ कथा सुनि घुटर झा गम्भीरता पूर्वक बजलाह - हौ बाबू तोरा लोकनि की देखलहौक अछि ? सभागाछी क ठकैती ओ भोजपुर क डकैती दुहू नामी छल। एक बेरि क हाल कहैत छियौह। एकटा साठि वर्ष क बूढ - बेश लक्ष्मीपात्र- तनिका जखन कोहा-कौड़ी जुगताब कऽ समय ऐलैन्ह, तखन जा कऽ विवाह करबाक उक्खी-व्क्खी लेलकैन्ह। बस एकटा दीयर कऽ छोटबभना परतारि कऽ अपना ओहि ठाम लऽ गेलैन्ह। पूरे नौ सै टाका गनबा लेलकैन्ह। राति मे एकटा निमोछिया जवान सँ विवाह करा देलकैन्ह। कोबर करय गेलाह त बिधिकरी

कहलकैन्ह जे कनेयाँ कैं कोदबा भय गेल छैक। चतुर्थी क प्राते वरराम कैं विदा कय देलकैन्ह। जकर हाथ धैलथिन्ह तकर मुँहों नीक जकाँ नहि देखि सकलाह। जखन दुल्हा राम अपन गाम पर पहुँचलाह, तखन ससुर हजाम पठौलथिन्ह जे हमर बेटी कोदबा सँ शान्त भऽ गेलीह। कहू, एकरा ठकैती कहब की डकैती ?

भोलानाथ झा मुकुन्द कैं आश्वासन दैत बजलाह - की करबहक , मुकुन्द ! रुपैया त बाँचि गेलौह ! कोन ठेकान तोरो कतहु पुरुषे सँ विवाह करा दितौह त कोन उपाय करितह ?

घुटर झा फेरि एकटा कथा पसारबा क सूर-सार कैलन्हि , तावत आँच मिझा गेलैन्ह। तैं गप्प छोड़ि पाक-क्रिया में तत्पर भय गेलाह। जखन चाउर पूर्ववत् खदकय लगलैन्ह , तखन मुकुन्द दिशि ताकि कय कहलथिन्ह - की हौ मुकुन्द ! भोजन त नहि कैने होयबह ?

मु०- नहि, की होयतैक ? दोकान पर जा कऽ किछु खा लेबैक।

घू०- ओह ! दोकान पर असिद्ध की खैबह ? घी मे चरबी फेटने रहैत छैक। एहि ठाम सिद्ध अन्न मे जे स्वाद भेटतौह , से बजारु पूड़ी मे कतय पैबह ?

मु०- हँ से त हमरो आइ चारि साँझ सँ असिद्ध खाइत-खाइत जी उमठि गेल अछि। किन्तु ......

किन्तु की ? त्रयाणां पाकसम्पन्ने, चतुर्णामपि भोजनम। तों खैबे कतेक करबह ?

मु०- हँ से त हम बहुत कम खाइत छी। ताहि भूखो कम्मे अछि।

घूटर झा खिचड़ी क पातिल उतारि चारिटा पात पर परसलन्हि। फेरि ओहि मे सँ आलू बिछि कय साना कैलन्हि। तखन बजलाह जे बेश , आब अबैत जाउ, नमोनारायण करु।' दुहू गोटा पैर धो कऽ बैसैत गेलाह। मुकुन्द क पेट तेहने रहैन्ह जे चारु पात पर क खिचड़ि आगाँ मे देल जैतैन्ह, तैयो छुछुआएले उठितथि, किन्तु करताह की ? जैह नैवेद्य भेटलैन्ह ताही पर सन्तोष कऽ उठि गेलाह।

अचावय काल मुकुन्द बजलाह - मामा ! आइ दालि बड़ दिब सिद्ध भेल, स्वादिष्टो तेहने भेल छलैक। बुझि पड़ैत छल जेना गंगाजल मे बनल हो।

घुटर झा खरिका करैत ठकबा सँ पुछलथिन्ह - की रौ ! पानि कतय सँ अनने छलैं ?

ठकबा गोंहछि कैं बाजल- एही उत्तरवारी पोखरि सँ अनलहुँ आओर कोन मे सँ आनब ?

घू०- रौ ! लघियाही पोखरि सँ त ने अनलैं ?

ठ०- तँ की हड़ाही पोखरि सँ नेने अबितहुँ !

घुटर झा बजलाह- हौ बाबु ! आब किछु बाजह जुनि । फिरती बेरि सिमरिया घाट मे एक डूब देबय पड़ैत गेलौह ।

तदनन्तर कम्बल बिछा कऽ गप्प-शप्प करैत तीनू गोटा स्वप्नराज्य मे प्रविष्ट भेलाह ।

प्रात भेने मुकुन्द उठि कय दोसरा दिशि बिदा भेलाह । दूहू मामा-भागिन झट-पट स्नान-भोजन कय सभागाछी मे प्रवेश कैलन्हि । थोड़बहि दूर पर काँख तर एक पुलिन्दा कागज नेने घटकराज टुन्नी झा भेटलथिन्ह । घूटर झा पुछलथिन्ह- औ घटक ! ई की थिक ?

टुन्नी झ आँखि मटकबैत कहलथिन्ह - एही माश शॅ एकटा माशिक पत्र चललैक अछि मानि लियऽ जे 'मिथिला शुधारिणी' । तकरे विज्ञापन थिकैक । हमरा पचाशेक बाँटक हेतु देने छल । हम देखल जे मानि लियऽ एक पीठ खालिए छैक । उत्तेढ़ि लिखबा योज्य त भऽ गेल । यैह कहाँ क थोड़ । आगि लगन्ते झोपड़ा , जे निकशे से लाभ । एकटा अहूँ लऽ लियऽ जे पाग मे धरऽ योग्य त होयत ।

घुटर झा एक चुटकी नसि सुरकैत बजलाह - हॅं,हॅं, हमरो मधुबनी स्टेशन पर एगोटा भेटल रहय । जैखन गाड़ी सॅ उतरलहुँ कि दिक करय लागल जे अपनहु ग्राहक बनि जाउ । हम पुछलिऐक जे औ बाबू ! मङ्गनी देबैक कि किछु नगदो नारायण लेबैक ? ताहि पर कहलक जे तीन टाका साल मे लागत । हम कहलिएक जे एहि पत्र सॅ हमरा एको सांझ क खर्चा चलत ? ओ कहलक से त नहि होयत । हम कहलिऐक - वेश , चुपचाप अपन बाट धरु । सभ सॅ बाढ़ि बुरिढहलेल अहाँ कैं हमहीं बूझि पड़लौह ? तीन टाका मे हमरा दू साल क नोन चलत । एकबार लऽ कऽ कि चाटब ? फेरि एहन कथा बजबैक त लोक उकठि करय लागत ।

टुन्नी झा अपन चातुर्य क दाबी देखबैत बजलाह - हमर नाम त मानि लियऽ जे जबर्दश्ती ग्राहक मे लीखि लेलक । त की अहाँ कैं बूझि पड़ैत अछि जे हम एकोटा कैञ्चा देबैक ?

भोलानाथ झा माथ कुड़ियबैत बजलाह - 'मिथिला-सुधारिणी' पुस्तक हम देखने छलिऐक । ज्योतिषीकाका अनने रहथि । ओ बजैत रहथि जे ई पत्र व्यर्थ टांहि-टांहि कय रहल अछि । मैथिल जाति मे सुधार-तुधार किछु नहि भऽ सकैत छैक ? टुन्नी झा अपन पाण्डित्य क प्रखर प्रकाश देखबैत बजलाह- 'ई पत्र त मानि लियऽ जे अपनहि आर्यशमाजी थिक । ई सुधार की करत ? मानि लियऽ अपनहि जाति कऽ निन्दा करैत अछि । ई परम अनर्गल थिक । जौं अपनहि घर क दोष अपने देखर करय लागब , तखन त दोसर जाति त मानि लियऽ जे धूशि कय छोड़ि देत । हमरा जौं शम्पादक शैं भेंट होइत , त कहितिऐन्ह जे अपने कने ज्ञान झा क योग दय कऽ देखियौक ।'

एहि प्रकार क समालोचना होइत छल कि फराक सँ टुन्नी झा कैं क्यो सोर पाड़लकैन्ह। टुन्नी झा खरज स्वर सँ गर्द कय कहलथिन्ह - यैह ऐलहुँ। कनेक थम्हि गेल जाओ।

----

3. तार कोना पढ़ाओल गेल

फैसला सुनबा क समय यावत मुद्दालह लोकनि कठघरा मे ठाढ़रहैत छथि , तावत पर्यन्त हुनका लोकनि क सौसे देह भुलकैत रहैत छैन्ह। किन्तु हाकिम क मुँह सँ रिहाइ क आज्ञा सुनैत देरी हुनका लोकनि कैं कत गोट मोक्षानन्द क प्राप्ति होइत छैन्ह , से केवल भुक्तभोगिए अनुभव कय सकैत छथि। दरवाजा पर ज्योतिषी कका क शब्द सुनि लालकाकी लोकनि कैं ओही प्रकार क आनन्द बुझि पड़लैन्ह।

ज्योतिषी कका पहिने त हरकारा सँ ओकर जाति पुछलथिन्ह , तदनन्तर गाम, परगन्ना, थाना, बाप क नाम आदि पूछि कय निम्नलिखित प्रश्नावली करय लगल्थिन्ह - 'अहाँ कै भाइ छी ? कतेक घर जयवार अछि ? भोजन मे कै मन चाउर लगैत अछि ? कतेक खेत जोतै छी ? धियापुता सभ विवाहल अछि कि कुमारे ? राति मे भात खायब कि अपना हाथ सँ पाक करब ?' इत्यादि, इत्यादि।

हरकारा सभ प्रश्न क यथोचित उत्तर दय हाथ मे तार देलकैन्ह और प्रणाम कय विदा भय गेल। ज्योतिषी कका खराम खटखटकबैत दलान क मुँह पर पहुँचलाह और दू-तीन बेर बल सँ खखास कैलन्हि। से सुनितहि लालकाकी , फुचुकरानी, बड़कागामवाली सभक सभ अपना-अपना घर दिशि पड़ैलीह। तखन ज्योतिषी कका आङ्गन मे पदार्पण कैलन्हि। मैंया खाट पर बैसबा क संकेत कैलथिन्ह। ज्योतिषी कका केथरी कैं हटा कए अखरा खाट पर बैसि गेलाह।

तदनन्तर ज्योतिषी कका क उपन्यास प्रारम्भ भेल। कोना भोजन कैलन्हि , कोना आचमन कैलन्हि। कोन तरहें लोटा लऽ कऽ बहरैलाह , कोन तरहें दछिणबरिया खत्ता मे लघुशंका करय गेलाह, कोन रुपें झुनियाँमाय क स्वर कर्णगोचर भेलैन्ह। कोन रुपें जिज्ञासा करबाक हेतु चललाह, से सभ कथा एक घंटा मे सविस्तार कहि सुनौलथिन्ह।

तदुपरान्त लालकाकी घर सँ बुचिया द्वारा पुछबौलथिन्ह जे तार मे की लिखल छैक ? ज्योतिषी कका तार कैं उनटबैत-पुनटबैत बजलाह - 'हमरा तर्क मे अबैत अछि जे भोलानाथ कैं कतहुँ सँ उपनयन अथवा विवाह क निमन्त्रण आएल छैन्हि। से किएक तँ लाल कागत मे लिखल छैक। जौं श्राद्ध कऽ नेओत रहितैन त कदाचितो लाल नहि पठवितैन्ह। निश्चय शुभकार्यक पाता थिकैन्ह। जौं तिरहुता मे लिखल रहितैक त हम स्वयं बाँचि लितहुँ। ' तदनन्तर ज्योतिषी कका कैं जीवन भरि जतेक निमन्त्रण पत्र लाल आखर अथवा लाल कागत मे आएल रहैन्ह, ताहि सभ क विस्तार पूर्वक उपाख्यान सुनाबय लगलथिन्ह।

अन्त मे प्रश्न उठल जे आब तार पढाओल कोना जाएत ? ज्योतिषी कका किछु काल बिचारि कय बजलाह - सकुड़ी मे एकटा बड़ पैघ डाक्टर अछि। यदि ओकरे सँ ई पत्र पढ़वाओल जाइत त यथार्थ समाचार बूझि पड़ैत। अपना गाम क त जे केओ अङ्गरेजिया अछि से सभ बाहरे अछि काल्हि भिनसरे ककरो सकुरी पठेबाक चाही। कतहु तिथि टरि जैतैन्ह त मुफ्त मे बिदाइ मारल जैतैन्ह।

मैया चिन्तित भाव सँ कहलथिन्ह - राड़-रोहिया त आइकाल्हि डुम्मरि कऽ फूल भय गेल अछि। जहाँ घर मे चारि पसेरी मरुआ होइत छैक कि कनडेरियो नहि तकैत अछि। काल्हि ककरा पठैबैक से नहि सुझैए।

ज्योतिषीकका अपना पैरक अंगुठा दिशि तकैत बजलाह - हम त अपनहि भ अबितहुँ , किन्तु परसू ठेस लगला सँ औठा मुड़ुकि गेल। तैं चलबा मे कष्ट होइत अछि मुकुन्द एहि सभ मे बेश चड़फड़ अछि। किन्तु ओ त एतय अछिए नहि ! झारखंडी कै पठबितिऐक से ओकरा किछु गमले-बुझले नहि छैक।

झारखंडी कैं नाम सुनितहि लालकाकी बुचिया द्वारा कहबौलथिन्ह - ओकरा छोड़ि और ककरो जुनि पठबथुन्ह। ओ बड सगुनियां लोक अछि। जतहि जाइत अछि , ततहि काज बनौने अबैत अछि।

अन्ततोगत्वा ई प्रस्ताव सर्वसम्मति सँ स्वीकृत भेल जे भिनसरे झारखंडी कैं किछु पनपियाइ करा सकुड़ी पठाओल जाय। ज्योतिषी कका कनेक काल और बैसितथि, किन्तु उड़िस काटय लगलैन्ह। उठि बिदा भए गेलाह।

झारखंडीनाथ सूति उठि कय दातमनि कैलन्हि और पोखरी मे एक डूब दऽ , भीजल अङ्गपोछा डाँड़ मे लपेटनहि भोलानाथ झा के आङन मे पहुँचलाह। लालकाकी हपसि कय कहलथिन्ह-आउ ऐ बाबू! अहीं क बाट तकैत छलहुँ। बड्ड जरुरी काज भऽ पड़ल , तै बजा पठौलहुँ अछि।

झारखंडीनाथ बजलाह - सकुड़ी जैबा मे त हमरा दिशि सँ कोनो भाङठ नहि , किन्तु आइधरि हम कहियो ओतय नहि गेल छी , और दोसर जे ओहिठाम अपन चिन्हारो केओ नहि अछि। ताहि पर रामजी क प्रताप सँ धोतियो धोबिए क ओहिठाम अछि।

लालकाकी पोल्हा कए कहलथिन्ह- ऐ बाबू! धोती हम दैत छी। जे किछु सेवा-खर्चा लागय से लय लियऽ। हम की कहू ! बूझब जे अपन काज थिक। बेश, आब पैर धो लियऽ। पितियाइन ठाँव-बाट कैने छथि।

एकरा उत्तर मे झारखंडीनाथ एक लोटा पानि पैर पर उझीलि पीढ़ी पर आबि कय बैसि गेलाह और चूड़ा भिजाबय लगलाह। लालकाकी लग मे बैसि आम क मुँहठी काटि-काटि देबय लगलथिन्ह। झाड़खंडी कैं तृप्तिपूर्वक भोजन करैत देखि लालकाकी नहूँ-नहूँ बजलीह - के जाने कोन बात तार मे लिखल छैक। जे नीक-बेजाय होइक से अपनहि पेट मे राखब। एकर हाल ककरो अनका नहि कहबैक।

झारखंडी पूर्ववत् चोभा लगबैत बजलाह - भला कहू त ! ई बात क कान मे किन्नहुँ जा सकैत अछि ! हम रामजी क प्रताप सँ तारक चर्चो टा ककरो आगाँ मे नहि करब।

लालकाकी प्रसन्न भय सन्दूक सँ एक खंड धोती बाहर कैलन्हि। पुनः पा तिनियेक चूड़ा , एक धरिका अमौट और चारि आना कैञ्चा आनि कय झारखंडी आगाँ मे राखि देलथिन्ह। झारखंडी बटखर्चा लेब मे कुण्ठित होमय लगलाह। किन्तु लालकाकी अपन सपत देलथिन्ह तँ चुपचाप सभ वस्तु लय बिदा भेलाह।

झारखंडीनाथ किछु दूर गेला क उपरान्त कोनी कटैत अपना घर पहुँचलाह। ओतय चूड़ा , अमौट, कैञ्चा सभ राखि देलन्हि। तखन बथान दिशि चललाह। बाट मे जे क्यो भेटैन्हि तकरा सभ कैं तारक वृत्तान्त कहि सुनबथिन्ह और अन्त मे कहि देथिन्ह जे देखब ई बात गुप्त थिक, ककरो आगाँ बाजी जुनि। एहि प्रकारेँ सभ सँ एकान्ती करैत झारखंडी बथान पहुँचलाह और ओतय जा कऽ चरबाह सभ कैं तार क हाल सुना कहलथिन्ह जे तोरा लोकनि तावत माल-जाल कैं नीक जकाँ देखैत-सुनैत रहिहें।

झारखंडी पूरे तिन बजे सकुड़ी क सड़क पर दृष्टिगोचर भेलाह। ओतय एकटा मोदिआइन सँ पुछलथिन्ह - 'गौ, सकुड़ीक डाकदर कोन ठाम रहता है ?' एवं प्रकारेँ झारखंडीनाथ सभ सँ पुछारी करय लगलाह - 'डाकदर क बासा कतेक दूर पड़ता है। हमरा केओ गोटे बाट देखा देते हैं ?' ताहि पर जोँ क्यो पूछन्हि जे कोन डाक्टर ' त कहथिन्ह जे 'सकुरी क डाकदर।' हिनका अपना भरि बौआइत देखि एगोटा अस्पतालक बाट देखा देलकैन्ह। ई जा कऽ रोगी सभ कऽ बीच मे ठाढ़ भऽ गेलाह। सिपाही पुछलकैन्ह - 'तुमको कौन बीमारी है ?' हिनका बूझि पड़लैन्हि जे ई अपनैति सँ जिज्ञासा कय रहल अछि। कहलथिन्ह जे 'हमरा आङ्गन मे कनेक-कनेक कब्जियत बूझि पड़ता है। रामजीक प्रताप सँ कहियो-कहियो पेटो फूलि जाता है। और सभ लोकवेद निकें रहता है।'

'हमरा आङ्गन' कहला उत्तर स्त्री क बोध होइछ , ई सूत्र प्रायः सिपाही कैं नहि ज्ञात छलैक। ओ बाजल अच्छा, थोड़ी देर मे डाक्टर साहब आ रहे हैं। तबतक यही ठहरो।

डाक्टर अबितहि रजिस्टर फोललक और एकाएकी सभ रोगी कऽ विवरण लय नुसखा लिखय लागल। जखन झारखंडीनाथ क पार ऐलैन्ह, तखन हिनको सँ नाम और अवस्था पुछलकैन्ह। ई कहलथिन्ह - सरकार ! हमरा लोक सभ दुलार सँ 'खट्टर' कहता है, लेकिन असल नाम झारखंडी माय बाप राखि दिया। और उमिर मे सरकार सभ भाइ सँ छोट हैं।

डाक्टर चश्मा क भीतर सँ आँखि गुड़ेरि कय बाजल - 'बीमारी क्या है ? जल्द कहो।' झारखंडीनाथ हड़बड़ा गेलाह। बजलाह- हम त लालकाकी क काज सँ एहि ठाम - रामजी क प्रताप सँ - बिमारी तँ कुछ नही सरकार एकठो तार - कनेक झट दऽ काज भऽ जाय।

डाक्टर अत्यन्त कुपित भय बाजल - कहाँ गया दरबान ! हटाओ इसको यहाँ से। काहे बदमाश को यहाँ घुसने देता है ?' सिपाही कैं अपना दिशि अबैत देखि झारखंडी 'बाप रे बाप' कहि पड़ैलाह।

झारखंडी नाथ पड़ाएल-पड़ाएल एकटा 'पवित्र मैथिल भोजनालय ' क निकट पहुँचलाह। ओहि ठाम संयोग सँ अपना मसियौत भाय पर दृष्टि पड़ि गेलैन्ह। ओ देखितहि टोकलथिन्ह - हौ, झारखंडी छऽ हौ ! ऐम्हरे-एम्हरे। एखन गाड़ी कैं बहुत बिलम्ब छौह।' झारखंडी कैं कतहु सँ प्राण ऐलन्हि। हृदय मे भ्रातृस्नेह क समुद्र उमड़ि ऐलैन्ह। कलपि-कलपि कय सभटा हाल सुना गेलथिन्ह।

मसियौत आश्वासन दैत कहलथिन्ह - कोनो चिन्ता नहि। एहिठाम एकटा मोहर्रिर रहैत छथि। हमर बेश चिन्हार छथि ! चलह, हुनके सँ काज भए जैतौह।

झारखंडी अपना मसियौत भाय क पाछाँ-पाछाँ मोहर्रिर क डेरा पर पहुँचलाह। ओहिठाम पटिया पर बैसल एक व्यक्ति हुक्का पिबैत रहय। हिनका लोकनि कै देखि कहलकैन्ह - मोहर्रिर साहब पाखाना गये हैं। करीब एक घंटा मे आवेंगे।'

अगत्या ई दूहू गोटा एक टूटल चौकी पर बैस गेलाह। पूरे पैंतालिस मिनट पर मोहर्रिर साहेब उकासी करैत पैखाना सँ बहरैलाह। अबितहि नौकर कैं डाँटय लगलाह जे 'साला, पैखाना इतना गन्दा काहे कर दिया! जाने को मिजाज नहीं करता है।' पुनः हुक्का पिउनिहार व्यक्ति पर बिगड़य लगलाह जे 'हमारा हुक्का ताख पर से काहे उठा लाते हैं ?' फेरि भीतर जा कऽ कोनो कारणवश धियापुता सभ कैं ठोकए लगलाह। जखन ओ सभ चें-भों करए लगलैन्ह तखन मोहर्रिर साहब बाहर ऐलाह।

हिनका लोकनि कैं बैसल देखि मोहर्रिर तमसा उठलैन्ह - 'ए साहब क्या कर रहे हैं ? चौकिया टूट न जायगी !'

ई लोकनि फुरफुरा कऽ उठि गेलाह और सभ वृत्तान्त कहि सुनौलथिन्ह। मोहर्रिर साहेब कहय लगलथिन्ह- 'ए साहब ! हम तो लिखने-पढने का काम बिलकुल छोड़े हुए हैं। खाँसी के मारे नाकोदम आ गया है। उसमे कब्जियत हो गई है सो पैखाना जल्दी उतरता ही नहीं। खैर , लाइए तो देखें, कैसा तार है।'

मोहर्रिर साहेब तार कैं तजबीज करैत बजलाह - 'ए साहब ! हमको तो बिना चश्मा के कुछ सूझता ही नहिं है।' नौकर पर खिसिया कऽ कहलथिन्ह - 'रे उलुआ ! ताकता क्या है ? चश्मा न ले आ।'

चश्मा ऐला उत्तर मोहर्रिर साहेब नाक पर कमानी चढौलन्हि , फेर लत्ता क छोर सँ ओकरा कान मे बन्हलन्हि। तखन तार पढ़य लगलाह - 'ए साहब ! पहले 'बी' मालूम पड़ता है, तब शायद 'एम' है- नहीं 'डब्ल्यू' है, उसके बाद 'जेड' है, उसके बाद......ए साहब ! यह तो बड़ा गड़बड़ है। हमसे नहीं होगा। नाहक इतना तंग किया। ले जाइये। ' झारखंडीनाथ अपना मसियौत भाय क सङ्ग पुनः भोजनालय मे पहुँचलाह। दीप लेसबाक बेरि भय गेलैक। मसियौत भाय आग्रह कैलथिन्ह जे - 'आब कहाँ जैबह ? राति होटल मे खा-पी कऽ भिनसरे चलि जैहऽ।'

झारखंडीनाथ जन्म-भरि कहियो होटल क मुँह नहि देखने छलाह। आइ पहिले-पहिल क सिहन्तगर नाम सुनि आह्लादित भए भोजनालय क भीतर मे जा कऽ देखलन्हि जे टोकना क टोकना चढल अछि। एकटा अढेया मे अङपोछा लगाय माँड़ पसाओल जा रहल अछि। एकटा बड़का टोकना मे पीयर राहड़ि क दालि लगाओल जा रहल अछि। एगोटा बड़का सिलौट पर आमक चटनी पिसैत अछि। ई सभ देखि झरखंडी क जीभ सँ पानि खसय लगलन्हि। मसियौत भाय क लग जा कऽ पुछय लगलथिन्ह- भाइ साहेब एतय कोनो भोज-भात क तैयारी भऽ रहल छैक की?

मसियौत भाय कहलथिन्ह- एतय सभ दिन एहिना होइत छैक। दू आना कैञ्चा देला सन्ताँ जे क्यो आबथि तनिका भरिपेट भात,दालि, तरकारी और चटनी खोआए देल जाइत छैन्ह।

झारखंडी कनेक विस्मित भए बजलाह-और जे क्यो असौजनियाँ छथि तनिका लोकनि कैं की भोजन कराओल जाइत छैन्हि ?

मसिऔत भाय बिहुँसि कय कहलथिन्ह - जे क्यो असौजनिया अबैत छथि तनिका लोकनि कैं नीक जकाँ चानन-काजर कए, पाग-डोपटा बिदाई दय सौजन्य कराओल जाइत छैन्ह। किन्तु डाला पर पहिनहि सभ दाम जोड़ि कय चढाबए पड़ैत छैन्ह।

झारखंडीनाथ आश्चर्जित भए बजलाह - अरौ तोरी क रौ तोरी ! एहन रंगताल त कहियो ने सुनने छलिऐक ! बेश, ई त कहू जे घरबैया क मूल की थिकैन्हि ?

मसियौत भाय आकुंचित नयन सँ कहलथिन्ह - घरबैयाक मूल थिकैन्हि अछिंजले भतवार। हिनका ओहि ठाम आब बड़-बड़ पैघ लोक अबैत छैन्हि। वैह देखू एकटा पागधारी औखन आबि रहल छथि। ई उपदेशक जी थिकाह। आन ठाम जैताह त भरि ठेहुन जमाबए लगताह जे हम अरबे चाउर भोजन करैत छी , किन्तु एहि ठाम ऐला सन्ताँ अपैत-सपैत सभटा हविष्ये बनि जाइत छैन्हि।

एतबहि मे एकटा मैट्रिक फेल जे डाकपिउनगिरि क हेतु सिफारिशी चिट्ठी अनने छल और दू-तीन दिन सँ दौड़ि-बरहा करैत छल, भोजनालय मे पहुँचल। झारखंडी क मूँह सँ लगातार तार कऽ चर्चा सूनि ओ कहलकैन्ह - 'महाराजजी ! कैसा तार है ? लाइये न, पढ़ दें।' झारखंडीनाथ हड़बड़ी मे दूनू हाथें तार बढा देलथिन्ह। ओ तार पढए लागल-

'मैरेज सेट्ल्ड ब्रिंगिंग ब्राइडग्रूम आन ट्यूजडे इवनिंग ऐरेंज।'

पाछाँ भाषा में अर्थ बुझाबय लगलैन्ह- तार पठने से आया है। रेवतीरमण नाम के किसी आदमी ने पटना से तार भेजा है। शादी ठीक हो गई। वह मंगलवार की शाम को दूल्हा लिये आ रहे हैं। तबतक सब इन्तजाम कीजिए।

----

4. जहाज पर क गप्पशप्प

संध्या क समय अछि। सूर्य भगवान रुसल जमाय जकाँ मुँह विधुऔने प्रस्थान कय रहल छथि। गङ्गाजी क हिलकोर देखि भान होइछ जेना जमाय क रुसला सँ गोटेक छोहगरि सासु क छाती दलमलित भय रहल हो।

एतबहि मे एकटा स्टीमर शंखनाद करैत महेन्द्रू घाट दिशि अबैत दृष्टि गोचर भेल। जहाज क भोंपा सुनतहि समस्त यात्रीगण मे भारी हूलि उठि गेल। जेना 'सिरकट्टा' दौड़ल आबैत हो।

जहाज घाटो ने लागल छल कि असंख्य कुलीवृंद मुसाफिर लोकनि कै धकियबैत , केहुनियबैत, सुग्रीव क दल जकाँ फानि कए ओहि पर टूटि पड़ल। जहिना कुकुर क जमात ऐंठ पात देखि चारू कात सँ ओहि पर झपटैत अछि , तहिना कुलियो सब ट्रंक ओ मोटा देखि ओहि पर झपटैत गेल और छीना जोरी करैत उठाबय लागल।

जहाज क मुसाफिर लोकनि उतरबाक मोसबिदे बनबैत छलाह कि घाट पर क धरोहि एके बेरि रेलमपेल करैत जहाज दिशि कऽ जोर कय देलक।

एही धक्काधुक्की क समय मे एगोटा स्थूकाय नेने घाटक सीढी पर धड़फड़ाइ आबि रहल छथि। झटकला सँ सौंसे देह घाम सँ तर-बतर भय रहल छथि। तथापि थुलथुल करैत , अपना भरि अपस्याँत होइत नीचा उतरि रहल छथि। धौतवस्त्र अत्यन्त ढील भय डाँड सँ अहिंसात्मक असहयोग कय रहल छैन्ह। जहिना एक हाथ सँ फुजल साँची सम्हारय लगलाह कि बामा हाथ सँ लोटा खसि पड़लैन्ह। गङ्गाजल सँ भरल कलगइयाँ लोटा ढनढना कऽ ओङ्गढाइत-ओङ्गढाइत गङ्गाजी क धारे मे जा कऽ विश्राम लेलक।

एतबहि मे जहाजक भोंपा बाजि उठल। ई सुनैत आगन्तुक टाँहि देलन्हि- 'औ लाल छी औ ? आहि रौ बाप! औ की भेलहुँ औ!....... उत्तर नदारद।

एहि बेरि बुचकुन चौधरी कैं जतेक दम छलैन्ह ततेक जोर सँ चिचियाय लगलाह-'औ ला-आ-आ-आ-ल! कतहु लाल छी औऽऽऽ! एहि बेरि जहाज पर सँ तीव्र स्वरें उत्तर श्रुतिगोचर भेल- 'एम्हरे, एम्हरे। चलू झट द'। जहाज छुटैत अछि।'

आब बुचकुन चौधरी कैं कतहुँ सँ प्राण ऐलन्हि। लोटा क मोह छोड़ि तलमलाइत-तलमलाइत जहाज पर चढ़ि गेलाह।

बुचकुन चौधरी कैं देखितहि लालकका पुछलथिन्ह - अहाँ लघुशंका करय गेलहुँ से एतेक विलम्ब कतय लागल ? हमरा त होइत छल जे आब अहाँ एत्तहि छुटलहुँ।

चौधरी जी अङ्गपोछा कैं बीयनि जकाँ घुमबैत बजलाह- आहि ! की कहू ? भारी फेरी मे पड़ि गेलहुँ। लग मे कतहु निकासे नहि भेटैत छल। एहि दिशि महादेव कऽ घाट छैन्ह। ओहि कात गेलहुँ त टमटम सभ ठाढ़। जेम्हरे जाइ तेम्हरे लोक सभ धड़मुड़िया देने। एक ठाम बैसय लगलहुँ त ओहि ठाम 'हावागाड़ी' पहुँचि गेल। तखन की करु। जा कऽ सत्यदेव क डेरा सँ लघुशंका कय ऐलहुँ अछि। ओहि ठाम जहिना पहुँचैत छी कि जहाज एम्हर भोंमियाय लागल। से ताहिठाम सँ बुझू जे दे दड़बड़, दे दड़बड़......

ई कहि चौधरीजी पुनः हाँफय लगलाह और पंखा डोलाबय लगलाह। जखन हँफनी किछु कम भेलन्हि, तखन एकाएक बाजि उठलाह - लाल ! लोटा त गङ्गाजी मे खसि पड़ल। धड़फड़ी मे हाथ सँ छूटि कऽ ढनमनाइत-ढनमनाइत नीचा गेल। जा निहुरी-निहुरी ता तँ पार ! लोटा तँ गेल से गेवे कैल, गङ्गाजलो सभ सँ छुट्टी भ गेल।

ई सुनितहि लालकका क रङ्ग उड़ि गेलैन्ह। अत्यन्त खिन्न भय बजलाह - जाह ! लोटा खसि पड़ल ? बहुत दिन सँ हमरा सङ्ग छल। प्रयाग क कुम्भ मेला मे जा कऽ किनने छलहुँ। आव कि ओहन लोटा एहि देश मे भेटि सकैत अछि ? कतेक यत्न सँ अपन नामों ओहि पर खोदबौने छलहुँ।

लाल क मुखाकृति स्याह होइत देखि चौधरी जी झट बाजि उठलाह - नहि , नहि। अहाँ क लोटा द नहि कहैत छी। ओ त मोटा मे बन्हले अछि। हमर अपने लोटा हेरा गेल।

ई सुनितहि लालकका क पितपिताएल ठोर पर हँसी क रेखा आबि गेलैन्ह। बजलाह - अहाँ क लोटा छल ! हेराइये गेलैक तँ कोन क्षति ? घृत कतय हेरायल तँ दालि में। गङ्गेजी क उदर मे पैठ भेलैन्ह किने ? ई भग्यहि कऽ बात बूझक चाही। लोटा त कतेक भऽ जाएत किन्तु गङ्गामाइ क कृपा सदैव एहिना होइत रहौ यैह बड़का बात।

चौधरी मनहिमन कहलन्हि-'एहन कृपा अहीं कैं सदैव होइत रहौ। कनेक अपना दऽ बूझि पड़ल तँ केहन छिलमिला उठलहूँ! आब ज्ञान-गुदरी छाटएँ लगलहुँ अछि। पुनः प्रकाश्य स्वर मे बजलाह-'लोटा हेरा गेल से तँ एक तरहें नीके भेल। ओकर कनखा किछु ओदरि जकाँ गेल छलैक। से मँजबा काल गोटेक दिन आँगुरे कैं पार कऽ दैत छल। आब ओहि डर सँ त बचलहुँ।

एतबहि मे जहाज क तेसर घण्टी बाजल और जहाज विपुल-जलराशि कैं चिरैत बिदा भेल। घाट सँ देखला उत्तर बूझि पड़य जे जहाज गंगाजी मे पानिक सड़क बनबैत जा रहल अछि। किन्तु ओ सड़क बाल-विधवा क मनोरथ जकाँ बिलाएल जा जा रहल अछि।

देह मे बयार लगला पर बुचकुन चौधरी लालकका सँ गप्प करबाक हेतु कोनो बात फुराबय लगलाह। जखन और किछु नहि फुरलैन्ह तखन बजलाह लाल ! बटुकजी त 'सभा'पहुँचि गेल होयत। कतहु एहन ने हो जे ओम्हर भोलानाथ गोटेक दोसर 'विख्या' नेने आएल होथि।

ई बात लालकका कैं कठाइन जकाँ बूझि पड़लैन्ह। तथापि बल सँ हँसि कय बजलाह-नहि। एहन नहि भय सकैत अछि। हम गाम क पता सँ तार दैए देने छिऐन्ह। तखन बटुकजी कैं पठाइये देने छिऐक। काल्हिये सौराठ पहुँचि गेल होएत। दोसर, जे भोलानाथ हमरा बिनु सूचित कैने 'बालक' नहि आनि सकैत छथि।

चौधरि आब हँ में हाँ मिलबैत कहलथिन्ह-हँ, से तँ ओ साक्षात भोलेनाथ थिकाह। बिनु पुछने लघुशङ्को करय नहि जैताह। वर अनवा क कोन कथा? आब तँ बटुकजी द्वारा सभ ज्ञाते भेल हेतैन्ह।

लाल कका एहि बेर गम्भीर मुद्रा बना कय बजलाह-बटुकजी अछि कतेक बुड़ि जकाँ। तैं संदेह होइत अछि जे संवाद पहुँचल होइन्ह वा नहि।

कहियो पूर्व मे 'सभा' गेल अछि कि नहि?

हँ से तऽ हमरा संग तीन बेरि भऽ आयल अछि, किन्तु बोध नहि भेलैक अछि। ओतय पहुँचले उत्तर दिसाँस लागि जाइत छैक। हम त अपना भरि खूब बुझा-सुझा कए पठौने छिऐक जे पहिने टुन्नी झा घटक क खोज करिहऽ, वैह सभ कए देथुन्ह। आब देखा चाही जे केहन यश लगवैत अछि।

चौधरीजी सोचय लगलाह जे एहि पर की बाजू। तावत लालकका पूछि बैसलथिन्ह-जमाय खूब पसन्द पड़लाह किये?

चौधरी जी 'रोटिया गवाह' छलाह। हुनका सिद्धान्ते 'सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात ' एहि वचन क केवल उत्तरार्द्धे टा माननीय छलैन्ह। पूर्वोक्त प्रश्न यदि केओ आन व्यक्ति एकान्त मे पुछने रहितैन्ह न कोश क समस्त निन्दासूचक शब्द कैं निघटा देने रहितथि। किन्तु लालकका क मुँह सँ ई प्रश्न सुनि केवल अलङ्कारे मे प्रशंसा करए लगलाह- जमाय त बस जमाइये छथि। जेहन होमय बुझए। आइकाल्हि क जे थिकैक छओ पाँच , से एकोरत्ती नहि छैन्ह। दोसर केओ अङरेजिया रहैत त मारि टीपटाम फीटफाट-मचमच करैत चलैत। किन्तु ई त बूझू जे परमहंसे थिकाह। एहन त कतहु देखबे नहि कैल। तखन अवगुण मे अवगुण यैह जे कनेक मोटिया पहिरैत छथि।

ई कहि चौधरी मंद-मंद हँसए लगलाह।

लालकका किछु अधिक घूमल फिरल छलाह। बजलाह- खद्दर पहिरैत से तँ कोनो अनर्गल नहि। आइकाल्हि बसाते सैह बहि गेल छैक। हमही देखू जे 'बाबू ! ई धोती हमर अपन कीनल नहि अछि। बिदाइ मे भेटल तँ कोना फेकि दियऽ। हँ , आब जौ, किनबा क होयत त स्वदेशीए कीनि लेब।'

जखन चौधरीजी देखलन्हि जे लाल अहू विषय मे हाथ नहि लगलाह तखन बाजय लगलाह - आहि, आही, आहि ! से त अवश्ये। आब त नीक-नीक लोक बुझू जे खद्दरे पहिरए लागल अछि। और विलायती कपड़ा भेटबे कतए करैए ? सभ दोकान पर दू-दू गोटा नकूल-सहदेव जकाँ ठाढ़। की त हम स्वयं सेवक थिकहुँ !

लालकका कहलथिन्ह - देखि तहि छी कतेक कठिनता सँ चारि खण्ड विलायती साड़ी भेटल अछि। मिसर क खातिर त सभटा वस्त्र खादिए कऽ लेबय पड़ल अछि। किन्तु आङ्गन क हेतु बूझू सौंसे वाकरगंज छनि कय तखन चारि टा पातर साड़ी भेटल अछि।

बुचकुन चौधरी एहि कथा क समर्थन करबा लय सुरफुरैलाह। किन्तु लालकका क वार्त्तालाप क रुख बदलल जकाँ देखि चट दँ पूछि बैसलथिन्ह- की जमाय क शील- स्वभव केहन बूझि पड़ैत अछि ?

चौधरीजी क मूंहक बात मुंहे रहि रहलैन्ह। बजलाह - 'आहि आहि ! शील-स्वभाव क कोन कथा ? परम सात्विक छथि। असले सत्ययुगी अवतार। आइ-काल्हि क नवतुरिया छौंड़ा सभ जकाँ ए० बी० सी० टी० फी० टी० पढ़ि लेलक कि भदैया वेंग जकाँ कोंकियाए लगैत अछि। बूढ़ पुरनिया कैं के गुदानैत अछि ? सदिखन बबुआनी फैशन मे चूर। किन्तु हिनका मे त घमण्ड क छूतियोटा नहि छैन्ह। एकरा सोन मे सुगन्ध बुझबाक चाही। धाख संकोच सेहो वेश छैन्ह। तखन माथ जे नहि झँपै छथि से त कनेक नेनमति जकाँ छैन्ह। हमर ससुर त परम वृद्ध भऽ गेलाह - आँखि नहि सुझैत छैन्ह - किन्तु औखन यदि कतहु भेंट भऽ जाइत छथि त झट दऽ धोतियो क साँची खोलि कऽ माथ पर राखिए टा लैत छी।

लालकका देखलन्हि जे ई कतबो प्रशंसा की प्रशंसा क बाप ने करताह , तथापि अन्त मे एक शह धरि अवश्ये लगा देताह। अतएव हारिदारि कए आब अपनहि दिशि सँ कहय लगलथिन्ह - ई कुटुम्ब असल मे पूछी त हमरा कृत्ये नहि भेल छथि। एकर सोरहो यश वा अपयश 'कनटीर' (रेवतीरमण) कैं छैन्हि। ओ त कहैत छथि जे ई एकटा रत्ने थिकाह। ई त दैव कैं अनुकूल बुझबाक चाही, ने त ई कतहु हमरा ओहिठाम आबथि। वर-परगुन देखितहि छी- बी० ए० पास, घर सँ बेश सुखितगर पाँ-छौ सै टाका क नगदी तहसील - सभा जैतथि त एक हजार सँ कम नहि भेटितैन्हि।

किन्तु ई बड्ड उच्च विचार क छथि। कहै छथि जे तिलक प्रथा अन्याय थिक। विवाह स्त्री-पुरुष क होइत छैक , किन्तु टाका क नहि। तैं हमरा सँ एकोटा कैञ्चा क अपेक्षा नहि रखैत छथि। एहन कथा जँ आन ठाम करितहुँ त तनो-तरीज भऽ जैतहुँ- ओहि पाछाँ बिका जैतहुँ , किन्तु हिनका मे त जगदम्बा क कृपा सँ कोनो टा खर्चे नहि। तखन ई त हमरा वास्ते बूझू जे देवते भऽ कऽ ठाढ़ भेल छथि।

चौधरिजी क अपन जमाय पढ़बा-लिखबा मे सिलपट्ट छलथिन्ह। ताहू पर बरियात बिदा करय काल एक जोड़ बड़द क खातिर ससुर जमाय मे खूब थुक्कम-फज्जति भऽ गेल छलैन्ह , जे समस्त गाम मे प्रख्यात छल। अतएव लालकका क सौभाग्य सूर्य कैं एकाएक एतेक चमकल देखि चौधरी क आँखि फूटय लगलैन्हि। तथापि आन्तरिक भाव कैं दवा कय कहलथिन्ह- ईह ! अहाँ त 'अल्टी' मारि देल। अपना टोल क कोन कथा- गाँव भरि मे एहन कुटुम्ब केओ नहि अनने छलाह - से बड़का-बड़का बबुआन सभ देखि कय दाँते आङ्गुर काटय लगताह। यावत सभ केओ सभा मे टाँहि-टाँहि करैत छलाह , तावत् एही ठाम मे अहाँ खड़े पचीसे रंग.....

एतेक धरि बाजि ईर्ष्या क प्रबल वेग सँ रुद्धकंठ चौधरी आगाँ नहि बढि सकलाह। लालकका सौजन्य देखबैत कहलथिन्ह - ई कथा जे भऽ सकल से अहीं लोकनिक कृपा क फल थिक। अहाँ त संयोग सँ हाईकोर्ट मे अपील करय आबि गेलहुँ तैं , नहि त एसगर हमरा बुते कोनो टा काज सम्हरैत? कनटीर त सदिखन मिसरेक सङ्ग छथि। दुहू गोटा कैं सुलग्न क भेट छैन्ह ,तैं एतेक मेल रहैत छैन्ह।

ई कहि लालकका मन्द-मन्द मुसकाय लगलाह। लालकका कैं एहि तरहें प्रसन्न होइत देखि चौधरीजी क सौंसे देह मे आगि लागि गेलैन्ह। मन मे कहलन्हि- 'कोन एहन सोति कैं डठा अनलन्हि अछि जे एतेक गतियाइत छथि?एक पहर सँ अपना भरि ढकि रहल छथि,जेना हमरा लोकनि कहियो कुटुम्ब क मुँहें नहि देखने रहि। बेश , हिनक मोहो त कनेक तोड़ी देबाक चाही।' ई विचारि चौधरीजी क तीक्ष्ण दृष्टि छिद्रान्वेषण दिशि तत्पर भेल। बजलाह- 'मिसर क पित त नहि जीवित छथिन्ह। यैह कनेक अथी जकाँ.......

लाल कका बीचहि मे बात काटि कहलथिन्ह-पिता नहि छथिन्ह तँ हर्जे की ? आब किछु नाबालिग त नहिए छथि। भगवान क कृपा सँ अपन कार्य्य देबखा योग्य...

चौधरी-घरे किछु अधिक दूर पबैत छैन्हि। भागलपुर जिला एहिठाम सँ.....

ला०-आब त रेल क प्रसादात दूर कतहु रहबे नहि कैल। और भागलपुर जिला क त अपना गाम में कइएकटा कुटुमैती अछि।

चौ०-मिसर क बयस किछु अधिक जकाँ बूझि पड़ैत छैन्ह। हमरा लोकनि कैं त नहि कोनो हर्ज, किन्तु स्त्रीगण कैं.....

ला०-नहि, बयस त बेशी नहि छैन्हि। ई बाईसम बर्ष थिकैन्ह।

चौधरीजी देखलन्हि जे आब कोनो मे नहि लहल , तखन अगत्या गस्सा में गस्सा मिला कए दसो आङुर कैं फोरय लगलाह।

एतबहि में जहाज कर्ण भेदी नाद करैत पहलेजा घाट पहुँचि गेल। सभ यात्री एक दोसरा सॅ पहिनहि जैबाक हेतु फाँड भिड़ने 'पहलेजा' नाम कैं सार्थक करय लगलाह।

लालकका ओ बुचकुन चौधरि ठाढ भय अपन वस्तु क रक्षा करय लगलाह। तावत रेवतीरमण पाहुन कैं सङ्ग नेने बोहि ठाम पहुँचि गेलथिन्ह। जखन भीड़ छटि गेलैक त ई चारू गोटे जहाज सॅ उतरैक गेलाह।

बुचकुन चौधरि दिन में सुतल नहि छलाह। अतएव ई अभीष्ट छलैन्ह जे गोटेक खाली कोठरी भेटय त ओहि मे खूब आराम सॅ सूति रही। अतएव कुली क माथ पर असबाद लदबौने गाड़ी क आदि सॅ पजोहि धैलन्हि और अन्त धरि चलि गेलाह। कत्तहु पसंद नहि पड़लैन्हि। तावत गाड़ीक सभ डिब्बा पुरोहित कऽ पेट जकाँ भरि गेल ! बुचकुन चौधरी कठिन समस्या मे पड़ि गेलाह। हिनका थकमकाइत देखि खौंझाएल कुली और जोर सॅ चिचियाय लागल।

चौधरी जी कैं किंकर्तव्यविमूढ भेल देखि रेवती रमन फानि कय एकटा कोठरीक दरबाजा खोलि ओहि मे असबाब रखबाबय लगलाह। कोठरी क यात्री लोकनि एक स्वर सॅ एहि क्रिया क घोर विरोध करय लगलाह। तथापि चारु गोटे येनकेनोपायेन ओहि मे प्रविष्ट भेलाह।

बुचकुन चौधरी नीक जकाँ गाड़ी मे चढ़बो नहि कैल छलाह कि लगलाह हड़बिड़रो उठाबय- हमर धोतीवला मोटरी कतय अछि ?

लालकका पुछलथिन्ह - की ! फेरि किछु छुटि त ने गेल ?

चौधरी बजलाह - हम ओहि पार मगह जानि गङ्गास्नान नहि कैल। जाइत छी तुरन्त एक डूब देने चल अबैत छी।

लालकका कहलथिन्ह- आब समय नहि अछि। बर्नी , अहाँ झट दऽ डूब दए आउ , ता हम धोती बाहर कए रखैत छी।

चौधरीजी आव देखलैन्ह ने ताव , सोझे गंगाक मूँहे वबिदा भऽ गेलाह। जहिना चौधरी भरि डाँड़ गंगाजल मे धंसलाह कि ओम्हर गाड़ी सीटी दय देलकैन्ह। चौधरीजी ठामे एक डूब दय

लदफद धोती नेने पानि चुबबैत दौड़लाह। गाड़ीओ क्रमशः मन्द गतिए बिदा भेलि। लालकका खिड़की सँ मुँह बाहर कय जोर सँ सोर पाड़य लगलथिन्ह। चौधरी दौड़ैत-दौड़ैत रेलवे लाइन क समीप पहुँचि गेलाह और जाहि डिब्बा मे लालकका रहथि तकर सामानान्तर दौड़य लगलाह। किन्तु सहसा गाड़ी क स्पीड तेज भय गेलैक और चौधरीजी केवल एक हाथ क अन्तर सँ छूटि गेलाह।

----

5. गोसावनि क गीत

झारखंडीनाथ तार क अर्थ घोंखैत-घोंखैत गाम दिशि विदा भेलाह। एही धुन मे मस्त भेल बढल चल अबैत छलाह कि पाछां कनपट्टी लग घंटी टनटना उठलैन्ह। जहिना पाछाँ फिरि कऽ ताकय लगलाह कि नीचा साइकिल कऽ अगिला पहिया सरसराइत साँची धोती क मध्यभाग मे सन्हिया गेलैन्ह। तदुपरान्त सड़क क दोष सॅं वा साइकिलबला क दोष सॅं वा पृथ्वी क आकर्षणशक्ति क दोष सॅं झारखंडीनाथ क शरी तुरन्त लम्ब सॅं आधार रुप मे परिणत भय गेलैन्ह। लगभग एक पल धरि साइकिल क चेन मे ओझराएल रहलाह। पुनः देह झाड़ि क उठलाह। देखैत छथि जे साइकिलबला और केओ नहि, वैह सकुड़ी क डाक्टर थिक।

झारखंडीनाथ पड़ैबाक उपक्रम करय लगलाह। ताबत पीठ मे केओ पम्प लऽ कऽ एहि प्रकारें स्पर्श कैलकैन्ह जे ओकर दोसरो नकशा ओहि ठाम उखड़ि गेलैन्ह।

झारखंडीनाथ क आगाँ अन्हार भऽ गेलैन्ह। तार कऽ जे जे अर्थ घोंकैत अबैत छलाह से सभटा बिसरि गेलाह। साइकिल हनहनाइत निकसि गेल।

झारखंडीनाथ जखन घर लग पहुचलाह तखन थोड़ेक काल ठाढ़ भऽ कऽ कानय-कानय सन मुँह बना लेलन्हि। पुनः ठेहुन कैं धेने नङ्गराइत-नङ्गराइत लालकाकी क आङ्गन मे प्रवेश कैलन्हि।

लालकाकी पिउरि कटैत छलीह। झारखंडी कैं देखितहि वाङ्ग टकुरी कैं छोड़ि ठाढ़ि भऽ गेलीह। कहलथिन्ह- ए बाबू ! अहीं पर मन टाँगल छल राति धरि ततेक अन्देसा भेल जे निन्द नहि पड़ल। आइ भिनसरे अजगैबीनाथ सॅं सगुन कराओल त कहलन्हि जे सीता क घर मे सगुन उचरल अछि से अवश्ये किछु ने किछु भांगठ भेल हेतैन। आब अहाँ क मुँह देखि जी मे जी आएल ! ऐ बाबू ! एतेक बिलम्ब कोना भेल ?

एकरा उत्तर मे झारखंडीनाथ ठोहि छोड़ि कानय लगलाह। हिचकी उठि गेलैन्ह। नाक सॅं पानि खसय लगलैन्ह। ई देखितहि लालकाकी पुक्की देलन्हि - 'अरे दै- - - ऐ बा ! मुद्दैया सभक छाती जुड़लैक रे दैबा !' बस, देखादेखी सौंसे आङ्गन मे कन्नारोहटि पस्रि गेल।

कन्नारोहटि क शब्द सुनितहि आवेशरानी फुलमतिया क सङ्ग हकासलि पियासलि लालकाकी क आङ्गन पहुँचलीह। बजलीह - हमरा त भेल जे बौआदाइ आइलि अछि। भोलाबाबू ओहि दिशि गेले छथिन्ह। भरिसक लॅअओन करौने आएल होइथिन्ह। से जहिना निपै छलहुँ तहिना नुड़हे हाथे दौड़लहुँ।

फुलमतिआ अपन फुर्ती देखबैत बाजलि - आ हम तँ कनटीरवा कैं छोंचबै छलिऎक। जहिना कननाइ सुनलिऎक कि लोटा पानि फेंकि क दौड़लहुँ।

झारखंडीनाथ देखलन्हि जे हमर कननाइ तँ दोसरे रङ्गताल पसारि देलक। तैं आब अपन अर्जीदाबी पेश करय लगलाह - अरौ बाप रौ बाप ! ज्योतिषी कका क हम की बिगाड़ने छलिऐन्ह जे हमर बध कराबय पर लागि गेलाह। सकुड़ी क डाकदर सनकाह लोक , तकरा लग खून होमय लेल पठा देलैन्ह ! ओहि ठाम जे मारलक से राम जी क प्रताप सँ मारबे कैलक, गाम क सिमान धरि नेङ्गरौने आएल छल। कोनो तरहे प्राण बाँचि गेल। ठेहुन-कोहनी सभ फूटि गेल। देखि लियऽ। अहाँ जे नवका धोती देने छलहुँ से राम जी क प्रताप सँ चिर्री-चिर्री भऽ गेल। जौं फूसि कहैत होइ त वंश तर छी।

लालकाकी आतुर भय पुछलथिन्ह - ऐ बाबू, ! आब त जे भेलैक से भऽ गेलैक। तार क हाल कहू। अपने जिबैत छथि कि नहि ?

झारखंडीनाथ अपन केहुनाठी कैं तजबीज करैत बजलाह - तार क बात सभ त हम मन पाड़ने अबैत छलहुँ। से राम जी क प्रताप सँ एहन सटका मारि देलक जे सभटा बिसरि देल।

एतबहि मे सड़क पर एक्का क खड़खड़ाहट सुनि पड़ल। झारखंडीनाथ पुनः अनिष्ट क भय सँ झट कान पर जनउ चढबैत अपना बथान दिशि बिदा भेलाह। एक्का लालकाकी क दरबाजा पर पहुँचल। ओहि पर सँ भोलानाथ और बटुकजी उतरलाह। भोलानाथ झा धुरिआएले पैरे आङ्गन मे जाय बजलाह - भौजी, खुशखबरी नेने ऎलहुँ अछि। इनाम दियऽ।

लालकाकी भोलानाथ कैं देखितहि आनन्द सँ अपना कैं बिसरि गेलीह। पुनः बजलीह - ऐ छोटका बाबू ऎ छोटका बाबू ! बड़ संकट मे आबि कऽ उबारि लेलहुँ। आइ दू दिन सँ पेट क अन्न लाबा-फरभी होइत अछि।

ढुनमुनकाकी माँड़ पसबैत छलीह। अपना स्वामी क स्वर सुनितहि पसौनाइ छोड़ि घर मे जा नुकैलीह। बुचिया एक लोटा पानि ढारि कय भोलानाथ क आगाँ मे राखि देलकैन्ह। भोलानाथ पैर क औंठा मँजैत बजलाह - भौजी ! इनाम क बात अन्ठा देलहुँ। से अन्ठौने काज नहि चलत।' लालकाकी बिहुँसि कय कहलथिन्ह - इनाम मे चारि मास और बाँकी रहि गेल अछि। जौं ठाकुरजी क कृपा होयत त ....

भोलानाथ लजा कय बात कटैत बजलाह - हम त दोसरे कथा ठीक कैने छलहुँ। घुटर मामा कैं सोरहो आना पसन्द छलैन्ह। ताबत बटुक जी दोसरे संवाद लऽ कऽ पहुँचि गेल जे लालकका अपना सङ्ग वर नेने चल अबैत छथि।

लालकाकी कैं विधाता पर अत्यन्त पित्त उठलैन्ह जे दुइए टा कान किएक देलन्हि , जौं चारि टा कान देने रहितथि त चारू कान सँ ई बात सुनितहुँ। आवेशरानी कैं हर्ष क द्वारे सौसे देह मे गुदगुद्दी लागय लगलैन्ह। लालकाकी एके सांस मे एतेक प्रश्न क वर्षा करय लगलीह - कहू कहू ऐ बाबू ! कखन बर ओतैक ? केहन छैक ? कतेक टा ? गोर छैक कि कारी ? नाम की छैक ? घर कोन गाम छैक ?

भोलानाथ कहलथिन्ह - 'बटुकजी सँ सभटा हाल पूछि लियऽ। हमरा आब स्नान मे अतिकाल भेल।' ई कहि भोलानाथ मोटरी सँ धोती और अङ्गपोछा बाहर कय एक चुडू करु तेल माथ मे पचबैत पोखरि दिशि बिदा भेलाह।

आब स्त्रीगण क गरोहि बटुकजी पर टूटि पड़ल। बटुकजी चारुकात सँ घेरा गेलाह। लालकाकी पुछलथिन्ह - ऐ बाबू ! कहू, वर देखय-सुनय मे केहन छैक।

बटुकजी अपन स्वभविक भाषा मे बाजल - वर देखे सूने मे केहन रहतन ? जेहन आदमी होइअऽ। एगो नाक हइन, दूगो कान हइन, हाथ गोर हइन; और केहन रहतन ?

आवेशरानी पुछलथिन्ह - वर के अङ्गौट केहन छैक ?

बटुकजी - न कौआ जैसन करिया छथ न बगुला जैसन उज्जर।

लालकाकी पुछलथिन्ह - वर कतेक टा छैक ? कैयम वर्ष हेतैक ?

बटुकजी- न बूढ लेखा दाँत टूटल हैन न लड़िका लेखा दूध पिबै छथ। और धुआ मे हमरा न देखली वरे के देख लेली।

आवेशरानी- ऐ बाबू ! पम्ह चललैन्ह अछि कि नहि ?

बटुकजी - पम्ह के के कहे गलमोछा तक हो गेलैन। लड़कारी ऐखनो तक धैले रहतन ?

ई बात सूनि लालकाकी क मुखमण्डल मुरझा गेलैन्ह। पुछलथिन्ह - हौ बाबू ! जमाय पढ़ल-लिखल छैक कि नहि ?

बटुकजी - हमरा लेखे त कुछ न छथ। 'शंशकीरित' मे हमरा साथ न बोल सकै छथ। एगो कनीगो 'जोतिश' के बात पूछि देलियन , ताहि मे ढेकार हो गेलन। 'शिशुबोध' के एगो इशलोक पूछलिऐन त चूड़ा अमौट दुन्नू खसे लगलन।

आवेशरानी - घर खूब सुखितगर होयतैक ?

बटुकजी - कुछ न छथ। मङ्गनी मे मँहग छथ।

तखन कोन गुन पर उठा कऽ नेने अबैत छथिन्ह ?

बटुकजी - जाने गेलिऐन ?कैसे पसिन्द पड़ गेलैन ! वर के त बोलहु के लूर न हइन। सभ के 'आप' कहे छथ।

ई सुनितहि स्त्रीगण क मण्डली मे भारी हँसी उठि गेल। आवेशरानी हँसैत-हँसैत बजलीह - ऐ बहिना ! ई ने कहियो सुनने छलिऐक। 'आप' की कहबैत छैक ?

सूर्यमुखी हँसैत-हँसैत ओंघराय लागलि। आहि गे माय ! 'आप' की कहैत छथिन्ह ? ताहि सँ सोझे 'बाप' किएक ने कहैत छथिन्ह ? एहि पर पुनः ठहाका पड़ल।

ई देखि लालकाकी क जी पित्ते ओट भऽ गेलैन्ह। लोहचि कए बजलीह - हऽ ! अनकर चौल करैत अनका किछु लगैत छैक ? अही गाम मे केहन-केहन जरलाहा जमाय सभ ऐलैक अछि। हम कहाँ ककरो मुँह मे खोरनाठ लगाबय गेलिऐक अछि ? हमरा आङ्गन मे एखन वर ऐबो नहि कैल अछि। तखन नहि जानि छुछी सभ पहिनहि सँ एतेक किऐक जड़ि लागल रहैत अछि ?

एतेक बाजि लालकाकी नहूँ-नहूँ कानय लगलीह। सूर्यमुखी रङ्ग-कुरङ्ग देखि चुप्पे घसकि देलक।

आवेशरानी आब बात कैं चिकनाबए लगलथिन्ह - ऐ बहिना ! ई नाहक कियैक सोच करैत छथि ? लालकका किछु आन्हर त छथि नहि जे पंगु कैं उठा अनताह ! हुनका सँ बढ़ि कय सफली के होएत ?

लालकाकी हुनके पर काट करैत उत्तर देलथिन्ह - हित मुदैया सभ कैं हँसबा क मन लागल छैक। से सभ कैं सिहन्ते लागल रहि जेतैन्ह।

एतबहि मे भोलानाथ झा गङ्गास्तव पाठ करैत आङ्गन मे पहुचलाह। लालकाकी टोकलथिन्ह - ऐ बाबू ! अहाँक भाय केहन कान्ह-कोनि कैं उठौने अबैत छथि से हमरा सरिपों-सरिपों कहि दियऽ, नहि त हम कपार फोड़ि कऽ मरि जाएब। हमर चंग उड़िआएल अछि।

भोलानाथ हाथ क लोटा तुलसी चौरा पर धरैत बजलाह - राम-राम ! एहन बात केओ बजैए ! शुभ अवसर पर लोक गीत-नाद गबैत अछि कि ई सभ भखैत अछि। वर त भाइसाहेब एहन नेने अबैत छथि जेहन गाम मे केओ नहि अनने छल। बटुकजी बूड़ि अछि। की कहत ?

ई सुनितहि आङ्गन मे जनीजात क मण्डली मे बड़े टहङ्कार सँ गोसाउनि क गीत उठि गेल।

----

6. मिस्टर सी० सी० मिश्रा

गाड़ी छुटि गेला उत्तर बुचकुन चौधरी जाड़ तथा क्रोध क वेग सँ थरथर काँपय लगलाह। गंगाजी क प्रति जे भक्ति छलैन्ह से विरक्ति क रूप मे परिणत भय गेलैन्ह। डाड़ मे अङ्गपोछा लपेटि भीजल धोती गाड़ैत-गाड़ैत बाजय लगलाह - आब कलियुग क गंगा मे कोनो टा महत्व नहि रहल। हिनके चलिते एहन पराभव मे पड़लहुँ। ओहि पार लोटा नेने संतोष नहि भेलैन्ह त एहि पार अबैत-अबैत 'खोप सहित कबूतराय नमः' - सभ किछु पार कय देलन्हि। नहि जानि केहन कुयात्रा मे चलल छलहुँ। महेन्द्रु मे कोनो तरहें जहाज भेटबो कएल तँ पहलेजा मे आबि कय गाड़िए छुटि गेल। आब की करु ?

एतबहि मे एक एहन सर्द बसातक झोंक आएल जे चौधरी कैं सौसे देह सिहरि उठलैन्ह। आब सभ पित्त लालकका पर झाड़य लगलाह - कहाँ सँ ई प्रत्यवाय संग लागल। पापी क संग भेने यैह सभ दुर्दशा होइत छैक। 'धियापुता ककरो घी ढाकी करय मङ्गरो।' भला हमरे एहि बीच मे सन्हिएबाक कोन प्रयोजन छल ? आब आइ दिन सँ दूनू कान ऐंठैत छी जे फेरि एहन फन्द मे नहि पड़व।
एहि प्रकारें चौधरीजी रहि-रहि कए बुमकार छोड़य लगलाह। जखन धोती कनेक सिमसिम जकाँ रहलैन्ह त वैह पहिरि मोदियाइन क दोकान मे जा एकटा चौकी पर बैसि दोसर ट्रेन क प्रतिक्षा करए लगलाह। बैसले-बैसल झक लागि गेलैन्ह।

जखन चौधरीजी क झक टूटि गेलैन्ह त देखैत छथि जे लालकका सीरम मे ठाढ़ भेल उठाय रहल छथि। चौधरीजी आवाक भेय हुनक मुँह ताकय लगलथिन्ह। लालकका बाजय लगलाह - आब औंघी छोडू। अही क खातिर हम कंटीर और पाहुन कैं सोनपुर छोड़ि, लगले ट्रेन सँ वापस आएल छी। लियऽ, पहिने धोती पहिरि लियऽ। कपड़ा सभ नेने ऐलहुँ अछि।

चौधरीजी चुपचाप धोती , गंजी, बलाबर्ज पहिरि ऊपर सँ दोहरि ओढ़ि लेलन्हि और लालकका क संग गाड़ीक खाली बेंच पर लम्बायमान भेलाह। दूहू गोटे सुतबाक उपक्रम करय लगलाह। परन्तु चिन्ता क द्वारे दूहू गोटा मे किनको आँखि मे निन्द नहि एलैन्ह। लालकका क मस्तिष्क मे पाग घुनस ; घर क इन्तिजाम , खर्चबर्च और स्त्रीगण क सहमति आदि नाना प्रकार क भावना उठय लगलैन्ह। बुचकुन चौधरी क मस्तिष्क मे एके प्रबल भावना ताण्डव नृत्य करए लगलैन्ह जे कोनो प्रकारें कन्यादान क कथा भङ्गठि जाइत तँ जी कैं संतोष होइत। परन्तु दुहू गोटे ब्याजनिद्रा मे पड़ल रहलाह।

सोनपुर क रिस्टौरैंट (उपहार-गृह) मे दू टा अङ्गरेजिया नवयुवक आमने-सामने कुर्सी पर बैसल छथि। बीच मे सफेद संगमर्मर क टेबुल धैल छैन्ह। ओहि पर चारू कात चारि टा

शीशा क फुलदानी मे रंग-विरंग क विलायती फूल सभ सजाएल राखल अछि। बीच मे तीन टा बेशकीमती शीशी मे क्रमशः टर्मरिक पाउडर (हरदि क चूर्ण) , मस्टर्ड क्विक (सरिसव क चटनी) और फाइन सॉफ्ट (खूब मेही बुकल नोन) राखल अछि।

थोड़बे काल मे होटल क खानसामा आबि कय हिनका दूहू गोटा कैं सलाम कय ठाढ़ भऽ गेल। ओहि मे एक गोटे ऑर्डर देलथिन्ह- 'दो कप चाय , दो परोठा, दो प्लेट भेजिटेबल करी (रसदार तरकारी), दो ठो चौप और चार ठो स्पंज रसगुल्ला। पाँच मिनट के अन्दर आधा सॅं अधिक टेबुल चिनियां प्याला और तश्तरी सॅं भरि गेल। अन्त मे खानसामा दू टा शीसा क ग्लास मे जल नेने आएल और टेबुल पर राखि देलक। दूहू गोटे निम्नलिखित गप्पशप्प करैत छुरी-काँटा और चम्मच लय भोजनरूपी महायुद्ध क हेतु प्रस्तुत भऽ गेलाह।

सि० सी० मिश्रा चाय क प्याला कैं हाथ मे लैय फुकैत-फुकैत बजलाह - आइ ऐम अफ्रेड यू आर प्रोसीडिंग ए बिट टू फास्ट। हैव यू पुट ऑल माइ कंडिशन्स बिफोर योर फादर ?

[अर्थात-आप जरा जल्दीबाजी कर रहे हैं। क्या आप अपने पिताजी को मेरी कुल शर्तें बतला दी है]

रेवतीरमण ठोर सॅं प्याला फराक कए बजलाह - नॉट येट। बट यू नीड नॉट बॉदर योरसेल्फ अबाउट देट। आइ शैल ट्राइ टू फुलफिल ऑल योर कंडिशन्स।

[अर्थात- एखन तक त सूचित नहि कैलिएन्हि अछि। किन्तु अहाँ एकर कोनो चिन्ता नहि राखू। अहाँ क सभ शर्त पूरा करबाक चेष्टा कैल जायत]

सी० सी० मिश्रा - नो , नो, आइ डू नोट वाण्ट टू रिमेन इन ए स्टेट ऑफ सस्पेन्स एनी लाँगर। आइ मस्ट हैव ए डेफिनिट येस ऑर नो फॉम योर फादर हियर बिफोर बी प्रोसीड फर्दर।

[अर्थात - नही , नही, मैं अब दुबिधा में पड़ा रहना नही चाहता। आपके पिता से हाँ या ना यहीं निश्चित हो जाय, तब आगे बढा जाय ।]

रे० र० - यू मस्ट रिलाइ अपील माइ वर्ड्स। आइ अंडरटेक टू सी देट यू आर सैटिस्फाइड इन ऑल रिस्पेक्ट्स।

[अर्थात - अहाँ कैं हमरा बात पर विश्वास रखबाक चाही। हम एकर जिम्मा लैत छी जे अहाँ सभ तरहें सन्तुष्ट भऽ जाएब ।]

मि० मिश्रा- आइ विलीव इन यू ऐण्ड दिस इज दि रीजन व्हाइ आइ हैव ऐकम्पनीड यू सो फार। यू नो माइ प्रिन्सिपुल्स क्वाइट वेल। आइ उड रादर रिमेन ए बैचलर देन बी टक्ड ऑन विथ ऐन इलमैच्ड कम्पैनियन इअन लाइफ।

[अर्थात -आप पर मुझे विश्वास है और इसीलिए इतनी दूर तक आपके साथ आया हूँ। आप मेरे सिद्धान्त अच्छी तरह जानते हैं। अनमेल विवाह करने अपेक्षा मैं कुँआरा रह जाना कहीं अधिक पसन्द करता हूँ।]

रे० र०-आइ नो दैट क्वाइट वेल। बट आई कैन गिव यू दी अश्योरेन्स दैट यू वोन्ट फाइन्ड एनी रीजन फार कम्प्लेन्ट।

[अर्थात-हम ई पूर्ण रूपें जनैत छी। किन्तु हम अहाँ कैं विश्वास दैत छी जे अहाँ कैं कोना बात क बिथुत नहि होमय पाओत।]

मि० मिश्रा चौप मे काँटा गड़बैत दृढतापूर्वक बाजय लगलाह-यू सी, आइ वान्ट ए लाइफलाँग कंपैनियन हू मस्ट बी एब्छ टु असिस्ट मी इन आॅल दि डिफरेन्ट बाॅक्स आॅफ लाइफ , हू मस्टबी एब्ल टु अंडरस्टैण्ड ऐण्ड रेसिप्रोकेट माइ आइडिआज ऐण्ड सेण्टिमेण्टस , हू मस्ट शेयर माइ इण्टरेस्ट, ऐम्बिशन्स, ऐण्ड ऐक्टिविटीज इन आॅल डिफरेण्ट स्फियर्स। आइ कैन नेवर टालरेट ऐन इगनोरेण्ट , सुपरस्टीशस बेबीब्राइड शट अप इन दि जनाना ऐण्ड अनफिट फार आॅल प्रैक्टिकल परपसेज। आइ मस्ट हैव ए फारवर्ड , अप-टू- डेट, वेल एकम्प्लिशड लेडी हू कैन नाट ओनली सैटिसफाइ माइ फीजिकल क्रेविंग्ज बट मीट मी आॅन ईक्वल टर्म्स आन दी इन्टलेक्चुअल, ऐसथेटिक ऐण्ड प्रैक्टिकल प्लेन्स आॅफ लाइफ।

[अर्थात-मैं रुपये का भूखा नहीं हूँ। मैं ऐसी जीवन-सङ्गिनी चाहता हूँ जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मेरी सहचरी हो सके, जो मेरे भावों और विचारों को समझ सके और उनका बदला दे सके, जो मेरी हरएक इच्छा, महत्वकांक्षा और कार्य में बराबर हाथ बटाती रहे। मैं मूर्खता और अन्ध-विश्वास में जकड़ी हुई ऐसी लड़की कभी नहीं बरदाश्त कर सकता जो पर्दे में बन्द रहे और जीवन में कोई भी महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित नहीं कर सके। मुझे ऐसी उन्नत विचार वाली सुशिक्षिता और सर्वगुण-सम्पन्ना गृहिणी चाहिए जो केवल मुझे शारिरिक सुख ही प्रदान कर न रह जाय, वरन जो विद्या-बुद्धि की बातों मे, भले बुरे की पहचान में और व्यवहारिक विषयों में भी हर तरह से मेरे बराबर होकर मेरा साथ देती रहे ।]

रेवतीरमण चम्मच द्वारा तरकारी क झोर मुँह मे दैत बजलाह - योर फर्स्ट कंडिशन इज अबाउट फीजिकल अपीयरेन्स। फॉर दिस आइ कैन वाउचसेफ देट यू विल फाइण्ड स्पॉटलेस ब्यूटी इन दी गर्ल।

[अर्थात - अहाँ क प्रथम शर्त अछि शारीरिक रूप। एहि सम्बन्ध मे हम कहि सकैत छी जे बालिका मे दिव्य रूप भेटत ।]

मि० मिश्रा - वेल , आइ डोन्ट ले मच एम्फॅसिस ऑन दिस पाइन्ट। हाउएवर , दिस इज नॉट टोटली नेगलीजिबल ऐज़ वेल , बट हाउ केन आइ फॉर्म एनी आइडिया ऑफ हर व्हेन आइ हैव नॉट सीन ईवन ए सिंगल फोटो ऑफ हर्स ?

[अर्थात शारिरिक सौन्दर्य पर मै उतना जोर नही देता पर साथ ही उसकी उपेक्षा भी नही कर सकता। परन्तु मैने लड़की का एक फोटो तक भी नही देखा है। उसके विषय में कोई राय कैसे कायम कर सकता हूँ।]

रे० र० - आइ हैव ऑलरेडी टोल्ड यू देट सी पजेसेज दि फेयरेस्ट कम्प्लेक्शन इन माइ विलेज ।

[अर्थात - हम त पुर्वहि अहाँ सॅं कहि चुकल छी जे गाँव भरि मे ओ सभ सॅं गौराङ्गी अछि।]

मि० मिश्रा - येस। बट आइ अटैच मोर इंपॉरटेन्ट टु दि हारमनी ऑफ फीचर्स।

[अर्थात - हाँ , लेकिन खाली रंग से क्या होता जाता है ! शरीर का काट अङ्ग-प्रत्यङ्ग सुडौल रहना चाहिए।]

रे० र० - नाउ यु आर गोइंग टु सी हर विथ योर ऑन आईज।

[अर्थात - आब त अहाँ स्वयं अपना आँखि सॅं देखबाक हेतु चलिए रहल छी।]

मि० मिश्रा - बट व्हाट आइ वैल्यू मच मोर दैन ब्यूटी इज पर्सनल ग्रेस ऐण्ड चार्म। दी सीक्रेट ऑफ अट्रैक्सन लाइज इन दि आर्ट ऑफ पोजिंग। यू हैव सीन दि बीबिचिंग पोजेज ऑफ दि फेमस सिनेमा स्टार लाइक देविका रानी।

[अर्थात - रूप से भी अधीक मैं लावण्य और लोच को समझता हूँ। आकर्षण की शक्ति तो भावभंगी मे भरी रहती है। सिनेमा की अभिनेत्री देविका रानी ऐसे नाज-नखरे दिखलाती है कि दिल पर जादू चल जाता है।]

र० रे० - मिस्टर मिश्रा, यू विल एक्सक्युज मी। दि ब्युटी ऑफ योर सिनेमा स्टार्स वैनिशेज इन ब्राण्ड डे लाइट व्हेन देयर पाउडर्ड चीक्स ऐण्ड पेंटेड लिप्स बिकम टू पलपेब्ली ऐपरेन्ट। यू वोन्ट फाइन्ड सच थिंग्स इन सिंम्पल अनसोफिस्टिकेटैड विलेज-गर्ल्स , हू शाइन इन दि नेवर्फेलिंग लस्चर ऑफ प्योर ऐण्ड एलिजेन्ट रूरल ब्यूटी।

[अर्थात - क्षमा करब। अहाँ क सिनेमा क अभिनेत्रीगण गाल मे पाउडर और ठोर मे गुलाबी रंग लगा कऽ चकमक-चकमक करैत छथि। जखन दिन क प्रकाश मे असली स्वरुप प्रकट

होइत छैन्ह तखन ओ आकर्षण कहाँ ? सरल निश्छल प्रकृति क ग्राम्य-बाला मे ई सभ बनावटी तड़क-भड़क नहि भेटत। ओकर विमल कान्ति त सदैव अपनहि चमकैत रहै छैक।]

मि० मिश्रा-आइ ऐम सॉरी। यू हैव टेकन ए वेरी अनकाइण्ड व्यू ऑफ स्क्रीन स्टार्स। यू मस्ट ऐडमिट दैट दै पजेस समथिंग मैग्नेटिक ह्विच अट्रैक्ट्स ऑल आईज टु देम। देयर फैसिनेटिंग लुक्स, टेंडर स्माइल्स, ग्रेसफुल मूवमेण्टस, ऐण्ड आर्टिस्टिक डान्सेज कमाण्ड ए मैजिकल इन्फ्लुएन्स ओवर दि स्पेक्टेटर्स।

[अर्थात-अफसोस! अभिनेत्रियों के सम्बन्ध में आपकी बहुत बुरी धारणा है। आपको यह मानना पड़ेगा कि उनमें चुम्बक की तरह कोई ऐसी आकर्षण शक्ति है जो बरबस सभी की आँखों को खींच लेती है। उनकी तिरछी चितवन , मीठी मुसकुराहट, लोचभरी चाल और कलापूर्ण नृत्य- ये सब मिलकर दर्शकों को मन्त्रमुग्ध कर डालते हैं।]

रे० र०- दीज थिंग्स आर फॉर दी मोस्ट पार्ट आर्टिफिशियल ऐण्ड कैन बी अचीव्ड बाइ ट्रेनिंग।

[अर्थात- ई सभ बात त अधिकतर कृत्रिमे रहै छैक। सिखौला उत्तर सभ कै अभ्यास वनि सकैत छैक।]

मिस्टर मिश्रा एक चम्मच मस्टर्ड (सरिसव) क चटनी तरकारी क प्लेट मे मिलबैत बजलाह-ऑलराइट। लेट अस नाउ कम टू दि नेक्स्ट पा ॅईण्ट। ह्वा ॅट अबाउट हर एजूकेशन?

[अर्थात -अच्छा। अब दूसरे विषय पर आइये। लड़की की शिक्षा के बारे में आपका क्या कहना हैं ?)

रेवतीरमण फूलदानी दिशि तकैत बजलाह-आइ हैब अश्योर्ड यू दैट यू विल फानण्ड हर एजकेटेड इन दि रियल सेन्स आ ॅफ दि टर्म, आलदो शी इज विदाउट एनी यूनिवर्सिटी डिग्री।

[अर्थात-हम त कहनहि छी जे बालिका मे बी०ए० , एम०ए० उपाधि त नहि कोनो भेटत , किन्तु यथार्थ शिक्षा जकरा कहक चाही से भेटि जायत।]

मि० मिश्रा-वेल, आइ ना ॅट इनसिस्ट आ ॅन ए डिप्लोमा , बट दि गर्ल शुड बी वेल वर्सड इन लिटरेचर ऐण्ड पा ॅलिटिक्स ऐण्ड मस्ट बी एन टूच बिथ दि करेण्ट अफेयर्स आफ वर्ल्ड।

अर्थात-नहीं, यह कोई जरूरी नहीं है कि लड़की बी०ए० , एम०ए० पास ही हो। लेकिन मैं चाहता हूँ कि वह साहित्य और राजनीति में खूब निपुण हो और संसार की वर्तमान प्रगतियों की पूरी-पूरी जानकारी रखती हो।

रे० र० - शी इज श्योर टु कैच यु स्पिरिट, इफ यु कैन इन्फ्लुएन्स हर एनफ।

[अर्थात - अहाँ क प्रभाव पड़ने ओ सभटा बात बुझि जाएत।]

मि० मिश्रा - हैज दि गर्ल एवर कण्ट्रीब्युटेड टु एनी मैगजीन ? प्रॅबेबल नॉट एट दिस स्टेज। बट सी मस्ट बी सबस्क्राइबिंग टु सम वीकलैइ पेपर्स एण्ड दि स्टैण्डर्ड मैगेजिन्स ऑफ हिन्दी ऐट लिस्ट।

[अर्थात - क्या उसने किसी पत्र मे कभी कोई लेख भी दिया है ? शायद अभी तक नहीं दिया होगा। मगर कम से कम हिन्दी के मुख्य-मुख्य साप्ताहिक और मासिक पत्र तो वह जरूर मॅंगाती होगी ?]

रे० र० - (किछु सोचि कय) वेल, शी रेगुलरली गेट्स दि 'मिथिला मिहिर' दि प्रिमियर वीकली ऑफ अवर प्रॉविन्स।

[अर्थात - हँ, हमरा घर मे मिथिला प्रान्त कऽ सर्वश्रेष्ठ साप्ताहिक पत्र 'मिथिला मिहिर' नियमित रुप सॅं अबैछ।]

मि० मिश्रा - मि० झा, यू आर अवेयर ऑफ माइ पोलिटिकल टेंडेन्सीज। आइ सीक ए सोल ह्विच कैन अवेकन एण्ड इण्टेनसिफाइ दि पोएटिक एलीमेण्ट इन सी, ह्विच कैन ट्रान्सपोर्ट मी टु दि रीजन ऑफ दि म्युजेज, फार अवे फ्राम दि बिजी क्राउडेड वर्ल्ड, ऐण्ड फिल माइ हार्ट विथ रैपचरस डिलाइट। व्हाट एन इन एस्टीमेवल मिजरी इट उड मीन फोर मी , इफ माइ हार्ट वेयर टु वी टाइड डाउन टु वन हू इज ऑफ ए ड्राइ, प्रोसेइक टाइप।

[अर्थात - झाजी आपको ज्ञात ही है कि कविता कि ओर मेरा कैसा झुकाव है। मैं एक ऎसी आत्मा कि खोज मे हुँ जो मेरी कवित्व शक्ति को और भी जागृति और विकसित कर सके, जो दुनिया के झमेलों से बहुत दूर, स्वर्ग के नन्दन कानन मे मुझे ले जाकर वहाँ मेरी हृतन्त्री के तारों को झंकृत कर सके। उफ्! ईश्वर न करे यदि मैं किसी शुष्क नीरस आत्मा साथ बाँध दिया जाउँ; तो उस कष्ट की कल्पना भी नही कर सकता।]

रे० र० - (मनहि मन) दि जेन्टिलमैन इज फ्लोटिंग इन ए ड्रीमलैण्ड ऑफ इमैजिनेशन। इट विल टेक टाइम टु ब्रिंग हिम डाउन टु दि अर्थ।

[अर्थात - ई महानुभाव एखन उअपरहिं उपर उड़ि रहल छथि। भूमि पर पैर ठेकबा में एखन बहुत विलम्ब छैन्ह।]

मि० मिश्रा-यू आर आलसो फैमीलियर विथ माई इण्टेन्स लब फार म्यूजिक। आइ कान्ट लिव विदाउट इट। आइ वान्ट ए वाइफ-फ्रेण्ड हू शुड पजेस दि कैपेसिटी टु लल मी टू ए जेण्टिल स्लीप बाइ दि स्वीट वाइब्रेशन्स आॅफ हर मेलोडियस सॉंग्स ,ह्वेन आइ एम टू मच लेडन

विथ दि केयर्स ऐण्ड एँग्जाइटीज आ◌ॅफ डेली लाइफ। इट उड बी ए मोस्ट लमेण्टेबल ट्रैजेडी इण्डीड इफ आइ वेयर टु बी फासण्ड फा◌ॅर एवर टु ऐन अनम्यूजिकल सोल।

[अर्थात-मेरा संगीत-प्रेम भी आपको विदित ही है। इसके बिना मैं रह ही नहीं सकता। मैं भार्या रूप में एक ऐसी मित्र चाहता हूँ जिसकी मधुर संगीत लहरी के हिलकोरों में मैं उतरता रहूँ। जब दैनिक जीवन की चिन्ताओं के भार से बिल्कुल थका-माँदा होकर घर लौटूँ, तब वह मेरे श्रान्त मस्तिष्क को प्यार से अपने अञ्चल में◌ं लेकर संगीत की थपकियाँ दे-देकर अनन्त शान्ति और विश्राम की गोद में◌ं पहुँचा दे। उफ! यदि ऐसी सहचरी मुझे नहीं मिली तो मेरा जीवन कितना दुःखमय बन जाएगा। इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।]

रे० र०-(स्वगत) दि पुअर फेलो इज ओनली बिल्डिंग यूटोपिजाज। लेट हिम वन्स फेस दि स्टर्न रियालिटीज एण्ड ही विल बी सेट अराइट। (प्रकट) मिस्टर मिश्रा , यू हैव ना◌ॅट येट हर्ड दि फेमस साँग्स आ◌ॅफ विद्यापति इन तिरहुत। इफ यू वन्स हियर दि अपीलिग ट्यून्स फ्रा◌ॅम दि लिप्स आ◌ॅफ विमेन, यू विल बी इमेन्सली अफेक्टेड।

[अर्थात-(स्वगत) ई बेचारे एखन ख्यालीए पोलाव पका रहल छथि। एक बेरि ठेस लगतैन्ह तखन अपनहिं ठेकान पर पहुँचि जैताह। (प्रकट) मिश्रजी, अहाँ अद्यावधि हिरहुत मे विद्यापति क प्रसिद्ध गीत सभ नहि सुनल अछि। यदि एक बेरि जनीजात क मुँह सॅं समदाउनिक कारुणिक राग सुनि ली त अहाँ क आँखि मे नोर ढबढबा जाएत]

मि० मिश्रा-कैन दि गर्ल प्ले हारमोनियम इन ट्यून विथ गजल्स आ◌ॅफ आ◌ॅल सा◌ॅटस?

[अर्थात-क्या लड़की हरएक तर्ज की गजल पर हारमोनियम बजा लेती है?]

रे०र०-(बात अंठा कय) प्रा◌ॅबेबली यू आर रिमेम्बरिंग मिस बिजली बोस आ◌ॅफ हिन्दू यूनिवर्सिटी।

[अर्थात-प्रायः हिन्दू यूनिवर्सिटी क कुमारिल बिजली बोस अहाँ कैं मन पड़ि गेल अछि]

मि०मिश्रा- मिस्टर झा ,यू नो माइ नेचर फूली वेल। आइ लाइज ह्यूमरस डिसपोजिशन एण्ड ना◌ॅट ए मेलंकली मूड। इट उड बी मोस्ट डिफिकल्ट , ने इम्पा◌ॅसिबूल फा◌ॅर मी टू पुल आन विथ ए लाइफ-मेट हू इज ना◌ॅट इन्सपायर्ड विथ ए कीन सेन्स आ◌ॅफ ह्यूमर।

[अर्थात-झाजी, आप मेरी प्रकृति अच्छी तरह जानते हैं। मैं हँसमुख स्वभाव चाहता हूँ। मनहूस मिजाज को मैं जरा भी पसन्द नहीं करता। जो बात-बात में व्यङ्ग और चुलबुलाहट का पुट नहीं भर सकती है, उसके साथ मेरा निर्वाह होना अत्यन्त कटःइन, वल्कि असम्भव ही है।]

रे०र०-दि विमेन आॅफ अवर साइड आर नेचुरली गिफ्टेड विथ विट ऐण्ड ह्यूमर। दे विल सरप्राइज यू बाइ देयर प्रेजेन्स ऑफ माइण्ड। यू विल बी सिम्प्ली नाॅन-प्लस्ड इफ दे वन्स मेक यू दि बेद ऑफ देयर जोक्स।

[अर्थात-तिरहुत क स्त्रीगण स्वाभावहि स हास्य-विनोद क प्रिय होइत छथि। हुनका लोकनि क चातुर्य देखबैन्ह त चकित भऽ जाएब। जखन एक बेरि हुनका सभ क धुसान मे पड़ब त अक्क-बक्ककिछु नहि फुरत।]

मि० मिश्रा-यू ऑल्सो नो माइ ओरेटोरिकल कैपेसिटी। इट इज ऑफ कोर्स हार्ड टु एक्सपेक्ट एन इलोक्वेण्ट गर्ल स्पीकर हू कैन डिलिवर लेक्चर्स लाइक माइसेल्फ , नेवरदिलेस इट उट बी मोस्ट मिजरेबल फॉर मी ,इफ आइ एम फोर्सड टु रिमेन इन पेरेनियल कंपनी ऑफ वन हू इज टैसीटर्न इन स्पीच।

[अर्थात-आप मेरी वक्तृत्व से भी परिचित हैं। ऐसी लड़की मिलना तो मुश्किल है जो मेरी ही तरह धाराप्रवाह भाषण दे सके। लेकिन ये भी न होना चाहिये कि जो लड़की व्याख्यान कला से बिल्कुल कोरी हो उसी के साथ मेरा गठजोड़ा कर दिया जाय।]

रे०र०-यू नीड नाॅट बी अफ्रेड ऑफ दैट। दि विमेन ऑफ अवर साइद आर वेल-नोन फाॅर देयर टाॅकेटिव हैबिटस। गिव देम दि लीस्ट ऑपाचुनिटी ऐण्ड सी देयर इलोक्वेन्स।

[अर्थात-एकरा हेतु अहाँ चिन्ता जुनि करी। हमरा दिस क स्त्रीगण गप्प मे नामी छथि। एक रत्ती अवसर दिऔन्ह तखन देखू जे वाचाशक्ति मे केहन फड़हड़ि होइ छथि।]

मि०मिश्रा-आइ उड लाइक टु असर्टेन दि पोलिटिकल क्रीड ऑफ योर सिस्टर।

[अर्थात- आपकी बहन का राजनीतिक सिद्धान्त क्या है, यह जरा मैं जान लेना चाहता हूँ।]

रे० र०-शी विल पर्सनली स्पीक हर व्यूज टु यू ह्वेन दि टाइम कम्स।

[अर्थात-समय ऐला पर ओ स्वयं अपन विचार अहाँ क समक्ष प्रकट करतीह।]

मि० मिश्रा-मोर ओवर, यू नो आइ हैव गाॅट माइ ओन हाॅबीज , फाॅर इन्सटेन्स, यू नो आइ ऐम दि मोस्ट रिनाउण्ड टेनिस प्लेयर इन माइ टीम , ह्वाॅट ए प्लेजर इट उड बी फॉर मी , इफ आइ कुड गेट ऐन इक्वली एक्सपर्ट गर्ल ऐज माइ लाइफ-कंपैनियन।

[अर्थात-मुझे किन बातों में आमोद-प्रमोद मिलता है यह भी आप जानते ही हैं। आपको मालूम है कि मैं अपनी टीम भर में टेनिस का सबसे अच्छा खिलाड़ी हूँ। यदि मेरी ही तरह

टेनिस में कमाल कर दिखलानेवाली संगिनी मुझे मिल जाती तो मेरी जीवन कितना आनन्दमय बन जाता!]

रे० र०- (स्वगत) दि पुअर मैन कैनोट डिसर्न दि डिफरेन्स विटविन दि एटमौसफेयर ऑफ गर्ल्स होस्टल ऑफ हिन्दु युनिवर्सिटी ऐण्ड दि एनविरौनमेन्ट ऑफ इल्लिटरेट हाउस-होल्ड्स इन विलेज-एरियाज।

[अर्थात - हिन्दु विश्वविद्यालय क बालिका-छात्रावास क वातावरण मे और निठट्ठ देहाती घर आङ्गन क बातावरण मे कत गोट भेद होइ छैक , तकर किछु टा अनुभव वेचारे कैं नहि छैन्ह ।]

मि० मिश्रा - मिस्टर झा , आइ डु नोट नो हाउ फार यू विल एग्री विथ मी , बट आइ एम ए वोटरी ऑफ सेल्फ-डिपेन्डेन्स। आइ उड हेट ए वुमन हू डिपेण्ड्स स्लेविशली अपोन हर हसवैण्ड ऐण्ड लैक्स दि करेज ऐण्ड सेल्फ कन्फिडेन्स टु अर्न हर ब्रेड बाइ दि स्वेट ऑफ हर ओन ब्रो।

[अर्थात - झाजी, मैं नहीं जानता कि इस विषय मे आप मुझसे कहाँ तक सहमत होंगे। किन्तु मैं तो स्वतन्त्रता का पुजारी हूँ। स्वावलम्बन का उपासक हूँ। जिस स्त्री मे साहस नहीं , आत्मविश्वास नहीं, अपने बाहुबल से अपना उदर-पोषण कर सकने की सामर्थ्य नहीं , जो पशु की तरह अपने स्वामी की दी हुई टुकड़ी पर बसर करना चाहती है वह गुलाम की तरह उसके अधीन रहना चाहती है, उससे मैं नितान्त घृणा करता हूँ]

रे० र० - इफ यू स्टडी दि रुरल लाइफ ऑफ अवर प्रोविंस , यू विल बी कनविन्स्ड दैट अवर वुमन-फोक पजेस सच हैण्डी क्रैफ्ट्स ऐण्ड कैन प्रोड्युस सच वर्क्स ऑफ आर्ट ऐज कैन इजिली प्रोक्योर देम रिच मिन्स ऑफ सवसिस्टेन्स।

[अर्थात - यदि अहाँ हमरा प्रान्त क ग्राम्य जीवन पर दृष्टिपात करब त अहाँ कैं देखना जाएत जे मिथिला क स्त्रीगण तरह-तरह क कारीगरी जनैत छथि और एहन-एहन वस्तु तैयार कऽ सकैत छथि जाहि सँ ओ बढ़ियाँ जकाँ स्वतन्त्र रहि अपन निर्वाह कय सकैत छथि।]

एतवहि मे होटल के खानसामा एक तस्तरी मे थोड़ेक इलाइची क दाना और एकटा कागज क टुकड़ा नेने पहुँचि गेलैन्ह और टेबुल पर राखि देलकैन्ह। मिश्रा ओहि मे सँ इलाइची क दाना उठौलन्हि और रेवती रमण कागज क टुकड़ा उठा कय देखय लगलाह।

आर्टिकल्स	रु० आ० पा०
१- पराठा-२	० - ८ - ०
२-वेजीटेबल करी-२	० - ८ - ०

३- चाँप्स - २	० - ८ - ०
४- स्पंज रसगुल्ला- ४	० - ८ - ०
५- टी - २	० - ४ - ०
टोटल -	**२ - ४ - ०**

रेवतीरमण उपर्युक्त 'बिल' क अनुसार सवा दू टाका तस्तरी मे राखि देलथिन्ह। खानसामा सलाम कय ओ उठौने चल गेल।

----

7. जटिल समस्या

भोलानाथ झा भोजन-छाजन क उपरान्त भाउजि कैं कहलन्हि- हमरा फेरि स्टेशन जाय पड़त। एहि ठाम क सभटा भार अही लोकनि क उपर रहल। ठकबा अछिए। जे किछु मँगाबक हो से मँगा लेब। झुनियाँमाय कैं बराबरि एत्तहि रहय कहबैक। देखब कोनो बात क विथुति नहि हो। बहुत पैघ लोक आबि रहल अछि।

पुनः बटुकजी कैं बजा कय कहलथिन्ह - देखू , हम स्टेसन जा रहल छी। पहर राति बितैत-बितैत फिरी से सम्भब। एहि ठाम क कुल इन्तिजाम अहींंक हाथ। दलान पर जे चटान अछि, ताहि पर बड़का सतरंजी ओछबा देबैक। और भोल बाबू क ओतय सँ जाजिम और मसनद मँगबा लेब। भाइ साहेब कऽ नेबाड़ बला पलंग जे छैन्ह से बाहर धरबा कऽ ओहि पाहुन क हेतु बिछाओन करबा देबैन्ह। और छोटकी चौकी एक गगड़ा जल , लोटा और खड़ाव रखबा देबैन्ह। की, सभटा बुझि गेलहुँ ने? बेश, त हम जाउ ने?

बटुकजी अपन फुर्ती देखबैत बजलाह-ई सभ त दू मिनट के काम है। अपने निफिकिर जाउ न।

भोलानाथ झा भनसा घर में जा भगवती कैं प्रणाम कय बिदा भेलाह।

जखन भोलानाथ झा स्टेशन क दोकान क समीप पहुँचलाह त देखै छथि जे लालकका गम्भीर चिन्ता मे निमग्न छथि। भोलानाथ दुहु गोटा क पैर छूबि कय प्रणाम कैलथिन्ह- भोला! चलह पहिने वर कैं देखि लैह, तखन कोनो गप्प होएत।

वस्तु जात क चार्ज बुचकुन चौधरी कैं दय लालकका भोलानाथ क संग स्टेशन दिशि बिदा भेलाह। बाट मे कहलथिन्ह-तोरा सँ किछु गप्प करबाक छल तैं टरि कय चलि ऐलहुँ अछि। बूझि पड़ैछ जे एतेक कैला उत्तर आब सभ गुड़ गोबर भऽ जाएत।

भोलानाथ झा सशंकित भय बजलाह-से कियैक भाइजी ? हमरा सभ क दिस सँ तँ कोनो भाङठ ने?

लाल०-वरहि क दिशि सँ भाङठ। हमरा पहिने नहि बूझि पड़ल जे ई एहन भारी बिसखोपड़ा छथि। यदि कनेको एहि बात क आभास बुझना जाइत त हिनका फराकहि सँ नमस्कार करितिऐन्ह। कंटीर क नेनमति मे पड़ी हमहूँ अगुता गेलहुँ। बेश , जा पहिने कंटीर कैं बजौने आबह, तखन एकर विचार कैल जाय।

एतबहि मे कंटीर कैं अबैत देखि लालकका पुछलथिन्ह-की हौ! की हाल ? कनेको ट्गलथुन्ह कि नहि?

रेवतीरमण माथ झुलाए संकेत करैत कहलथिन्ह-आह , 'डिगहि न शम्भु शरासन कैसे। ' ओ त कहैत छथि जे यदि हमरा बात में अहाँ लोकनि कैं आपत्ति बुझना जाय , त हम दोसरा ट्रेन सँ वापस चल जाइ।

लालकका कहलथिन्ह-आब की कैल जाए ? एहन कठिन समस्या आबि गेल अछि जे किछु फुरितहि ने अछि।

भोलानाथ नम्रतापूर्वक पुछलथिन्ह-भाइजी, बात की थिकैक? कनेक हमहुँ बुझितिऐक तँ।

रेवतीरमण कहए लगलन्हि-बात ई छैक जे हिनका मैथिल रीति-नीति और सामाजिक व्यवहार क ककहरो टा नहि बुझल छैन्ह। जन्महिं सँ बाहर रहलाह। नेने मे माय मरि गेलथिन्ह। बाप डिपुटी-मैजिस्ट्रेट छलथिन्ह। पेंशन लए काशी बास करय लगलथिन्ह। प्रारम्भहि मे हिनक नाम हिन्दू यूनिवर्सिटी मे लिखाय देलथिन्ह। हिनक सभटा आचार- विचार , संस्कार ओही ठाम क भऽ गेलैन्ह। पिता क देहान्त भेला उत्तर ई पुनः घरक मुँहो नहिं देखलन्हि। घर पर छैन्हे के? जेठ बहिन छथिन्ह से सासुर बसैत छथिन्ह। पट्टीदार लोकनि चाहैत छथिन्ह जे भने एक समाङ बाहरे रहय जाहि सँ सोरहन्नी 'निश्चिन्तं परमं सुखम्' करी ई रहि ऐलाह बनारस मे , देहाती हवा लगबाक कहियो मौके नहि भेटलैन्ह। गाँव-घर में जनीजात कोन रूपें रहैत छैक से बुझथुन्ह कोना? संसर्ग त भेलैन्ह मिस बटर्जी सँ , मिस बनर्जी सँ। ओ सभ रङ्ग-विरङ्ग क फैशन मे रहैत अछि, धुड़झाड़ अँग्रेजी में लेक्चर दैत अछि , हारमोनियम पर गाना गबैत अछि , पत्र मे लेख लिखैत अछि , मैदान मे टेनिस खेलाइत अछि , साइकिल पर चढि घूमय जाइत अछि। आइ-काल्हि अधिकांश नवयुवक एही तरह क 'अपटूडेट लेडी' चाहैत छथि। हिनके होस्टल क एकटा बी०मिश्रा बंगाली एम०ए० मे पढैत अछि। ओहि क्लास मे एक टा बीस वर्ष क सुन्दरी बंगालिन युवतीओ पढैत छलि। दूहूँ मे प्रेम भय गेलैक। आब दुनू स्वेच्छापूर्वक विवाह कय एक खास कमरा लऽ कऽ मित्र जकाँ संगहि पढैत अछि। भोरे नौकर चाह- पानि तैयार कैने रहैत छैक। दुहुँ गोटे स्नानागार सँ निपटि मेस मे भोजन कय दस बजे कालेज जाइत अछि । पुनः क्लास खतम भेला पर दूहू बोर्डिंग मे अबैत अछि । मेस क बाबाजी जलपान बनौने रहैत छैक । दूहू नाश्ता-पानी कय अपन-अपन साइकिल पर घूमऽ हेतु निकलि जाइत अछि । यद्यपि दूनू गोटा मे अत्यन्त घनिष्टता छैक तथापि एक दोसरा सँ बढि जैबाक हेतु कम्पिटिशन (प्रतियोगिता) कय रहल अछि । आब देखा चाही परीक्षा मे के फर्स्ट होइत अछि । अस्तु ! ई दृश्य देखि सभ छत्र कैं सिहन्ता होइत छैन्ह जे हमरो जीवन एही प्रकारें बितैत । इहो एही श्रेणी मे छथि । चाहैत छथि जे ओहने कन्या भेटए ।

लालकका किछु विरक्त स्वरें बजलाह - त ई सभ पहिनहि बजैत की भेल छलौह ? भरि ठेहुन प्रशंसा ढकैत छलाह जे अलान छथि त फलान छथि । हम ई सभ बखेड़ा की जानय गेलहुँ ?

बाहर सँ देखला उत्तर त परम सात्विक जकाँ बुझना गेलाह। हम कोना कऽ बूझू जे ई भीतर सँ एहन भारी कटाह छथि। परन्तु तोरा त बुझल छलौह। तखन पटने मे कहैत की भेलौह ? आब त तोरा बात मे पड़ि हमहुँ बूड़ि बनलहुँ।

भोलानाथ शान्त करैत कहलथिन्ह - आब 'गतस्य शोचनं नास्ति'। जे भऽ गेलैक से त भइए गेलैक। हँ तत्काल मे वर क की अभिप्राय छैन्ह ?

रेवतीरमण किछु अप्रतिभ जकाँ भय कहलथिन्ह - सभ सँ पहिने कहैत छथि जे विवाह सँ पूर्व कन्या कैं देखि लेब तखन .....

ई सुनितहि लालकका क क्रोधाग्नि पुनः भभकि उठल। बजलाह - हँ, बड़ काविल क नाति ने छथि जे पहिनहि कन्या कैं देखि लेताह। ई होयब त त्रिकालहुँ मे असम्भव छैन्ह। पहिने अपन मूँह ने जा कऽ ऐना मे देखथु गऽ जे हमर कन्या क तरबोक परितरि कय सकैत छैन्ह !

रेवतीरमण कहलथिन्ह - पहिने त फोटो क हेतु बहुत जिद कैने छलाह। परन्तु पाछाँ किछु सोचि कय कहलथिन्ह जे 'नहीं आजकल लड़की के गार्जियन फोट खिचाने मे बड़ी धूर्तता से काम लेते है। अगर लड़की साँवली रही तो फोटो मे सफेद रंग करबा देते हैं , चेचक का दाग रहा तो ब्रश से साफ करबा देते हैं, बाल छोटा रहा तो नकली वाल डेढ़ गज का लटका देते है। इसलिए मैं बिना अपनी नजर से भली-भाँति देखे हुए किसी लड़की से सादी नहीं कर सकता।' तखन हम कहलिएन्ह जे वेश , चलू, अहाँ अपन सन्देह निवारण कए लेब। यदि एतेक आग्रह छैन्ह त .....फराक सँ कनेक देखिए लेथिन्ह त हर्ज की ? की यौ ककाजी ?

भोलानाथ - नहि हर्ज की ? हमर कन्या कोनो लुल्हि-नाङ्गड़ि त अछिए नहि जे नापसन्द पड़तैन्ह।

लालकका किछु खिसिया कऽ बजलाह - हूँ , हमरा लोकनिक जतेक पुरखा छलाह से सभ प्रचण्ड बूड़ि छलाह और केवल आइ-काल्हि कऽ अङ्गरेजिया बुधियार। कहू त भला ? हमरो लोकनिक विवाह-द्विरागमन भेल , धिया-पुता भेल, सभ परियोग भऽ गेल , परन्तु एहन लष्टम-खष्टम कहियो पसारलहुँ ? भला हमरा लोकनि कुल-मर्यादा यैह थिक जे अपन कन्या कैं सभ क आगाँ नचा दी ? की हौ भोला ?

भोला० - नहि, कथमपि नहि। हमरा लोकनिक देशाचार, कुल-व्यवहार जे थिक तकर कहियो उल्लंघन के सकैत छी ?

रेवती रमण किछु संकुचित भय बजलाह - ओ कहैत छलाह जे 'हम केवल दस-पाँच मिनट का 'इंटरभ्यू' चाहते है, जिससे उसके रहन-सहन और विचार का स्टैण्डर्ड मालूम हो जाय।'

भ्लानाथ पुछलथिन्ह - 'इंटरभ्यू कथी' ?

रे० र० - हुनक अभिष्ट छैन्ह जे समाजिक-राजनीतिक विषय पर बातचीत करी। किछु प्रश्न पूछि तकर उत्तर सुनए चाहैत छथि।

लालकका - कहू त बतहपन ! हिनका बताह बूझी की घताह ? पढ़ल-लिखल बूड़ि एकरे कहै छैक। अपनो माय-बहिन सँ जा कऽ एहिना राजनीतिक बहस करैत छथि कि एही ठाम आबि कय ई सभ सौख पूरा करताह ? ई सभ किछु ने भऽ सकैत छैन्ह। जा , स्पष्ट कहि दहुन गऽ। की हौ भोला ?

भोला० - हँ त और की ? आदि विरोध नीक, अन्त विरोध नहि नीक। पाँछा जा कऽ जे टंट-घंट करताह ताहि सँ त.......

रे० र० - कनेक हमरो विचार सुनि लेल जाइत। एखन ई गरमा-गरम मिजाज लय चलि रहल छथि। जखन देहात क हवा-पानि लगतैन्ह त अपने ठंडा जैताह। ई सभ गरम ख्याल दू-एक दिन धरि रहतैन्ह तकरा बाद अपनहि सेरा जैतैन्ह। तैं हमरा होइत अछि जे हिनका हड़काएब उचित नहि। ओतय पहुँचि जाथि त बूझल जेतैक। भेल विवाह मोर करबह की ? की औ ककाजी ?

भोला ० - हँ वेश त कहैत छी। जखन सामाजिक बन्धन मे पड़ि जेताह त अपने लीक धऽ कऽ चलय लगताह। एखन गदहपचीसी छैन्ह। द्विरागमन होइत-होइत ठेकान पर आबि जैताह।

लालकका - एहेन लोक सँ भय मानक चाही। पाछाँ क कतहु पड़ा-हड़ा जाथि , कन्या कैं छोड़ि देथि, त कोन उपाय ? भरि जन्म कन्या कैं हकन्न कानय पड़त की हौ भोला ?

भोला ० - ताहि मे कोन सन्देह ? कन्या क जीवन-मरण, सुख-दुख वर क अधीन रहैत छैक। तैं पूर्वहि पूर्ण रूपें विचार कय कथा क निश्चय करबाक चाही।

रे० र०-परन्तु हिनक स्वभाव त हमरा बुझत अछि। ई व्यक्ति बहुत सज्जन छथि। केवल चाहैत छथि जे स्त्रियों कैं अपनहि समान शिक्षित बनाबी। त ताहि मे हर्ज की ? जखन अपना ओहिठाम लय जैथिन्ह त अपन सुधारैत रहिहथिन्ह। की औ ककाजी।

भोला०-हँ-हाँ पाछाँ क अपन जेना इच्छा हैतैन्ह तेना सिखबैत-पढबैत रहिहथिन्ह। संग रखला उत्तर त जाहि पाट पर चढौथिन्ह ताही पर चढि जैतैन्ह।

लाल०-परन्तु पहिने जे टंट-घंट करक चाहैत छथि से कोना भऽ सकैत छैन्ह?

भोला०-नहि, से कोना होएतैन्ह?

रे०र०-और यदि हम फराके सँ चुपचाप कन्या क मुँह देखा दिऐन्ह त कोन क्षति?

भोला०-नहि, क्षति, कोन? जखन पाछाँ क वैह स्वामी होइथिन्ह तखन मुँह देखि नेने हर्ज की?

लाल०-परन्तु यदि पाछाँ क पसन्द नहि होइन्ह और फिरि कय चल जाथि तखन त हम लोक सँ गेलहुँ?

भोला०-हँ, ई बात विचारणीय अछि।

रे०रे०-किन्तु ओकरा ने की कोनो पय छैक ? एक बेरि देखि लेथिन तखन किन्नहुँ फिरि नहि सकैत छथि।

भोला०-हँ, से त ओ अपूर्व सुन्दरी अछि। हिनका कुलखूँट मे एहन केव होएबो नहि करतैन्ह।

लाल०-परन्तु ई कथा केव बूझए नहि पाबए। यदि एक कान से दोसर कान मे ई बात गेल , त गाँव भरि क लोक कुचेष्टा करय लागत।

भोला०-हँ तखन त बाट चलब कठिन भऽ जाएत। पीठ क पाछाँ सभ आँगुर देखाबए लागत।

रे० र०-ई बात केव बुझबे कोना करत ? हमरा तीन गोटा क अतिरिक्त और त केवो......। और हमरा लोकनि कतहु बजबे नहि करब। की औ ककाजी?

भोला०-हँ, हमरा लोकनि बजबे नहि करब त दोसर बुझत कोना?

लाल०-बेश। त तोरा लोकनिक जे सम्मति ह्ॉउ ताहि मे हम राजी छी। परन्तु पाछाँ कऽ हमरा अपयश जुनि देयबैत जैहऽ।

तदुपरान्त भोलानाथ झा भातिज क संग आबि जामाता कै देखय गेलाह। लालकका दोकान पर आवि बुचकुन चौधरि लग बैसि गेलाह।

---

8. गुप्त परामर्श

-काग की दोस?

-काग।

-फक्का मुट्ठी बारह। आब लाबह बारहटा अंडी।

-से त नहि होएतौह, हे सरौता! एतेक कन्ना नहि करह।

एतबहि मे ढुनमुनकाकी ओहि ठाम पहुँचि गेलीह और बुच्ची दाई कैं फुलमतिया क संग काग-दोस खेलाइत देखि कहय लगलथिन्ह देखू त भला ई अकड़हड़! आइ हिनकर वर चल अबैत छैन्ह और ई बैसि कय काग-दोस खेलाइत छथिन्ह।

ई शब्द लालकाकी कैं सुनना गेलैन्ह । बस तुरन्त युद्ध मचि गेल ।

- अयँ ऐ फुचुकरानी ! ओ अहाँ कैं फुटलो आँखिए नहि सोहाइत अछि जे सदिखन जे एना जड़ि लागल रहैत छिऐक ? ओकरा एखन खैबा-खलैबा क वयस नहि छैक त कि चिल्हकाउरि भऽ कऽ बैसबाइक वयस छैक ? अहाँक छाती किएक फटैए ?

ई सुनैत देरी ढुनमुनकाकी एक टुटल छितनी क पेनी हाथ मे लय पड़ापड़ अपन कपार पीटय लगलीह ।

ई लंकाकांड मचैत देखि बुचिया ओ फुलमतिया अंडी फेकि पड़ाइलि । फुलमतिया अपन आङ्गन पहुँचि बाजलि - सरौता , आइ भरि हमरा आङ्गन बैसि लैह । काल्हि सँ की फेरि हमरा देहरि पैर देबह ?

बुचिया - से की ? काल्हि सँ की भेलैए ?

एकरा उत्तर में फुलमतिया बुच्चीदाइ क कान मे किछु एहन बात बाजलि जे बुच्चीदाइ तमकि उठलीह और एक चाट अपना सरौता क गाल पर लगाय बाजि उठलीह-भग ! हमरा ने ई सभ नीक लगैत अछि। तोरा त एहिना रहैत छौह।

थोड़बहि काल में दूहू सरौता गोटी-गोटी खेलाय लगलीह। जखन बुच्चीदाइ अन्यमनस्कता क कारणेँ बहुत हुकय लगलीह तखन बजलीह-हे सरौता! आइ हिडुला पर नहि चढबह ?

फूलमती देवी एहि प्रस्ताव क हृदय सँ समर्थन करैत बजलीह-हँ-हँ , बेश त मन पाड़लह । चलह झूला झूलऽ गऽ ।

पछवरिया घर मे धरनि सँ पटुआ क रस्सी लटकाओल छलैक। ओहि पर एक चाकर पीढ़ी राखि दूहू सखी ठाढ़ि भऽ गेलीह और मचकी मारैत बारहमासा उठौलन्हि -

'आएल हे सखि सावन मास, मोहि तजि कन्त गेला परदेश, कि मैं ना जैहों। झुलनी तुम ले जा रे सनेस कि मैं ना जैहों।'

एतबहि मे पुरान रस्सी कड़कड़ा कऽ टूटल और दूहू सरौता कैं लेने-देने पीढ़ी भूमि पर जा खसल। बूच्चीदाइ कैं ठेहुन मे किछु विशेष चोट लगलैन्ह। फुलमतिया नवे चूड़ी पहिरने छलि, से सभटा फूटि गेलैक ताहि डरें ओ कानय लागलि। बुच्चीदाइ चुप्पहि उठि अपना बाड़ी मे एलीह और भालसरि क फूल लोढ़य लगलीह। जखन एक मुट्ठी फूल बीछल भऽ गेलैन्ह तखन अपना ऑंचर क खूट मे बान्हि आङ्गन ऐलीह।

बुच्चीदाइ कैं देखितहि लालकाकी टोकलथिन्ह - ऐं गै ! तों नित-दिन बहत्रा भेल जाइत छैं ? एतीकाल धरि कतऽ बौआइत छलैं ? तोरा कनेको लाज-धाक नहि छौक ? 'जब छौड़ी सुनलक सासुर क नाँव , बुलि आइली छौड़ी सौंसे गाँव। ' हमरा लोकनिक विवाह क चर्चा होय त लाज सँ ठामहि गड़ि जाइ। और आइ-काल्हि क कनेयां कैं त देखू ? मकुना-माधव जकाँ भेल जिला-जयवार सँ धाङ्गि आओत। हऽ हऽ।

ई सूनि बुच्चीदाइ चुपचाप भाउजिक लग जाए बैसलीह और खोंइछा महँक फूल लय माला गाँथए लगलीह।

- लालकाकी ! कहाँ गेलन लालकाकी ? तनी बाहर निकलके देखू त एगो एक्का खड़खड़ाइत चल अबइयऽ। आब त मकुनाही पुल के ऐ पार पहुँच गेल।

दरबाजा पर बटुकजी क ई ध्वनि सुनितहि लालकाकी , ढुनमुनकाकी, बड़कागामबवाली सभ धुरखुर पर आवि ठाढ़ि भऽ गेलीह।

एक्का शनैः शनैः दरबाजा पर आबि कय लागल। ओहि पर सँ लालकक्का और भोलानाथ उतरलाह। बटुकजी कपड़ा क मोटरी उतारए लगलैन्ह।

लालकक्का आङ्गन आबि पहिने भगवती कैं प्रणाम कैलन्हि। तदनन्तर मैंया क पैर छूबि आङ्गन मे खाट पर बैसि रहलाह। पुनः बटुकजी दिस ताकि कय बजलाह - तों मूँह की तकै छह ? जा, पुरोहित-नौआ कैं बजा आनह। और भोलानाथ कैं कहुन जे जा कऽ अपन्हि सँ सभ कैं हकार दऽ औथिन्ह। कंटीर और पाहुन कैं तिनगछिया पोखरि पर बैसा आएल छिऐन्ह। ओ लोकनि आध पहर राति बितैत पहुचै जैताह। ता सभ इन्तिजाम भऽ जैबाक चाही।

ई कहि लालकका मोटरी मे सँ लोटा बाहर कैलन्हि और कान पर जनउ चढ़बैत पोखरि दिशि विदा भेलाह।

लालकाकी हपसि कए मोटरी खोलय लगलीह। ढुनमुनकाकी नूर लऽ कऽ मड़बा नीप क हेतु चललीह। फुलमतिया स्त्रीगण क दिशि हँकार देब क हेतु विदा भेलि। बड़कागामवाली पान लगाबय लगलीह। बुचिया लाज क मारे कोनियाँ घर मे जा कऽ मुँह झाँपि कय पड़ि रहलि।

थोड़बहि काल मे ओसारा पर लाल, पीयर, और हरियर रंग क साड़ी चकमक करय लागल। और ई गीत कर्णभेदी नाद सँ प्रारम्भ भऽ गेल -

'आगे माइ हम नहि आजु रहब एहि ऑगन, जौं बुढ होयत जमाय।'

लालकका आङन ऐलाह त देखैत छथि जे पुरोहित महाराज पद्धति नेने मण्डप पर आबि उपस्थित भेल छथि और किछु भाव व्यक्त कर क चाहैत छथि , किन्तु गीत क आटोप मे हुनका दिशि केव कर्णपात नहि करैत अछि।

जखन गीत समाप्त भऽ गेलैक त पं० नमोनाथ झा सप्तम स्वर मे चिचिया कय बाजय लगलाह- एहिठाम क क क क कलश चाही, प प प प पल्लव चाही। ग ग ग ग गीतगाइन सभ कैं क क क क कहियौन्ह जे एखन ग ग ग ग गीत बन्द करतीह।

ऐतबहि में दोसर गीत बेश टहंकार सँ उठि गेल और पुरोहित जी क उक्ति अरण्यरोदन भय गेलैन्ह।

ई दशा देखि लालकका लग मे जा कहलथिन्ह- आब हम आबि गेलहुँ। अहाँ कैं जे किछु कहबाक हो से हमरा कहू। बटुक जी हजाम कैं बजाबक हेतु गेल अछि। आब अबितहि होएत।

पुरो०-म म म म मातृका पूजा अ अ अ अ आभ...

लाल०- हम कहि दैत छी, आभ्युदयिक .....

पुरो०- हाँ, ताहि मे क क की विलम्ब अछि?

लाल०- किछु नहि। दरवाजा पर पाहुन कैं आबय दिऔन्ह। ओम्हर आज्ञा क पान-धूप जैतैन्ह। एम्हर मातृका पूजा प्रारम्भ भऽ जाएत।

ता नौआ ठाकुर कैं नेने बटुकजी पहुँचि गेलाह और पुरोहितजी क फरमाइश क अनुसार सामग्री सभ जुमाबय लगलाह। गाँव मे दुगोला छलैक। अतएव भोलानाथ अपना गच्छ मे

हँकार दय फिरि ऐलाह और आङ्गन मे ठकबाक पीठ पर ठाढ भय ओकरा सँ काज लेबय लगलाह।

थोड़ेक काल क उपरान्त धिया-पुता गरोहि बान्हि दरबाजा दिशि छूटल। बटुकजी बाहर झाँकि बाजल-'मेहमान त दूरा पर पहुँच गेलन। ई सुनि लालकका भोलानाथ कैं एकान्त मे लऽ जा कहलथिन्ह-'देखह, पाहुन किछु दोसर प्रकृति क छथुन्ह। एखन थाकल-ठेहियाल मे केओ दिक नहि करय पबैन्ह। हुनका चुपचाप आराम करय लेल छोड़ि दहुन्ह। भोलानाथ झा ठकबा कैं संग लय पाहुन क आगत-स्वागत मे बिदा भेलाह।

एम्हर लालकाकी पुतहु क लग जाय कहलथिन्ह- 'ऐ कनेंया! विधिकरी अहीं होएबैक। अपन सभ किछु सँभरि लियऽ। हम भनसाघर जाइत छी। बड़कागामवाली किछु बाजहि लेल छलीह कि एतबहि मे रेवतीरमण क आहटि बूझि पड़लैन्ह।

पति क जूता क शब्द सुनि बड़कागामबाली जानि बूझि कय अपन केश क फुलदार चोटी कनेक उघारि लेलेन्हि और पति क नजरि पड़ला उत्तर पुनः लज्जा क भाव देखबैत माथ झाँपि लेलन्हि। तदुपरान्त एक कटाक्ष वाण चलाय मुसकुराइत अपना घर ने आबि कुर्सी पर बैसि गेलीह। रेवतीरमण माय-पितिआइन और पितामही कैं प्रणाम कय अपना घर मे ऐलाह। कोट उतारि खूँटी पर टँगैत बजलाह-ऐ हुजूर! आपसे एक जरूरी काम है।

बड़कागामबाली भृकुटी चढा कय कहलथिन्ह-मैं बिना पेशगी फिस लिये किसी का काम नहीं करती।

रेवतीरमण-'अच्छा, पहले नजराना तो ले लीजिए। 'ई कहैत पत्नी क कोमल अधरदल क मध्य मुँह में पान राखि देलथिन्ह। ई देखि रसिका पत्नी कृत्रिम क्रोध प्रदर्शन करैत बजलीह- 'ऐसा नजराना मैं नही चाहती। अभी अपना वापस ले लीजिए। ई कहैत अपना मुँह क पान उगीलि स्वामी क मुँह मे राखि बाहर होमय लगलीह।

रेवतीरमण-पत्नी कैं बहरैबाक उपक्रम करैत देखि हाथ पकड़ि लेलथिन्ह और जबर्दस्ती कुर्सी पर बैसा देलथिन्ह। पत्नी हाथ छोड़ैबा क अभिनय करैत कहलथिन्ह- आबजाय दियऽ। काज क आङ्गन छैक। लोक सभ की कहत?

रेवतीरमण अपनहुँ ओही कुर्सी पर बैसी बजलाह-देखू , हम एकटा जंगली पक्षी कै बझा कय अनने छी। ओकरा सिखा-पढा कय गमैया बनाउ, नहि त ओ फुड़ दऽ उड़ि जायत। ई अहीं बुते पार लागि सकैत अछि।

एकरा बाद थोड़ेक काल धरि पति-पत्नी मे गुप्त परामर्श भेल। दूहूक राय मिलि गेला पर बड़कागामवाली हँसैत बाहर ऐलीह और रेवतीरमण्पान क डब्बा लय प्रसन्न होइत दालान पर गेलाह।

---

9. कौतुक

मिस्टर सी० सी० मिश्रा पड़ल-पड़ल भावी पत्नी क रंग-विरंगी काल्पनिक चित्र खिचबा मे तन्मय भेल छलाह। एहि बीच मे रेवतीरमण पहुँचि कहल्थिन्ह - आपकी खातिर अन्दर से पान आया है, इसे ग्रहण कीजिए और जो सर्वेन्ट (नौकर) इसे लाया है , उसके लिए इसमे जो रिवार्ड (बखशीश) देना हो डाल दीजिए।

मि० मिश्रा कैं असमञ्जस मे पड़ल देखि रेवतीरमण कहलथिन्ह - देखिए , विलो स्टैण्डर्ड (निम्न स्तर) का कोई काम मत कर बैठिएगा नही तो यू विल कट ए सॉरी फिगर अमॉङ्ग दि लेडिज (भद्र महिला-समाज में उपहासास्पद बनिएगा)। पाँच रुपए से कम रखना एटीकेट (कायदा) के खिलाफ है।

मि० मिश्रा एक नोट बाहर कए ओहि डब्बा मे राखि देलथिन्ह। एतबहि मे सहसा आङ्गन सँ परिछनि क श्रोत उठल और मन्द गति सँ दालान दिस बढ़य लागल -

'आजु शोभा जनक-मन्दिर चलहुँ देखन जाहु रे।'

मि० मिश्रा अकचका कय पुछलथिन्ह - वेल , ह्वाट इज दि मैटर ? आ हियर ए कोरस नियरवाइ। (मामला क्या है ? कोरस सुनने में आ रहा है।)

रेवतीरमण कहलथिन्ह - हाँ , आपही को वेलकम (स्वागत) करने के लिए महिलाओं का प्रोसेशन (जुनूस) निकला है। वे लोग रिसेप्सन-साङ्ग (स्वागत-गान) गाती हुई आपको लेने के लिए आ रही है। यू मस्ट प्रुव योरसेल्फ़ बर्दी ऑफ दि ऑकेजन ऍण्ड ऑब्जर्ब ऑल दि रिचुअल्स ऍण्ड सेरिमनिज विथ राइट कर्टसी (आपको चाहिए कि अवसरानुकुल विधियों का पालन शिष्टतापूर्वक करते जायें) दिस इज माइ फ्रेण्डली ऍडवाइअस (मैं मित्र की हैसियत से आपको यह सलाह दे रह हूँ।

मि० मिश्रा - बट आइ एम सॉरी , आइ डू नॉट नो दि फॉरमैलिटीज (लेकिन अफसोच है कि मुझे विधियों का कुछ हाल मालूम नहीं)।

रे० र० - नेवर माइण्ड , योर फ्युचर ब्राइड विल गाइड यू औल अलौङ्ग (कुछ चिन्ता नही , आपकी भावी पत्नी आपको बराबर सब कुछ बतलाती रहेगी)।

ई अप्रत्याशित शब्द सुनि मिश्रजी क आश्चर्य क ठेकान नहि रहलैन्ह। विस्फारित नेत्र सँ उत्सुक्तापूर्वक पुछलथिन्ह - कैन योर सिस्टर फ्रीली टॉक विथ मी बिफोर मैरेज ? (क्या आपकी बहन विवाह से पूर्व मेरे साथ निःसंकोच होकर बातचीत कर सकती है ?)

रेवतीरमण ईषत हास्ययुक्त स्वर सँ कहलथिन्ह - वेल , शी इज मोर फास्टीडियस इन हर च्वाएस दैन योरसेल्फ (वह तो आप से भी कैइ गुनी बढ़ी-चढ़ी है) आप तो फ्यूचर वाइफ (भावी पत्नी) से सिर्फ इण्टरभ्यू (भेंट) भर चाहते हैं और वह अपने फ्यूचर हसबैण्ड (भावी पति) को पहले ही हर एक पहलू से अच्छी तरह एक्जामिन कर लेना चाहती है। तब जाकर अपना कन्सेण्ट (स्वीकृति) दे सकेगी। अच्छा, तो अब आप तैयार हो जाइए।

रेवतीरमण पाग और डोपटा लय मि० मिश्रा क आगाँ बढ़ाय देलथिन्ह और कहलथिन्ह - आपको इस वक्त यह नेशनल हैट (स्वदेशी टोप) पहन लेना चाहिए और यह चादर गले मे डाल लेना चाहिए वाइफ (वधू) आपको रिसीव करने के लिए आ रही है।

ई कहि रेवतीरमण एक परम सुन्दरी युवती क दिशि संकेत कैलथिन्ह। मिश्रजी देखलन्हि जे अठारह-उन्नैस वर्ष क एक लावण्यमयी युवती हाथ मे पुष्पमाला नेने जुलूस क आगा विद्यमान छथि और मन्द-मन्द मुस्कुराइत क्रमशः बढ़ि रहल छथि। हुनक रूप-यौवन क आभा छनि-छनि कय गुलाबी साड़ी क तर सँ बहरा रहल अछि। हुनक समुन्नत अञ्चल रेखावली देखि मिश्रजी क छाती पर साँप लोटय लगलैन्ह। ओ निर्निमेष दृष्टि सँ ओहि दिशि ताकय लगलाह, किन्तु ओहि युवती क चंचल कटाक्ष अपना ऊपर पड़ैत देखि आखि झँपि गेलैन्हि।

एतबहि मे ललनागण क समुदाय समीपतर पहुँचि गेल। मि० मिश्रा धड़कैत हृदय सँ ओहि दिशि चललाह। मन मे सोचैत छलाह जे भावी पति कैं अपना सम्मुख देखि ओ युवती देखि ओ युवती अवश्य किछु संकुचित भऽ जैतीह। किन्तु हुनक ई अनुमान सर्वथा भ्रमपूर्ण सिद्ध भेलैन्ह। जैखन मिश्रजी ओहि चंचल युवती क समक्ष पहुँचलाह कि ओ बिजली जकाँ चमकि फूल क माला हिनका गर मे पहिरा देलथिन्ह। मिश्रजी क सर्वाङ्ग शरीर रोमांचित भऽ उठलैन्ह। ओ चित्रवत स्तब्ध रहि गेलाह।

पुनः ओ नवयुवती अपन मृदुल स्पर्श सँ हिनका पुलकित करैत हाथ पकड़ि लेलथिन्ह और कहलथिन्ह - आपकी आँखें झिप क्यों रही है ? कहीं आ तो नहीं गैई है ? अच्छा, ठहरिए मैं इनमे काजल लगा देती हूँ। और मालूम होता है कि आपका दिमाग भी इस वक्त ठंडा नहीं है। अगर मैं चन्दन का लेप लगा दूँ तो कुछ हर्ज तो नहीं है ?

ई कहि बिना उत्तर क प्रतिक्षा कैनहि युवती चानन-काजर कय देलथिन्ह। मिश्रजी एहि क्रिया क विरोध नहि कय सकलाह।

एतबहि मे दुलारमनि पिउसी आँगा बढ़ि उद्दात्त स्वरें पुछलथिन्ह -

'कतै अवस्थित की मूलग्राम ?

के छथि बाप-माय की थिक नाम ?
एकर भाव बूझि मिश्रजी बजलाह - हमर नाम छय सी० सी० मिश्रा।

एहि पर सौंसे आङ्गन अट्टहास सँ गूँजि उठल। दुलारमनि पिउसी बजलीह - 'मर्र ई कोन देश क भाखा बजै छथि ? मोगल क बेटा त ने छथि ?'

एकटा प्रौढा चिबुकाग्र पर अनामिका राखि आश्चर्य क भाव प्रदर्शित करैत बजलीह - 'गे दाइ गे दाइ ! कोन माय-बाप एहन नाम बिछलकैन्हि ?'

दोसर तरुणी छुबि कय बजलीह - 'सीसी मिसर ? तखन त बोतल मिसर हिनक बापे होइथिन्ह ! ' एहि पर पुनः ठहाका पड़ल। मिस्टर मिश्र अप्रतिभ भऽ

अपना नाम क व्याख्या करय लगलाह - 'हमर पूरा नाम छय चण्डी चरण मिश्रा।'

एहि पर पुनः हास्य-ध्वनि गुंजायमान भेल। ई देखि ओ युवती हिनका चलबाक हेतु संकेत कैलथिन्ह। मिस्टर सी० सी० मिश्रा कैं धरफराइत चलबाक हेतु अग्रसर

होइत देखि युवती कोकिल-विनिन्दक मधुर स्वर सँ बजलीह - क्षमा कीजिए , आपको साधारण शिष्टाचार का भी ज्ञान नहीं है। इतनी बड़ी-बुढी स्त्रियों के बीच में

बेधरक बढे जा रहे हैं। मालूम होता है, मुझे आपके गले मे फन्दा डालकर ले चलना पड़ेगा।

ई कहि हिनका गर मे डोपटा लपेटि हाथ सँ धैने बिदा भेलीह। मिश्रजी कैं सभटा सिट्टी-पिट्टी गुम भऽ गेलैन्ह। ओ चुपचाप पाछाँ-पाछाँ चलय लगलाह।

गीतगाइन लोकनि परिछनि क गीत गबैत मिश्रजी कैं चारु कात सँ घेरने शनैः-शनैः आङ्गन दिशि अग्रसर भेलाह।

गीत क तुमुल निनाद मे मिश्रजी क कर्ण-कुहर कैं अपना मधुर स्वर सँ आप्लावित करैत ओ युवती नहूँ-नहूँ कहय लगल्थिन्ह - माफ कीजिएगा।

कई शताब्दियों से स्वार्थी पुरुष लोग बेचारी अबलाओं को नाक पकड़कर नचाते आ रहे है। इसका बदला मैं आपसे लूँगी। मेरा संकल्प है कि जो पुरुष

विवाह करने आवेगा उसको पहले नाक पकड़कर चलाऊँगी , तब पीछे कोई बात करुंगी। आशा है, आपको कोई आपत्ति न होगी।

ई कहि युवती प्रौढतापूर्वक एक चाकर पान हाथ मे लय मि० सी० सी० मिश्रा क नाक पकड़ हुनक घुमाबय लगलथिन्ह।

मिश्रजी अवाक् भऽ सोचय लगलाह-वाह! यह तो खूब रहा! मैं बीसवीं सदी का हसबैण्ड (पति) होकर आया तो यहाँ बाईसवीं सदी की वाइफ (पत्नी) सिर पर सवार है।

मैं समझता था कि दो शताब्दी मुझसें पीछे पड़ी होगी , सो दो शताब्दी और आगे ही निकली। अब लेने के देने पड़ गये। मैं आया इस लड़की का इम्तहान लॆने और यह शोख

उल्टे मुझी को नाक पकड़कर नचाने लगी! अच्छा तमाशा है। मैं यहाँ आकर बुरा फँसा!

एतबहि में ओ मुखरा युवती बाजि उठलीह-दुःख की बात है कि आप में कंजूसी भी है। मेरी दाई कब से खड़ी आपकी यात्रा का शकुन बना रही है और आप उसकी

ओर ध्यान तक भी नहीं देते ? क्या मेरा नाम हँसाते हैं ? अगर आपके पास कुछ नहीं हो तो मुझसे रुपया ले लीजिए।

मिश्रजी लज्जित भय मनीबैग सॅ एकटा रुपया बाहर कैलन्हि और झुनियामाय क भरल कलश मे राखि देलथिन्ह। झुनिया माय नचैत-कछैत चलि गेलि।

ई अवसर देखि ढुनमुनकाकी दूहू हाथे ठक बक , जान डाला, भालरि और हाथी नेने ढनमनाइत वर क दिशि बढय लगलीह। मि० मिश्रा क समीप अबैत-अबैत

सभ किछु नेने-देने सूर्यमुखी क देह पर खसि पड़लीह।

सूर्यमुखी क किकिआएब सुनि दुलारमनि पिउसी क कान ठाढ़ भय गेलैन्ह । ओ सूर्यमुखी क माय कैं हुथुक्का दऽ लोहछि कय कहलथिन्ह - ऍं ! नेना मुइलि

और अहाँ गीत गबै छी ? की दऽ फाटै तॅ मलार गाबी !

ई सुनि ओकर माय गीत छोड़ि सूर्यमुखी क हाथ पकड़ि ओकरा पीठ पर एक धमक्का लगबैत बजलीह - गै छुच्छी, हम पहिनहि ने मना कैलियौक जे अधिक

छम-छम नहि कर । गेल छलीह वर सॅ सटि कऽ ठाढ़ होमय । आब भेलौह ने ! हाथ-पैर टुटलौह ने !

ई कहि सूर्यमुखी क माय अपन बेटी क हाथ धय अपना आङ्गन चलबाक हेतु उद्यत भेलीह । एहि अकाण्डताण्डव सॅ समस्त महिला-मंडल मे हूलि-मालि मचि गेल ।

सभ केओ ढुनमुन काकी कैं 'दुरछी' करय लगलैन्ह।

लालकाकी क्रोध-कम्पित स्वर सॅं बजलीह - हम जनितहि छलहुँ जे ई घिनौतीह। भला हिनका के कहलकैन्ह जे अपने फुरने भारी जान डाला उठा कैं वर कैं

देखाबय गेलीह ? हः, आइ मास दिन सॅं वैह सब बनैवा मे लागलि छलहुँ। से सब असले बेर पर फोड़ि देलन्हि।

ई कहि लालकाकी सूर्यमुखी लग जाय ओकर पीठ हसोथय लगलथिन्ह और ओकरा माय कें बौसैत कहलथिन्ह - हिनका हम्रे सप्पत छैन्ह बहिनदाइ, जे ई कोनो

बात क आमर्ष राखथि। बुचियो त हिनके बेटी थिकैन्ह। हमर हॅंसी भेने हिनको हॅंसी छैन्ह। आब यैह लोकनि सम्हारथि त सम्हारथि।

एम्हर ढुनमुन काकी कनैत दुनू हाथ उठाय बाजय लगलीह - हे दिनकर ! हम जौं जानि बूझि कय जानडाला फोड़ने होइएक त हमर कोख जरि जाय !

ई कहि ढुनमुन काकी ऑंचर सॅं नोर-पोटा पोछैत हिचकि-हिचकि कानय लगलीह। आवेशरानी ई देखि ढुनमुनकाकी क लग आबि कहलथिन्ह-अहाहा! हिनका नहि किछु

कहै जैयोन्ह। ई कि जानि-बूझि कऽ थोड़बे खसलीहे। बेचारी अकसक लोक- ई पाँचम मास चैन्ह। की ऐ फुचुकरानी! बेशी चोट त ने लागल? ई कहि आवेशरानी आवेश सॅं

ढुनमुनकाकी क पीठ झाड़य लगलथिन्ह।

ई रंग मे भंग देखि उपयुक्त युवती मि० मिश्रा क हाथ दबा कय कहलथिन्ह-आप घबराइये नहीं। आपही की खातिर यह टंटा खड़ा हुआ है। ना आपकी

पुरुष जाति स्वार्थी होती और न ठक-बक की मुर्ति बनाकर उसका खाका खिंचा जाता। खैर , आप अन्दर चलकर पहले कपड़े तो बदल लीजिए।

मि० मिश्र ओहि युवती क हाथ मे कठपुतली जकाँ भेल इशारा पर काज करय लगलाह। पुनः गीत क सिलसिला जारी भऽ गेल।

ओ सुन्दरी बिहुँसैत मि० मिश्र क कान मे कहय लगलथिन्ह - आपके आज्ञा-पालन से मैं संतुष्ट हूँ। पति को ऐसा ही आज्ञाकारी होना चाहिए। परन्तु मैं आपको

एक कष्ट और देना चाहती हूँ। मेरा प्रण है कि जो पति होना चाहेगा , उसे मैं सात पुरुषों के साथ खड़ा कर धान कुटबाऊँगी। यह भी स्त्री जाति के प्रति

किए गए अपमानों का बदला है। आशा है, आप बुरा न मानेंगे।

ई कहि ओ मि० सी० सी० मिश्र क हाथ मे मूसर धराय देलथिन्ह और ऊखरि मे चोट देवाक अनुरोध करय लगल्थिन्ह। मि० मिश्र किंकर्तव्यविमूढ भय गेलाह।

एतभि मे गोट दसेक बालक हिनक संग देबक हेतु अपना मे उपरौंझ करय लागल।

ओ सुन्दरी पुनः मिश्रजी क कान मे कहलथिन्ह - बाबू चण्डीचरणजी , पहले कच्चे सूत से बाँधकर मैं आपकी परीक्षा करती हूँ। यदि इसमे बंधे रह जायेंगे तो

समझूँगी कि आप बराबर मेरे स्नेह-सूत्र में बंधे रहेंगे और यदि आपने इसे तोर दिया तो स्नेह-सूत्र भी टूटा ही समझिए।

सुन्दरी क मूँह सँ एहि प्रकारें अपन नाम क उच्चारण सूनि मिश्रजी क्षुब्ध भऽ गेलाह। मन मे कहय लगलाह - ओफ ! कितनी ऐडभान्स्ड (बढी) लड़की है

मुझको निर्विकार होकर इस प्रकार सम्बोधित कर रही है जैसे यह किसी कालेज की लेडी प्रिन्सिपल (अध्यक्षा) हो और मैं इसका स्टुडेण्ट हूँ।

एतबहि मे सार क वर्ग 'सहस्रशीर्षा' मन्त्र पढैत मूसर उठौलकैन्ह। मि० मिश्र निरुपाय भय चोट देमय लगलाह। नौआ ठाकुर आबि टकुरी क सूत आठो गोटे क

परिवेष्टित करय लागल।

अठोंगरि क विधि समाप्त भेला उत्तर युवती मिश्रजी सँ मृदुल परिहास करैत कहलथिन्ह - 'अहा ! आपकी कोमल कलाई तो टेनिस खेलने के लिए है।

आज पहले-पहल मूसल पकड़ने में बड़ा क्लेश हुआ होगा। खैर ! इसके बदले आपका मूँह मीठा कर देना चाहिए।' ई कहि युवती एक सिलवर क तस्तरी

मे राखल दही-चीनी दिशि संकेत करैत हिनका आसन पर बैसा देलथिन्ह।

मिश्रजी मन्त्रमुग्ध जकाँ ओहि पर बैसि गेलाह। दस-पन्द्रह मिनट धरि कोन प्रकारें मधुपर्क क विधि सम्पन्न भेलैक से हिनका किछु नहि बुझि पड़लैन्ह।

पं० नमोनाथ झा तोतराइत-तोतराइत कंठ-रूपी कंठ रूपी बोरा सँ उभड़-खाभड़ मंत्र क रोड़ा सभ उझिलय लगलाह। गाइन क दल अपना अलाप क स्वर

खरज सँ निषाद पर्यन्त पहुँचाबय लगलीह। किन्तु मि० मिश्रा क ध्यान ओहि सभ दिशि नहि छलन्हि। हुनका नेत्र क आगाँ ओहि चपला सुन्दरी क चित्र नृत्य

करैत छलैन्ह। ओकरा अपन भावी चिरसंगिनी क रूप मे देखि ओ आनन्द और विस्मय क कल्लोल तरंग मे पड़ि ऊबडूब होमय लगलाह, और कल्पना क प्रबाह

मे दहाइत-दहाइत वास्तविक परिस्थिति सँ बहुत दूर जा भसिऐलाह। ओ मनोराज्य मे विचरण करैत ओहि हास्यमुखी युवती कैं शीघ्रे अपन अङ्कशायिनी

बनैबा क मधुर कल्पना क रसास्वादन करय लगलाह। हुनक सुख-निद्रा तखन भङ्ग भेलैन्ह जखन ओ सुन्दरी पुनः आबि करस्पर्श करैत कौतुकागार

दिशि लय चललथिन्ह।

मि० मिश्रा कैं भेलैन्ह जे आब ई हमरा अपन प्राइवेट चेम्बर (खास कोठरी) मे लय जा रहल छथि। ई बिचारि हुनक हृदय खरहा जकाँ उछिलय लगलैन्ह। किन्तु जखने

कौतुकागार क द्वारि पर पर पहुँचलाह त देखैत छथि जे सौंसे घर ओही प्रकारें खचाखच भरल अछि जे कार्तिक पूर्णिमा सँ एक दिन पूर्व सोनपुर जायवाली मालगाड़ी

क डिब्बा लोक सँ भरल रहैत छैक। जखन सुन्दरी क अनवरत सहायता सँ मिश्रजी ओहि घर मे प्रविष्ट भय आसन पर बैसलाह त देखैत छथि जे एहि समुदाय मे

चारि मास क नेना सँ लय अस्सी वर्ष क वृद्धा पर्यन्त मौजूद छथि। ई देखि मिश्रजी कैं विश्राम क आशा ओहि तरहें परित्याग करय पड़लैन्ह जेना कवि-सम्मेलन

क दूरागत सभापति महोदय कैं रेल किरायो मे सन्देह देखि विदाइ क आशा परित्याग करय पड़ैत छैन्ह।

मि० मिश्रा थोड़ेक काल धरि कोबर क दृश्य देखय लगलाह। ढेबरल-चुनौटल भीत पर पुरैनि क पात, कमल क फूल, कदम्ब क गाछ आदि क रंग-विरंगी

चित्र उखड़ल छलैक। अपना आगाँ भीत मे (गौरी-गनेश क पूजार्थ) गोबर क चोत और घोंघा साटल देखि मि० मिश्रा विस्मय मे पड़ि गेलाह।

दुलारमनि पिउसी गरजैत बजलीह - है लोकनि ! आब नैना-जोगिन मे की भाङ्गठ छैक ! कन्या निरीक्षण करय ने कहुन्ह।

एहि पर आवेशरानी मिश्रजी क समीप आवि कहलथिन्ह - 'आब अपन कनेयाँ कैं चिन्हू।' मिश्रजी पाछाँ फिरि कय देखलन्हि जे एक पाँती मे

चारि टा कन्या खूब घोघ तानि कय माथ गोतने बैसल छथि। मि० मिश्रा कैं ओहि मे अपन सहायिका युवती कैं चिन्हैत कनेको देरी नहि लगलैन्ह। ओ

मन मे शेक्सपीयर क ई पंक्ति दोहराबय लगलाह - 'हूएवर लब्ड दैट लब्ड नॉट ऐट फर्स्ट साइट ?'

पुनः कम्पित स्वर मे बजलाह - मुझे अबतक यही गाईड (पथ-प्रदर्शन) करती आ रही है। और इन्ही को पहचानने मे भला मैं भूल कर सकता हूँ? इनके समान चिर- संगिनी

पाकर मैं अपने को बहुत फारचुनेट (भाग्यवान) समझता हूँ। ये अबतक मेरा हाथ पकड़े हुए थी। अब मुझे इनका हाथ पकड़ने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

आशा है, इनको कोई आपत्ति नहीं होगी।

ई लेक्चर झाड़ि मि० मिश्रा अपन सुपरिचित गुलाबी साड़ी वाली सुन्दरी क हाथ धय लेलन्हि और अपना आङ्गुर क अंगूठी बाहर कय हुनका आंगुर मे पैसाबक

यत्न करय लगलाह।

ई अभूतपूर्व दृष्य देखि उपस्थित महिला मण्डली मे एहन भारी हँसी क बिहारि उठल जे कोबरा घर क चार उधियाय लागल। फुलमतिया हँसैत-हँसैत बाजलि

'दैवा रे दैवा ! हः हः हः हः ! विधिकरिए कैं ..... हा हा हा हा हा ! बहु बना लेलथिन्ह ! ही ही ही ही ही ! आवेशरानी बजलीह - 'अहा हा ! बेश सुलग्न मे

सरहोजि सँ भेट भेल छैन्ह। एहिना मीठे-मीठे रहि जाइन्ह दूहू गोटा मे त ही ही ही ही ! ' एक टा तरुणी बजलीह - कनेयाँ ! अहाँ हिनका कोन मंत्र पढि कय

नोन चटा देलिऐन्ह जे अबितहि अहाँ क हाथे बिका गेलाह ? हा हा हा हा हा हा ! ' एकटा प्रौढा जमींदारनी बजलीह - 'हिनका अपने सभ की बुझैत हतिएन्ह

ई खूब खेलाएल छथ। जौन चिज पर अपन हक होतैन गऽ ओह पर पहले ही से कबजा दखल कर लेबे के चाहै छथ। कैसे के अपन चीज टेब लेलन ? ही ही ही ही !'

एहि हा हा ही ही क बिड़रो मे मिश्रजी कैं किछु नहि बूझि पड़लैन्ह। ओ हतबुद्धि भऽ टुकुर-टुकुर सभ क मुँह ताकय लगलाह।

ई देखि विधिकरी दाइ हिनका कान मे अपन मुँह सटा कय कहलथिन्ह - देखिए , आपको सबके सामने इस तरह अपने भाव का आवेश नहीं प्रकट करना चाहिए।

आपकी कितनी मखौल उड़ रही है ! मैं तो लज्जा के मारे गड़ी जा रही हूँ। देखिए , अब मण्डप पर ऐसी भूल मत कीजिएगा। वहाँ मेरे पिता, चाचा और गाँव भर

के लोग रहेंगे। आप उस वक्त मेरी ओर नजर तक मत उठाइएगा। मैं भी चुपचाप वहाँ घूंघट काढ़कर बैठी रहूँगी। अगर विधिपालन में कुछ भी गड़बड़ी की तो

समझ जाइए कि फिर मैं आपको मिल नही सकती।

ई कहि चतुरशिरोमणि बड़कागामवाली छम्म दऽ कोबर घर सँ बाहर भय दोसरा घर मे चलि गेलीह ।

एतबहि मे पं० नमोनाथ झा क स्वर सुनबा मे आयल - 'ज ज ज ज जनानी विधि भऽ गेल। आब ज ज ज ज जमाय कैं आ आ आबय कहियौन्ह !'

-----

10. कन्यादान

मण्डप पर बैसितहि मिस्टर सी० सी० मिश्रक नेत्र सभ सँ पहिने ओहि सुपरिचित गुलाबी साड़ी क अन्वेषण मे इतस्ततः घूमय लागल। ई देखि पं० नमोनाथ झा बजलाह- ट ट ट ट टी टी टी टी टीक टीक टीक बान्हि लेल जाओ।

एतबहि में मिश्रजी देखैत छथि जे स्त्रीगण क झुण्ड ओहि गुलाबी साड़ी कैं चारू कात सँ घेरने शनैः शनैः मण्डप दिशि अग्रसर भय रहल अछि। ई देखि मिश्रजी क मनमयूर नाचय लागल। थोड़बहि काल मे गुलाबी साड़ी मण्डप पर आनल गेलि और लालकका क दक्षिण पार्श्व मे बैसा देल गेलि। ओ लजौनी खढ जकाँ सकुचि भूमि में सटय लागलि। मिश्रजी मन मे कहय लगलाह-यह लड़की गजब की नखरेबाज मालूम होती है। अभी कैसी भींगी बिल्ली की तरह बैठी हुई है! इसका यह पोज (भाव) देखकर कौन कहेगा कि अभी कुछ मिनट पहले यह मुझे नाक पकड़कर नचाती फिरती थी?

एतबहि में पंडित नमोनाथ झा गोत्राध्याय क काण्ड प्रारम्भ कैलन्हि। लालकका , जाहि कागज पर वर क परिचय लिखल छलैन्ह , से बटुआ सँ बाहर कय मिस्टर सी० सी० मिश्र क बाप , पितामह, प्रपितामह आदि क नामोच्चारण करय लगलाह।

गोत्राध्याय क उपरान्त लालकका जमायक हाथ अपना हाथ धय मैंया दिशि तकलथिन्ह। मैंया ओहि गुलाबी साड़ी क आवरण क भीतर सँ एक लजाएल हाथ निकासि मिश्रजी क कम्पित हाथ पर राखि देलथिन्ह। पं० नमोनाथ झा ओहि पर अक्षत , चन्दन,पुष्प, और शंख राखि कन्यादान क मन्त्र पढाबय लगलथिन्ह- 'इमां क क क क कन्या स स स स सालंकारां आदि पढा कय कहलथिन्ह- क क क क कन्या क न न न न नाम लियऽ।

ई सुनैत मिस्टर सी० सी० मिश्र कैं धक सँ बिजली दौड़ि गेलैन्हि । हिनका मस्तिष्क मे तरह-तरह क अपटुडेट नाम सभ चक्कर लगाबय लगलैन्ह । ई उत्सुक भय सोचय लगलाह - देखा चाही, की सुनैत छी ! कुमारी बिजली बाइ ? अथवा नलिनीबाला ? अथवा विमलप्रतिभा देवी ? अथवा मिस अनारकली ?

एतबहि मे लालकका क मुँह सँ 'बुचिया नाम्नीम' सूनि मि० सी० सी० मिश्र क कल्पना-लतिका पर तुषारपात भऽ गेलैन्ह ।

मिस्टर सी० सी० मिश्र अपन भावी ससुर क एहि प्रोजेक नेचर (अरसिकता पर छुब्ध भऽ उठलाह । मन मे सोचय लगलाह - 'संसार मे केहन-केहन सुन्दर नाम अछि - उषा ! प्रभा ! लीला ! लतिका ! मनोरमा ! शैलबाला ! चन्द्रकला ! हिरण्यमयी ! स्वर्णलता ! हेमाङ्गिनी !

पीयूषमयी ! तुषारवाला ! विश्वमोहिनी ! शिशिरसुन्दरी ! एहि मे सँ एको टा नाम यदि ई बुढउ अपना कन्या क हेतु बिछने रहितथि त कि घर क आँटा गील भऽ जैतैन्ह ? अहा ! एहि चंचल सुन्दरी क नाम यदि कुमारी विद्युतप्रभा अथवा मञ्जुहासिनी देवी रहैत त हमर जीवन आइ केहन सुखमय बनि जाइत ! परन्तु एहि बुढउ कैं फुरलैन्ह मे फुरलैन्ह कि त 'बुचिया' ! छिः छिः ! आब हमर जीवन नष्ट भऽ गेल । पुनः अपना मोन कैं संतोष देमय लगलाह - 'अच्छा, आब त ई मिसेज मिश्रा कहौतीह । लेख, कविता आदि मे देवाक हेतु हम एक सुन्दर उपनाम अपना पसन्द सँ चूनि कय राखि देबैन्ह ।'

एम्हर पं० नमोनाथ झा धुड़झाड़ अपन ठेलागाड़ी छोड़य लगलाह ।

वैवाहिक मन्त्र मे वर और कन्या क हेतु केहन पवित्र आदर्श भरल छैक ! अग्नि कैं साक्षी राखि दूहू कैं प्रतिज्ञा करय पड़ैत छैन्ह जे आब सँ हम दूहू गोटा मिलि कय एक भय गेलहुँ और आजीवन मनसा-वाचा-कर्मणा एक भेल रहब । सुख-दुख मे, पाप-पुण्य मे, जीवन-मरण मे हम एक दोसरा क भागी रहब । संसार मे कोनो शक्ति हमरा दूहू गोटा कैं पृथक नहि कै सकत । प्राचीन युग मे वर ओ कन्या दुहू सम्यक रुपें अपन गम्भीर दायित्व ओ पूनीत कर्त्तव्य बूझि वैवाहिक प्रतिज्ञा सँ आबद्ध होथि । एकरे नाम थिक वैदिक विवाह ।

किन्तु सम्प्रति की स्थिति भय रहल अछि ? ओहि पावन प्रतिज्ञा क अर्थ सँ वर-कन्या कैं ततबहि सम्पर्क रहैत छैन्ह जतेक आधुनिक ग्रेजुएट लोकनि कैं मिथ्लाक्षर सँ । पुरोहित महाराज क आँखि रहैत छैन्ह पद्धति पर मन रहैत छैन्ह 'रजतं चन्द्रदैवतम्' पर । यजमान चाहैत छथि जे कोनहुना झट दऽ छुतका छोड़ा कय पाक भय जाइ । रहि गेलाह वर-कन्या । से वर क मन मे रहै छैन्ह जे कखन विधि-वाध क बखेड़ा सँ पिण्ड छुटय और फालतु लोक सभ घसकय जे कोबर कऽ आनन्द लूटी । और बेचारी कन्या बलिदान क छग जेना बैसलि भीतरे-भीतर औनाइत रहैत अछि । जाहि पुरुष कैं ओ कहियो देखने सुनने नहि , जनने बुझने नहि ओकरा एकाएक ऊक जकाँ आबि अपन भाग्य-विधाता-बनैत देखि कन्या क मन मे विद्वेष उत्पन्न होएब सर्बथा स्वाभाविक छैक। ओहि अपरिचित 'मालिक' क प्रति ओकरा प्रेम नहि भऽ प्रत्युत उपेक्षा और घृणा क भाव जागृत भऽ जाइत छैक। ओकरा हृदय मे एक एहन अज्ञात भय जड़ि पकड़ लैत छैक जे ओकरा आत्मा क स्वतन्त्रता कैं नष्ट कय ओकरा पराधीना दासी बना दैत छैक। ओ कुमारि अवस्था मे अपना कैं एक व्यक्ति बुझैत छलि , विवाह क राति सँ ओ अपना कैं सम्पत्ति बुझय लागि जाइत अछि। कोनो कन्या क विवाह भेला पर ओकर चेष्टा क अध्ययन करू , ई परिवर्तन स्पष्ट देखय मे आओत। कन्या मे आब ओ स्फूर्ति कहाँ, ओ तेज कहाँ? पहिने ओ मुक्त चिड़इ जकाँ चहकैत फिरैत छलि। आब ओ

पिजड़ा क पक्षहीन पक्षी जकाँ बँधुआ बनि जाइत अछि। ओ पहिने जीवित छलि , आब ओकर जीवनी शक्ति जाइत रहलैक।

हमरा लोकनि मूलवस्तु कैं छोड़ि छाया क अनुसरण कय रहल छी। वर-कन्या क स्वभाव , शिक्षा ओ विचार मिलय वा नहिं , किन्तु उतेढि मिलि जैबाक चाही। वर-कन्या एको अक्षर प्रतिज्ञा क अर्थ बुझथु वा नहि , किन्तु मन्त्र पढल जैबाक चाही। वर-कन्या मे यथार्थ स्नेह-बन्धन हो वा नहि, किन्तु गठ-बन्धन भऽ जैबाक चाही। ई विवाह नहि, विवाह क स्वाँग थिक। और एही कनेयां-पुतरा क खेल क पाछाँ लाखो बिकाएल जा रहल छथि और एहि सारहीन स्वाँग सॅं एहि क्षणिक प्रहसन सॅं , जे दाम्पत्य-सम्बन्ध प्रारम्भ होइत अछि ओ प्रायः आजन्म रोदन क कारण बनि जाइत अछि।

एहि अनर्थमूलक नकली विवाह क अन्त कोना हो ? समाज कैं सरोकार छैन्ह दहनही क अँकुरी सॅं, भार क बायन सॅं , चतुर्थी क भोज सॅं और घसकट्टी क सुपारी सॅं। वर-वधू क दाम्पत्य-जीवन कोना सफल और सुखमय बनतैक , ताहि दिशि समाज कनडेरिया आँखिये तकबा क प्रयोजन नहि बुझैत अछि। एहन स्वार्थी ओ अन्ध समाज सॅं कोनो लाभ नहि। जा धरि समाज क दृष्टिकोण उदार नहि होएतैक , जा धरि कन्या-घातक कुप्रथा सभ क मौलिक सुधार नहि होएत ता धरि देशोन्नति क आशा करब मृगमरीचिकावत् अछि। जखन मूर्खता ओ अन्धविश्वास क स्थानापन्न ज्ञान ओ तर्क क आधार पर विवाह-सम्बन्ध स्थापित होमय लागत, जखन कन्या-गण अपना कैं खुटा क बाछी जकाँ निरुपाय ओ पराधीन नहि बूझि अपना कैं मनुष्यता क अधिकार सॅं युक्त एक स्वतंत्र और मुक्त आत्मा बूझय लगलीह , जखन वर ओ कन्या मे जबर्दस्ती गँठजोड़ नहि भय प्रेम ओ सहानुभूति क सुत्र जोड़ाय लागत , तखन दाम्पत्य कर्त्तव्य चिरैता क काढा जकाँ तीत नहि लागि कुसियार क रस जकाँ मीठ लागत , और जे गृहस्थी एखन जंजाल क घर बूझि पड़ैत अछि , से स्वर्गीय सुख क केन्द्र बनि जाएत। परन्तु ई होएब तखने सम्भव जखन मैथिल कन्यागण जगजज्जननी जानकी , मंडन मिश्र क विदुषी भार्या सरस्वती ओ राजा शिवसिंह क पंडिता पत्नी लखिमा ठ्कुराइन कैं अपन आदर्श मानि अपना मे आत्मबल ओ साहस क संचार करथि और अखिमुन्ना पर्दा कैं गर्दा में मिलाय, अबला सॅं सबला और मूर्खा सॅं शिक्षिता भय , मिथ्या लज्जा ओ भय कैं दूर भगवैत , सामाजिक अत्याचार क तीव्र प्रतीकार करबा क हेतु तत्पर भऽ जाथि। आब हुनका चाहिऐन्ह जे अनमेल विवाह-वेदी पर स्वयं बलिदान नहि भय , सामाजिक कुरीति क बलिदान करथि। यावत यावत धरि ओ शक्ति , साहस, शिक्षा और स्वावलम्बन सॅं वञ्चित रहतीह , तावत धरि ओ पशु क दशा मे प्राप्त रहतीह। मैथिल कन्या सभ पतिपावनी गंगा भय बहुत दुर्दशा सहैत गेलीह। आब हुनका असिधारिणी दुर्गा बनबा क प्रयोजन छैन्ह।

पाठक-पाठिकागण! हमरा लोकनि प्रस्तुत घटना सँ बहुत दूर बहकि ऐलहुँ। आब देखू , लाबा छिड़िऐबाक बेरि पहुँचि गेल। गाइनि लोकनि परिहास क स्वर मे गायब लगलीह-

'लाबा छिड़ियाउ दाइ लाबा छिड़ियाउ, बाबू बिछि-बिछि खाउ।'

चारिटा कमैनिहारि जे ऐंठकटार लग ओसारा पर ढाढि छलि , से ओत्तहि सँ डहकनि गाबय लागलि।

अश्लील गारि सुनि रेवतीरमण ओकरा सभ कैं मना करय लगलथिन्ह, लेकिन ओ सभ हिनका बात कैं मोजर नहि कय पूर्ववत उमङ्ग सँ गवैत रहलि।

शनैः शनैः हवन, सप्तपदी आदि सभ वैवाहिकी प्रक्रिया सम्पन्न भय गेल।

मिश्रजी क हाथ मे सन , साख-सिहुली और मटिया सिन्दूर देल गेलैन्हि। स्त्रीगण 'शुभे हो शुभे' कहैत कन्या क झाँपल-तोपल सिउथि कैं कनेक उघारि मिश्रजी क औंठा सँ सिन्दूर देया देलथिन्ह।

सिन्दूर दान ओ चुमाओन विधि क उपरान्त मिश्रजी कोबरघर मे पहुँचाओल गेलाह। ओतय नाना प्रकार क हावभाववाली अज्ञातयौवना , ज्ञातयौवना, मुग्धा, प्रौढा आदि नायिका सभ तरह-तरह क हास-परिहास ओ वचन-विलास सँ मिस्टर सी०सी० मिश्र कैं चकित करय लगलीह। एहना स्थिति मे हमरा लोकनि आब एहि ठाम क दृश्य देखी से उचित नहि। त चलू , देखू जे बड़कागामबाली की कय रहल छथि। प्रायः ओ दोसरा घर मे ककरो संग किछु एकान्ती कय रहल छथि। यदि कोनटा लगबा मे कोनो विशेष अधर्म नहि होइत होइ , त सुनू जे की सभ गप्प-सप्प भय रहल अछि।

रेवती रमण-अहाँ त इनाम पैबा क योग्य काज कैलहुँ अछि। वाह! हमरा एतेक आशा नहि छल। किन्तु मंडप पर क हेतु अहाँ कोन युक्ति रचलहुँ?

ब० वाली-हम साहेब बहादुर कैं पहिनहि चेता देलिऐन्ह जे खबरदार , आप मंडप पर भूलकर भी मेरी ओर घूमकर मत देखिएगा। ' और एन्हर दोसरा घर मे जा कऽ गुलाबी रंग क साड़ी छोटकी दाइ कैं पहिरा देलिऐन्ह। बस , माड़ब पर हिनका ओ साड़ी देखि अस-तस क विश्वास भऽ गेलैन्ह जे हमहीं बैसल छी।

रे०र०- किन्तु सिन्दूरो देबक काल हिनका ई नहि बूझि पड़लैन्ह जे कनेंया एतक छोट कोना भऽ गेलि?

ब० वाली-से त हम पहिनहि कहि देलिऐन्ह जे हम लोकलज्जा क रक्षार्थ खूब निहु कय बैसब। तखन सन्देह कोना होउन्ह?

रे० र०-त ई एखन धरि यैह बुझैत छथि जे अहीं हिनक कनेयाँ छिऐन्ह?

ब०-हँ एखन, धरि त सैह बुझैत छथि।

रे० र०-त देखब, यैह बुझैत-बुझैत गोटेक बेरि हाथो ने साफ कय बैसथि!

ब०-ईह! से कि अखतियार छैन्ह? हम चेता देने छिऐन्ह जे चतुर्थी भरि वर कन्या क स्पर्श नहि करैत छैक। तैं चारि दिन धरि हाथ-पैर नहि पसारू। बेचारे धैर्यपूर्वक दिन गनि रहल छथि।

रे० र०-हँ, तखन त ओहि राति अहाँ कैं नहिए छोड़ताह?

ब०-अहीं क बहिन हुनका नहि छोड़थिन्ह। हुनका की होश रहतैन्ह जे हमर खोज करताह?

ई सरस प्रश्नोत्तर शनैः-शनैः मृदुल हास्य ओ नूपुर क झंकार मे परिणय होमय लागल। एहि रसिक दम्पति क एकान्त विहार मे आब हमरा लोकनि कैं बाधा देब उचित नहि। अतएव आब एहू ठाम सँ हटबाक चाही।

---

11. चतुर्थी क राति

घोर अन्धकार व्याप्त भय रहल अछि। आकाश मे समुद्र क लहरि जकाँ चारू कात सँ कारी-कारी मेघ उमड़ रहल अछि। बीच-बीच मे बिजली चमकि उठैत अछि। थोड़बहि काल मे टिप-टिप कय पानि पड़य लागल। ई घटाटोप देखि जे गाइन लोकनि सौजन्य क सँचार देखय और उचिती गाबक हेतु आइलि छलीह से सभ झटकि कय अपना-अपना आङन दिशि पड़ैलीह।

मिस्टर सी०सी- मिश्र क समस्त अभिलाषा क गजट आइये राति बहरैबा लेल छैन्ह। कोबर घर मे पलंग पर ओंठगल ओ मनहि मन हनीमून क रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) करय लगलाह। तरह-तरह क काल्पनिक दृश्य सिनेमा क फिल्म जहाँ हिनका हृत्पटल पर उदित और विलीन होमय लागल। मिश्रजी कल्पना जगत मे विचरण करैत निम्नलिखित प्रोग्राम बनाबय लगलाह-

जैखन श्रीमतीजी क एकटा रञ्जित कोमल पद-कमल चौकठि क भीतर पहुँचि जैतैन्ह , तैखन हुनक स्वागतार्थ झट द उठि कय ठाढ भऽ जैबाक चाही। ता दोसरो पद-कमल भीतर पहुचि जैतैन्ह। पदुपरान्त एवं प्रकारें कार्यवाही होमक चाही-

मि० मिश्र(पत्नी क समक्ष ठेहुनिया दऽ कऽ)-

ओ फेयर एञ्जिल! दाउ आर्ट माइ ऑल , माइ हार्ट माइ सोल , माइ लव, माइ लाइफ! हाउ रेयर ए ब्लिस इट इज टु का ॅल, दिस डॅजलिंग फा ॅर्म ऑफ दाइन माइ वाइफ!

[अरे यह भक से सौ पावर की बिजली आ गई कैसे ? कनेक्सन के बिना लाइट एलेक्ट्रिक छा गई कैसे? जरा-सा स्विच दबाने से लगेगा शा ॅक फौरन ही समझ में है न आता इसको पकड़ूँ हाथ से कैसे?]

मिसेज मिश्रा (मुस्कुराइत)- कुछ खौफ नहीं है साहब! आप बेखटे इस बिजलि को छू सकते हैं। अगर आपको डर मालूम होता है तो लीजिए, मैं ही आपका हाथ पकड़ लेती हूँ।

मिस्टर मिश्र (हाथ क चुम्बन करैत) - क्या मै जीता-जागता हूँ या स्वप्न देख रहा हूँ अथवा स्वर्गलोक में पहुँच गया हूँ ?

मिसेज मिश्रा (हिनका उठाकय छाती सँ लगबैत) - मेरे काँपते हुए हृदय के मालिक ! तुम्हे इसी तरह चिपटाकर रखूँगी । (भुजा-पाश मे जोर सँ कसि कय) क्या मजाल जो तुम इस बन्धन से अपने को तिल भर भी छुड़ा सको !

मिस्टर मिश्रा (आनन्दोन्मत्त भय) गॉंड ! इफ यू एक्जिस्ट एनीह्वेयर , आइ चैलेंज यू टु कम फॉरवर्ड एण्ड क्रियेट ए स्वीटर प्लेजर दैन दिस टाइट एम्ब्रेस !

[ईश्वर! तुम कहीं भी मौजूद हो तो मैं तुम्हे सामने आने के लिए चुनौती देता हूँ। इस गाढ-आलिङ्गन मे जो मधुर आनन्द है सो देखो , और इससे बढकर कोई भी आनन्द उत्पन्न कर सको तो मैं समझू।]

मिसेज मिश्रा - (मिश्राजी क केश फेरैत) प्यारे ! क्या तुम सच्चे दिल से मुझे 'लव' करते हो ?

मि० मिश्र (उत्तेजित स्वर सँ) - यदि मजनू सचमुच लैला से प्रेम रखता था , फरहाद शीरी के लिए जान देता था, यूसूफ जुलेखा पर मरता था, रोमियों जूलियट को प्यार करता था, अंटोनी किल्योपेट्रा पर फिदा था, बसैनियो पोर्शिया पर मोहित था, और उन लोगों को तराजू के एक पलड़े पर बैठा दिया जाय और दूसरे पलड़े पर मुझे बिठा दिया जाय, तो सब के सब एकबारगी ऊपर उठ जायेंगे और आसमान मे लटकते ही रह जायेंगे।

मिसेज मिश्रा - अहा ! अब मुझे क्या चाहिए ? (मुखचुम्बन करैत) मैने प्रेम की यह मुहर-छाप जो लगा दी है वह टूटने न पावे।

मिस्टर मिश्र (अधर क रसपान करैत) - मालूम होता है अंगूरी शरबत का प्याला चूस रहा हूँ।

मिसेज मिश्रा (गाल पर गाल रखैत) - मेरे प्यारे , मेरे मालिक, मेरे दिल में रहा करना। कलेजा काटकर तेरे लिए मैं घर बनाऊँगी॥ मेरे हीरा , मेरे मोती, गले का हार बन जाओ। रहूँगी रात-दिन पहने, न पल-भर भी हटाऊँगी॥ मेरे सुग्गा, मेरे तोता, मेरे पिंजरे में आ जाओ। मैं चुनकर खेत से दाना तेरे मुँह मे खिलाऊँगी॥ मेरे साथी , मेरे शौहर, मेरी गोदी मे आ बैठो। करुँगी प्यार मैं तुमको कलेजे से सटाऊँगी॥

मिस्टर मिश्र - अहा ! मालूम होता है, इस मुखरूपी चन्द्रमा से सभी अमृत छन-छनकर मेरे ही कानो मे आ रहा है। अहा ! वन्स मोर (एक बेरि और सुनाउ) !

तखन मिसेज मिश्रा कला पूर्वक पैर सँ ताल देमय लगतीह। डान्स करबा मे हुनका पैर क नूपुर छम-छम बाजय लगतैन्ह।

मि० मिश्र ई कल्पना करितहि छलाह कि यथार्थहि मे छम-छम क शब्द सुनि पड़लैन्ह। जेना केओ ताल दैत नृत्य करैत चलि अबैत हो।

मिश्रजी क हृतन्त्री एके बेरि झन्न दऽ बाजि उठलैन्ह। जाहि समय क प्रतिक्षा ओ चौरासी घंटा सँ कय रहल छलाह से समय आब नाक क सोझां आबि रहल छैन्ह। मिश्रजी क हृदय धक्-धक् करय लगलैन्ह। जेना वोट क गिनती होमय काल भावी मेम्बर लोकनि क हृदय धक्-

धक् करय लगैत छैन्ह। ओ पुर्णतः नर्वस (किंकर्तव्यविमूढ) भऽ गेलाह। पहिलका सोचल सभटा प्रोग्राम गड़बड़ा गेलैन्ह।

एतबहि मे गुलाबी साड़ी वाली सुन्दरी आबि कहलथिन्ह - मिश्रजी ! हमरा सँ जे किछु कसूर भेल हो से क्षमा करब। और हमरा ननदि एखन बड़ सुकुमारि छथि। देखब , काँच कली तोड़ब उचित नहि। बेश, त अपन वस्तु सुनझा लियऽ।

ई कहि बड़कागामवाली बुच्चीदाइ कैं घर मे धकेलि बाहर सँ जिंजीर लगाय देलथिन्ह और विहुँसैत अपना घर दिशि चलि गेलीह।

मिश्रजी क पैर तर सँ पृथ्वी ससरि गेलैन्ह। ओ क्षमा कऽ आकाश पर सँ खसलाह। आँखि क आगाँ अन्धकार भऽ गेलैन्ह। जतेक हवाइ महल बनौने छलाह से सभ एके बेरि बालु क धसना जकाँ खसि पड़लैन्ह। मुँ सँ केवल दू टा शब्द बाहर भय रहि गेलैन्ह - 'माई गाॅड' (हे भगवान) एहि सँ आगाँ ओ और किछु नहि बाजि सकलाह।

देखैत-देखैत पश्चिम दिशा सँ भारी बिहाड़ि उठल। संगहि-संग मूसरधार वृष्टियो होमय लागल। चार क खपरा पर अदौरी सन-सन बङ्गौरी पड़य लागल। बुच्चीदाइ भिड़ियाएल पटिया जकाँ ठाढ़ि रहि गेलीह और लस्सा जकाँ केबाड़ क दोग सँ सटि गेलीह।

मिस्टर मिश्र मन मे सोचय लगलाह - 'हाय-हाय ! क्या यही क्रीचर (जन्तु) मेरी वाइफ है ? इसमे तो कुछ भी पर्सनलिटी (व्यक्तित्व) नहीं है। मामूली एटीकेट मैनर्स (शिष्टाचार) तक नहीं जानती। न यह क्लब मे जा सकती है , न पार्क में घूम सकती है , न मीटिंग मे बैठ सकती है। मेरी लेडीफ्रेण्ड्स (मित्राणियाँ) कैसी शोख और चुलबुली है ? कोई परी की तरह नाचती है , कोई चिड़िया की तरह चहकती है , कोई बिजली की तरह चमकती है , कोई तितली की तरह उड़ती फिरती है। मगर यह कम्बख्त तो हिलने तक का नाम नही लेती। जबसे आई है , अशोक पिलर (स्तम्भ) की तरह वही गड़ी हुई है। इसमे जरा सा भी लाइफ का साइन (चिन्ह) नही जान पड़ता। मालूम होता है जैसे लगेज (गट्ठर) खड़ा कर दिया गया हो। क्या कोई भी जेन्टिलमेन (भद्र व्यक्ति) इसके साथ एक मिनट रहना पसन्द कर सकता है ? हाय-हाय! मैं फाँसी पड़ गया। मेरी सभी आकांक्षाओं का खून हो गया।

बुच्चीदाइ मन मे सोचैत छलीह- 'ईह! बाहर मे केहन-केहन बङौरी खसैत छैक। ओसारा पर रहितहुँ त एखन खूब बिछि-बिछि कय खैतहुँ!

मिस्टर मिश्र क नैराश्यरूपी अन्धकार मे सहसा एक आशा क क्षीण प्रकाश उदित भेलैन्ह। सोचय लगलाह-अच्छा, ऐसा भी तो हो सकता है कि इस ओढनी के अन्दर एक नाजनीन परी छिपी हो, घूँघट हटाते ही एक चाँद-सा मुखड़ा निकल आवे!

मिस्टर मिश्र भावना करय लगलाह- 'इस पर्दे के अन्दर से मलाई-सी गोरी और मुलाइय एक सुन्दर कलाई निकलेगी जिसमे सुनहली रिस्टवा ॅच (घड़ी) चमकती रहेगी। पलाश के फूलों के समान कानों के समान कानों में छोटे-छोटे ईयररिंग चकमक करते रहेंगे और उनकी आभा गुलाबी गालों पर पड़ती रहेगी। फीरोजी रंग का ब्लाउज इतना नीचे से कटा रहेगा कि खुली हुई सफेद छाती दूध से धोये हुए संगमरमर की तरह जान पड़ेगी और उस पर गिनी गोल्ड का नेकलेस(सोने का हार) या मोती की माला छक-छककर अपनी ज्योत्स्ना छिटकाती रहेगी और कंघी-चोटी किये हुए काले-काले बालों की टेढी-मेढी माँग और लहरदार जुल्फें ऐसी बहार दिखलाती रहेंगी कि चेहरे की रौनक सौगुनी बढ जायगी और मालूम होगा कि काले-काले बादलों के बीच में चाँद निकल आया है। उस चाँद को हाथ में पाकर किसको किस करने की इच्छा नहीं हो जायगी!

ई भावना करैत-करैत मिस्टर मिश्र एतेक विह्वल भय उठलाह जे दन सँ नेवाड़ क पलंग पर सँ कूदि पड़लाह और लपकि कय बुच्चीदाइ क घोघ हटाय , माथ क नूआ सर्र द ' खीचि लेलथिन्ह। बुच्चीदाइ ठामहि चुक्कीमाली बैसि गेलीह और ठेहुन क बीच मे मुँह नुका लेलन्हि। परन्तु मिस्टर मिश्र कैं देखबाक जे सिहन्ता छलैन्ह से पूर्ण भय गेलैन्हि। बुच्चीदाइ क पहुँची मे रिस्टवाच त नहि छलैन्ह , किन्तु छौ टा मोट-मोट लहठी और कँगना सुशोभित छलैन्ह। कान मे ईयररिंग क स्थानापन्न वीरझुम्मक लटकल छलैन्ह। बुच्चीदाइ क छाती क जे अंश मिश्रजी कैं देखना गेलैन्ह से संगमरमर जकाँ झलकैत त नहि बूझि पड़लैन्ह, किन्तु गोदना क रंग सँ रंजित भेला क कारणें संगमूसा क समान भासित भेलैन्ह। ओहि पर नेकलेस त नहि छलैन्ह, किन्तु कारी डोरा मे गाँथल चानी क पैघ-पैघ चकती विराजमान छलैन्ह। फैशनदार माँगपट्टी और चोटी क बदला मे पाछा मे खोंपा बान्हल छलैन्ह और ललाट पर एक सिन्दूर-बिन्दु क स्थान में सौंसे कपार पर पटमासी सिन्दूर कैल छलैन्ह।

मिस्टर मिश्र क हृदय मे ज्वालामुखी भभकि उठलैन्ह। ओ छिलमिला कऽ केवाड़ खोलय लगलाह। किन्तु बाहर सँ जिंजिर बन्द छलैन्ह। अन्त में हारिदारि कय खाट पर आबि कय बैसि गेलाह। तदुपरान्त नवदम्पति मे निम्नलिखित प्रश्नोत्तरी होमय लागल-

मि० मिश्र-क्या तुम्हारा ही नाम बुचिया है?

बुचिया(मनहि मन)-इह देखू ने, उर्दुए छँटै छथि।

मि० मिश्र-तुम बोलती क्यों नहीं ? मैं जानना चाहता हूँ कि क्या सचमुच तुम्हारे ही साथ मेरा विवाह हुआ है?

बुचिया (मनहि मन)-मनुसा केहन भारी मुँहफट्ट अछि! एतेक जोर सँ बजैत लाजो ने होइत छैक।

मि० मिश्र-देखो, इस तरह का पर्दा मैं पसन्द नहीं करता , अगर तुम सचमुच ही मेरी स्त्री हो तो मेरे नजदीक आकर क्यों नही बैठती?

बुच्चीदाइ मनहि मन डरैलीह जे ई कतहु फेरि आबोइ कय बेपर्द नहि करय। ई सोचि ओ अपन कोंचा और आँचर कैं सक्कत कय लेलन्हि।

मि० मिश्र- क्या तुम हारमोनियम बजाना जानती हो?

बुच्चीदाइ चुप्प।

मि० मिश्र-क्या तुम नर्सिंग(परिचर्या) जानती हो?

बुच्चीदाइ मन मे सोचय लगलीह-नरसिंह त गाम क कोतबाल क नाम छैक। देखू त भला , कोतवाल लगा क' हमरा गारि पड़ैत अछि!

मि० मिश्र-क्या तुम निटिङ्ग (जाली बुनना) वगैरह भी सीखा है?

बुच्चीदाइ चुप्प।

मि० मिश्र-तो क्या तुम मेरी किसी बात का जवाब देना नहीं चाहती? बुच्चीदाइ चुप्प।

मि० मिश्र- अच्छा तो मैं यहाँ से जाऊँ? बुच्चीदाइ चुप्प।

मि० मिश्र मन मे सोचय लगलाह- क्या यह बहरी या गूंगी तो नहीं है ? अथवा जान-बूझकर 'इनसल्ट' (अपमान) कर रही है? खैर, जो हो, इसे अब आखिरी दफे पूछ लेना चाहिये कि यह क्या चाहती है।

मिस्टर मि० क धारण छलैन्ह जे एकान्त शयनागार में पति क प्रथम स्पर्श सँ पुलकित भय नववधू प्रेममग्न भय पति क छाती सँ लपटि जाइत अछि। एहि भावना सँ प्रेरित भय मिश्रजी अपन नवोढा पत्नी क समीप पहुँचलाह। किन्तु जैखन ओ निहुरि कय बुच्चीदाइ क बाँहि दिशि हाथ बढोलथिन्ह कि दुलार सँ बहसल बुच्चीदाइ छिड़ियाएल नेना जकाँ हिनक हाथ जोर सँ झटकि देलथिन्ह। मिस्टर मिश्र क नाक मे हीराकाट क चोख कँगना एतेक झोंक सँ लगलैन्ह जे ओहि सँ टप्-टप् शोणित खसय लगलैन्ह।

मिश्रजी रूमाल सँ आखि-नाक पोछैत पुनः पलंग पर जा बैसलाह और अपना कर्त्तव्य पर गम्भीर रूपें विचार करय लगलाह। मन में नाना प्रकार क तर्क-वितर्क उठय लगलैन्ह। सोचय लगलाह- इस लड़की का स्टैण्डर्ड (दर्जा) तो मालूम हो गया। यह देहाती , मूर्ख, असभ्य और

उजड्ड है। इसमें कुछ भी शौउर नहीं है। यह इतनी खराब सोसाइटी में पली है , इसमें इतना जंगलीपन भरा है कि इसको मनुष्य बनाते-बनाते मेरी सारी उम्र खतम हो जाएगी। फिर इससे मैं सुख कब उठाऊँगा? ऎसी परिस्थिति में क्या करना चाहिए।

एहि प्रकारे तारतम्य करैत मिस्टर मिश्र कोट क पाकेट सँ फाउण्टेन पेन बाहर कैलन्हि और रेवतीरमण क नाम सँ चिट्ठी लिखय लगलाह। पत्र क भावार्थ नीचा देल जाइछ-

'प्रिय रेवती बाबू!

मुझे इस तरह धोखा देकर आपलोगों ने अच्छा नहीं किया। मै प्रत्येक दृष्टिकोण से विचार कर इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि आपकी बहन मेरी पत्नी होने के योग्य नहीं है। मै गैस का इञ्जिन चाहता हूँ और वह बैलगाड़ी का पहिया है। उसके सहारे मेरा जीवन-रूपी हवाई जहाज ऊपर नहीं उड़ सकता, उल्टे जमीन पर गिरकर चूर-चूर हो जाएगा।

मैंने हर एक पहलू से आपकी बहन को जाँच लिया है। वह मेरे लिये सर्वथा अनुपयुक्त है। मुझे अभी तक समझ में नही आता है कि वह जिन्दा है या मुर्दा ; बेवकूफ है या पागल, बहरी है या गूँगी, आदमी है या कोई दूसरी चीज, उसके साथ मेरा रह सकना बिलकुल असम्भव है।

आपकी बहन न लिटरेचर (साहित्य) समझ सकती है , न पोलिटिक्स (राजनीति) डिस्कस (बहस) कर सकती है , न पियानो बजाकर मेरा दिल बहला सकती है। जिस समय मैं कालिदास और शेक्सपीयर कि कविताओं का रसास्वादन करता रहुँगा , उस समय जी तड़प उठेगा - होती कोई ऎसी आत्मा जो मेरे साथ बैठ छक-छककर यह अमृत पीती और मुझे भी पिलाती ! तब कितना विमल और स्वर्गीय आनन्द मिलता ! लेकिन आपके बहन के आगे शेक्सपीयर का नाटक रखना वैसा हि होगा जैसा भैंस के आगे रविवर्मा के चित्रों का अलबम रख देना। जिस समय मैं मिल और कांट के दार्शनिक विचारों की तुलनात्मक विवेचना करता रहूँगा, उस समय मन मे एक कसक उठेगी - होती कोई ऎसी आत्मा जो मेरे साथ इन सुक्ष्म भावों की बारीकियाँ समझकर जटिल-गुत्थियों को सुलझाने में मेरी सहायता करती , विचार-वारिधि मे मेरे साथ गोते लगाकर नये-नये रत्न ढूंढकर निकालती ! लेकिन उस समय आपकी बहन उलझे हुए बालों के गन्दे जंगल मे गोते लगाकर रत्नों के स्थान में जूँ ढूँढकर निकालती रहेगी। और फिर आपकी बहन के साथ मेरा कैसे निभ सकता है ? न वह फाइन सेन्टीमेण्ट्स (सूक्ष्म भावों) को समझ सकती है, न मेरे लॉफ्टी एम्बिशन्स (महत्वाकाक्षाओं) को अप्रीसिएट (अनुमोदन) कर सकती है। जीवन के जो सबसे बड़े-बड़े आनन्द है , उनमे वह मेरा साथ नहीं दे सकती, जीवन के किसी भी महत्वपूर्ण कार्य मे मेरा हाथ नही बॅटा सकती। फिर आपकी बहन मेरा जीवन-सङ्गिनी क्योंकर हो सकती है ?

मैने माना कि आपकी बहन दोनो शाम रसोई बनाकर मुझे खिला सकती है , किन्तु यह काम तो पाँच रुपए के रसोइये से भी हो सकता है। मैने माना कि वह चौका-चुल्हे का मोटा काम कर ले सकती है, किन्तु यह काम तो दो रुपये के दाई से भी चल सकता है , मने माना कि वह मेरी क्षणिक वासनाओं की पुर्ति कर सकती है, किन्तु मेरी स्थायी वृत्तियों मे सहयोग तो नहीं दे सकती। आपकी बहन से मुझे मिला क्या ? एक रसोई बनानेवाली और वच्चा पैदा करनेवाली मशीन, किन्तु जीवन-यात्रा मे साथ देनेवाली सहचरी नहीं। वह मेरे शरीर के भूख-प्यास बुझा सकती है , मेरे आत्मा की नही। वह मजदूरिन बनकर भले ही रह सके , हृदय-साम्राज्य मे शासन करने वाली रानी बनकर नही रह सकती। थोड़े में यों समझिए वह मेरी पालिता हो सकती है, पत्नी नही।

मैं जानती हूँ कि लड़की का कोई दोष नहीं है। वह अबोध है , अशिक्षिता है। लेकिन आपलोगों के पाप का प्रायश्चित उसे अवश्य ही करना पड़ेगा। आपलोगों ने उसके प्रति घोर अन्याय किया है। उसके प्रति अपने कर्त्तव्य की निष्ठुर अवहेलना की है। उसको आपने मनुष्योचित सभी अधिकारों से वञ्चित रखा है। सन्तान को केवल जन्म देने से ही माता-पिता के दायित्व की इति श्री नहीं हो जाती। सन्तान को सुशिक्षित और जीवन-युद्ध के योग्य बना देना माता-पिता का अनिवार्य कर्त्तव्य है। आपके पिता ने कन्या को 'सालङ्काराम' और 'प्रजापतिदैवताम' तो बना दिया , किन्तु उसे 'सुशिक्षिताम्' और 'सुयोग्याम' नहीं बनाया। कर्त्तव्य की इस अक्षम्य अवहेलना का प्रतिफल तो उन्हें भोगना ही पड़ेगा।

मैं इतना स्वार्थी और हृदयहीन नहीं हूँ कि कहीं जाकर पुनर्विवाह कर लूँगा। मैं आपसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि आजन्म ब्रह्मचारी रहूँगा। मैंने अपने जीवन का संकल्प निश्चय कर लिया है। जबतक जीता रहूँगा, घूम-घूमकर कन्याओं के जीवन को सुधारने की चेष्टा करता रहूँगा और स्वार्थ की वेदी , पर कन्याओं की जो हत्या हो रही है , उसके विरुद्ध आन्दोलन करते-करते अपना प्राण त्याग करूँगा। अपने देश की यदि एक भी कन्या को मूर्खता और अन्धविश्वास के चंगुल से छुड़ा सका, तो अपने जीवन को सफल समझूँगा।

जिस अभागिनी लड़की के साथ मेरा वैवाहिक नाटक किया गया है, उसको कह दीजिएगा कि वह अपने को कुमारी ही समझे और अब से भी शिक्षित बनने की चेष्टा करे। जिस दिन वह अपने को मेरे योग्य बना सकेगी, उसी दिन उसके साथ मेरा सच्चा विवाह होगा। यदि वह ऐसा करने में असमर्थ हो, तो उसे उसी के अनुरूप किसी वर के हाथ सौंप दीजिएगा।

अच्छा अब मैं चला। मेरा पता लगाने की चेष्टा मत कीजियेगा। और अपने पिता को कह दीजियेगा कि भविष्य में इस तरह का कन्या दान कर वर कन्या के जीवन का बलिदान नहीं करेंगे।

मिस्टर सी० सी० मिश्र चिट्ठी क मोड़ि सीरम मे राखि देलथिन्ह और विवक्षित जकाँ घर में इतस्ततः टहलय लगलाह। हुनका हृदय मे घोर अन्तर्द्वन्द मचय लगलैन्ह। अन्त में ओ मोह पर विजय प्राप्त कैलन्हि। पछबरिया भीत मे एकटा जंगल छलैक। बुढियाक दाँत जकाँ ओकर सभ छड़ टूटल छलैक। मिश्रजी बाकस पर पैर दय जंगल पर चढि गेलाह। हुनका हृदय में ज्वालामुखी भभकल छलैन्ह तकरा आगाँ पनिया-बिहाड़िक झटक किछु नहि बूझि पड़लैन्ह। मिश्र जी फाँड़ बान्हि साहसपूर्वक कूदय लेल तैयार भऽ गेलाह।

अभागलि बुचिया! ताँ चतुर्थीक कोन सुख बुझलह ? ह ! तोहर सर्वनाश भय रहल छौह और तों औखन धरि अपन मुँह घोघ सँ बाहर नहि करैत छह। कनेक आँखि खोलि कय ताकह जे केहन भारी वस्तु हेराय रहल छौह।

बुच्चीदाइ! आबहुँ चेतू। अन्तिम अवसर हाथ सँ जा रहल अछि। औखन यदि अहाँ लपकि कय पतिक पैर पकड़ि ली त की मजाल जे ओ छोड़ा कय चलि जाथि। किन्तु अहाँ त संकोचे आँखिक पट्टी बन्द कैने छी।

निविड़ अन्धकार मे , घनघोर वर्षा मे , मिस्टर सी०सी० मिश्र एक बेरि पाछाँ तकलन्हि और धम्म् दऽ पछुआड़ मे कूदि पड़लाह। बिहाड़िक प्रचण्ड झोंक में किछु शब्द नहि सुनाइ पड़ल। एतबहि मे कड़कड़ा कय मेघ गरजल और लगहि मे कतहु ठनका खसि पड़ल।

---

12. उपसंहार

क्रमशः वर्षा थम्हि गेल। बिहाड़ियो बन्द भऽ गेल। आकाश निर्मल भऽ गेल। जखन भुरुकबा उगि गेलैक तखन बड़कागामवाली चुप्पहि उठि बूच्चीदाइक कोनट लागय ऐलथिन्ह। केबाड़ मे कान सटैलो उत्तर जखन किछु सुनाइ नहि पड़लैन्ह , तखन नहूँ-नहूँ केवाड़ ठोकैत कहलथिन्ह - की ऐ ! अहाँ दूनू गोटा कैं एखन धरि मन नहि भरल अछि की ?

ई कहि बड़कागामवाली जिंजिर फोलि घर मे पैर देलन्हि। कोबरक दृश्य देखितहिं हुनक जी सन्न दऽ उड़ि गेलैन्ह। कोबर घर मे वरक कत्तहु पता नहि। बुच्चीदाइ कोन मे दबकलि अनबरत अश्रुधारा बहा रहल छथि। हुनक ऑंखिक काजर नोर-घोर भय गाल पर टघरि रहल छैन्ह।

बरकागामवालीक तीक्ष्ण दृष्टि सहसा सीरम महँक पत्र पर गेलैन्ह। ओ चट दऽ ओकरा उठा एके साँस मे पढ़ि गेलीह। पत्र पढैत देरी हुनका सभटा घटनावली फरिच्छ भऽ कऽ बुझा गेलैन्ह। ओ एक बेरि टूटल जँगला दिशि दृष्टिपात कैलन्हि और दौड़लि पति कैं जगाबय गेलीह।

भोर होइतहिं सौंसे गाम घोल भऽ गेल जे बुचिया क वर रातिए मे पड़ा गेलैक। ठाम-ठाम तरह- तरह क टीका-टिप्पणी ओ शंका-समाधान होमय लागल सभ केओ अपना बुद्धिक अनुसार अपन-अपन अनुमान लगाबय लागल। जे लोकनि प्रमादवश कहियो लालकाकीक आङ्गन नहि अबै छलथिन्ह सेहो लोकनि आइ स्नेहाभिभूत भय जिज्ञासार्थ पहुँचैत गेलथिन्ह। एतेक गोटे कन्यादानक राति हँकारो पुरय नहि आएल रहथिन्ह।

लालकका दरबाजा पर बैसल विषण्ण चित्त सँ दातमनि करैत छलाह। बुचकुन चौधरी हुनका देखि दूरहिं सँ टोकलथिन्ह - की औ लाल ? सुनबा मे आएल अछि जे मिसर पड़ा गेलाह। हमरा त पहिनहिं हुनक लक्षण देखि माथ ठनकल जे ई किछु ने किछु बखे रा करबे करताह। कन्या रत्न होइत अछि। ओकरा बहुत विचारि कय सुपात्रक हाथें दान करबाक चाही। तैं लिखलकैक अछि जे ऐं ऐं ऐं अथी .....देखू एखन खियाले नहिं होइत अछि। हमरा जमाय कैं लाख लोक कहौन्ह, किन्तु ओ एहि तरहें नहि पड़ायल छलाह। अहाँक जमाय त अगड़जित भऽ गेलाह।

ई कहैत बुचकुन चौधरी अपन आनन्द कैं छपा नहि सकलाह और भभा कऽ हँसि पड़लाह।

लालकका जिभिया फेंकैत कहलथिन्ह - नहिं। हुनका कालेज सँ एक बहुत जरूरी चिट्ठी आबि गेलैन्ह जे पत्र देखैत प्रिन्सिपल सँ जा कऽ भेंट करू। तैं हड़बड़ायल रातिए बिदा भऽ

कऽ चल गेलाह। हमरो लोकनि आवश्यक कार्य देखि बाधा देब उचित नहि बुझलिऐन्ह। और कोनो बात नहि छैक।

ता आङ्गन मे दुलारमनि पिउसिक शब्द सुनि पड़ल - की ऐ मधुरानी ! अहाँक जमाय पड़ा कऽ चलगेल ?

ई सुनितहिं लालकाकी तमकि कय बजलीह - हमरा जमाय सन ककर जमाय हेतैक ? हुनका त चारिए दिनक छुट्टी छलैन्ह। तैं बेचारे दौड़ले बनारस गेलाह अछि। वस्तु-जात पर्यन्त एत्तहि छोड़ने गेल छथि। मुद्दइ सभ बलहुँ फाल रचने अछि।

जखन आङ्गन खाली भेलैन्ह त लालकाकी बेटी लग ऐलीह और घराजोड़ी कऽ कानय लगलीह। बुच्चीदाइक आँखि सावनक मेघ बनि गेलैन्ह। हुनक कमल सन कोमल नेत्र सँ घघा-घघा कय नोर बहय लागल। एकर उत्तरदायी के ?

-------------------xxxxxxx-------------------